FAIZAN-E-MADINA

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

अक्तूबर 2026 ई. / जुमादल ऊला 1448 हि.

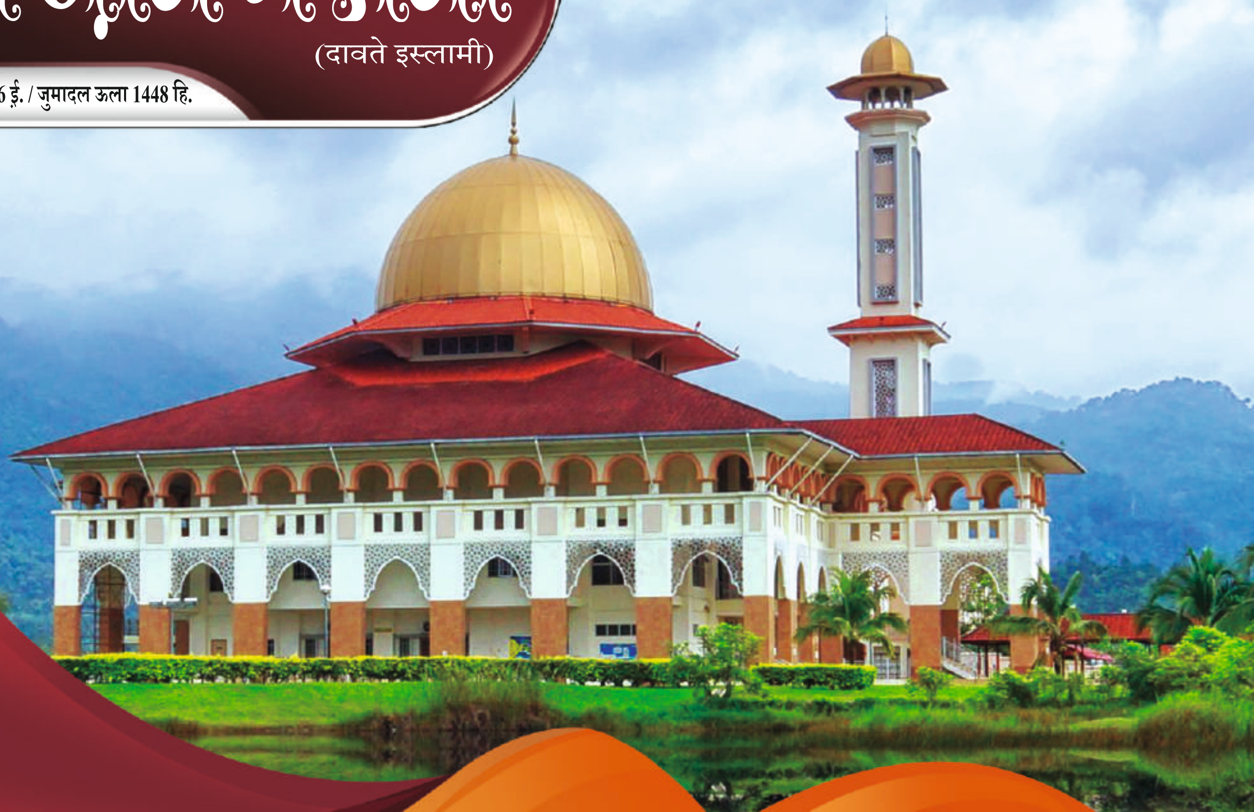

- कुतुबे साबिक़ा की तस्दीक़ और अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत 3
- रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चलने का अन्दाज़ 10
- मह़बूबिय्यते मुत़्लक़ा 16
- खोई हुई बीनाई लौट आई 42
- बेटियों को वक़्त पर सोने जागने की तरबियत दें 48

लम्बी ऊ़म्र पाने का वज़ीफ़ा

"يَاوَارِثُ"

जो इस का विर्द करेगा,

اِنْ شَاءَاللّٰهُ الْكَرِيْم

उस की ऊ़म्र लम्बी होगी।

(मदनी पंजसूरह, स. 297)

BP हो या शूगर

सूरए क़द्र और सूरए कौसर तीन तीन बार पढ़ कर या पढ़वा कर पानी पर दम कर के पिएं اِنْ شَاءَاللّٰهُ الْكَرِيْم BP हो या शूगर आप नॉर्मल हो जाएंगे।

मुद्दत इलाज : शिफ़ा मिलने तक रोज़ाना एक बार

क्या आप कारोबार की वजह से परेशान हैं ?

जो शख़्स बिलानाग़ा रोज़ाना 786 बार सात दिन तक पूरी بِسْمِ اللّٰه शरीफ़ पढ़े, और अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ भी पढ़े, तो اِنْ شَآءَ اللّٰه उस की हर हाजत पूरी होगी, अब वोह हाजत चाहे किसी भलाई के पाने की हो या बुराई दूर होने की या कारोबार चलने की। (फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, स. 134 मुलख़्ख़सन)

क्या आप के बच्चे का ज़ेहन कमज़ोर है ?

"يَاعَلِيْمُ" 7 बार हर बार बिस्मिल्लाह के साथ 21 मरतबा "سُوْرَةُ اَلَمْ نَشْرَحْ" पढ़ कर पानी पर दम कर के जिस बच्चे या बड़े का हाफ़िज़ा कमज़ोर हो उस को पिलाइए। اِنْ شَآءَ اللّٰه हाफ़िज़ा मज़बूत हो जाएगा।

(रिसाला : बीमार आ़बिद, स. 42)

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

अक्तूबर 2026 ई.

ब फ़ैज़ाने नज़र

सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह, इमामे आज़म हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

ब फ़ैज़ाने करम

आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

क़ुरआनो ह़दीस

कुतुबे साबिक़ा की तस्दीक़ और अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत 3
मुसलमान की सिफ़ारिश 7

फ़ैज़ाने सीरत

रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ والہ وسلم के चलने का अन्दाज़ 10

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत

हीटर के सामने नमाज़ पढ़ना कैसा ? मअ़ दीगर सुवालात 12

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

अ़र्श व कुर्सी से अफ़ज़ल ज़मीन का हिस्सा ? मअ़ दीगर सुवालात 14

मज़ामीन

मह़बूबिय्यत मुत़ल्लक़ा 16
कैसे समझाएं ? 20
इस्लाम और शख़्सी निखार (क़िस्त : 01) 22
रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ والہ وسلم के पसन्दीदा आमाल 25

ताजिरों के लिए

अह़कामे तिजारत 27

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رضی اللہ عنہ 29
अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए 32

मुतफ़र्रिक़

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़िज़ाएं (अंगूर) 34

क़ारेईन के सफ़ह़ात

नए लिखारी 36
आप के तअस्सुरात 40

बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

बच्चो ! बदगुमानी से बचो 41
खोई हुई बीनाई लौट आई 42
बच्चो ! उन से बचो / हुरूफ़ मिलाइए ! 43
पता चला है कि ! 44
बच्चों को बिगड़ने से बचाएं 46

इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

बेटियों को वक़्त पर सोने जागने की तरबियत दें 48
इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 50

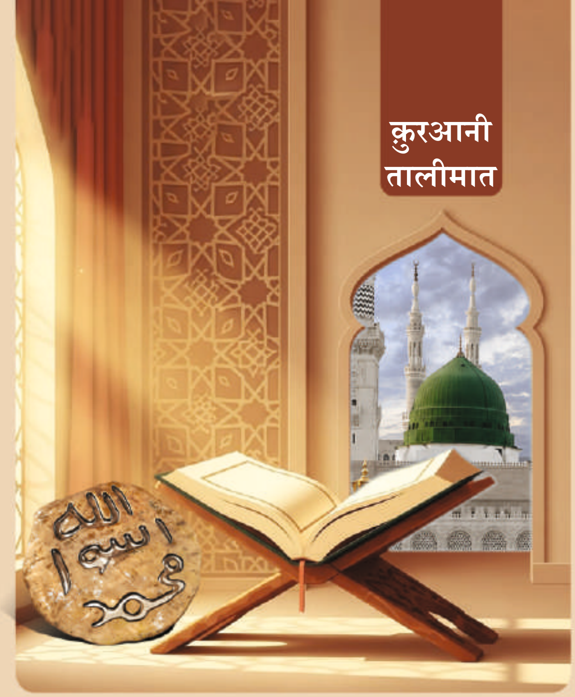

कुतुबे साबिक़ा की तस्दीक़ और अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत

अल्लाह करीम ने क़ुरआने करीम को मुतअ़द्दद मक़ामात पर साबिक़ा आस्मानी किताबों का "مُصَدِّق" यानी तस्दीक़ करने वाला इरशाद फ़रमाया है। येह हुक्म कभी "مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ" की सूरत में, कभी "مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ / مَعَهُمْ" की सूरत में, और कभी "تَصْدِيْقَ الَّذِىْ بَيْنَ يَدَيْهِ" की सूरत में वारिद हुवा है। बज़ाहिर येह अलफ़ाज़ सिर्फ़ येह बताते हैं कि क़ुरआने करीम पिछली किताबों की ताईद करने वाला है, लेकिन ग़ौर किया जाए तो येही अलफ़ाज़ दर ह़क़ीक़त एक निहायत अहम उसूल की त़रफ़ इशारा करते हैं : वोह येह कि आस्मानी वह़ी का एक मुतवातिर सिल्सिला रहा है जिस में हर किताब अपने से पहले और बाद वाले पैग़ामे इलाही का ज़िक्र करती है, साबिक़ा तमाम किताबों ने आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आने का भी ज़िक्र किया, लेकिन क़ुरआने करीम, बुरहाने रशीद ने सिर्फ़ अपने से पहली कुतुब की तस्दीक़ फ़रमाई, अपने से बाद किसी भी पैग़ाम के आने, या किताब आने या नबी आने या उन के तस्दीक़ करने के बारे में कुछ भी नहीं फ़रमाया, जो कि बिल्कुल वाज़ेह और साफ़ दलील है कि येह काएनात के लिए ख़ालिक़े काएनात का आख़िरी पैग़ाम है।

आइए ज़ैल में **"क़ुरआन कुतुबे साबिक़ा का मुसद्दिक़ और अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत"** के ह़वाले से तफ़्सील मुलाह़ज़ा करते हैं :

क़ुरआने करीम का साबिक़ा किताबों पर निगेहबान होना

﴿وَاَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَ مُهَیْمِنًا عَلَیْهِ فَاحْكُمْ بَیْنَهُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और ऐ ह़बीब ! हम ने तुम्हारी त़रफ़ सच्ची किताब उतारी जो पहली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाने वाली और उन पर निगेहबान है तो उन (अहले किताब) में अल्लाह के नाज़िल कर्दा हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला करो।(1)

तौज़ीह़ : "مُصَدِّقًا" का माना है साबिक़ा किताबों के अस्ल व ह़क़ीक़ी मज़्मून की तस्दीक़, जब कि "مُهَیْمِنًا" का माना है निगेहबान। गोया क़ुरआने करीम सिर्फ़ साबिक़ा किताबों की ताईद नहीं करता बल्कि उन पर फ़ैसला कुन ह़ैसियत रखता है कि उन में से क्या ह़क़ है और क्या तह़रीफ़ ज़दा बातिल। येह वोही मन्सब है जो एक आख़िरी और ह़तमी सनद को ह़ासिल होता है, जिस के बाद किसी और सनद की ह़ाजत नहीं रहती। और येह मन्सबे **"निगेहबानी"** उसी वक़्त मुकम्मल माना रखता है जब क़ुरआने करीम इस सिल्सिले की आख़िरी और फ़ैसला कुन किताब हो। अगर क़ुरआन के बाद किसी और वह़ी के नुज़ूल का दावा माना जाए तो येह क़ुरआने करीम के इस मन्सब के ख़िलाफ़ और क़ुरआन के इस फ़रमान का इन्कार है। येह आयत ख़त्मे रिसालत व नुबुव्वत व वह़ी सब पर दलील है।

"क़ुरआने करीम कुतुब साबिक़ा का मुसद्दिक़" मज़ीद आयात

कुतुबे साबिक़ा के मुसद्दिक़ होने का मफ़्हूम कई आयात में वारिद है जैसा कि सूरए आले इ़मरान में है :

﴿نَزَّلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِیْلَ(۳)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : उस ने तुम पर येह सच्ची किताब उतारी जो पहली किताबों की तस्दीक़ करती है और उस ने इस से पहले तौरात और इन्जील नाज़िल फ़रमाई।(2)

सूरए अल अन्आ़म में है :

﴿وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِیْ بَیْنَ یَدَیْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और येह बरकत वाली किताब है जिसे हम ने नाज़िल फ़रमाया है, पहली किताबों की तस्दीक़ करने वाली है और इस लिए (उतरी) ताकि तुम उस के ज़रीए़ मर्कज़ी शहर और इस के इर्द गिर्द वालों को डर सुनाओ।(3)

सूरए फ़ात़िर में है :

﴿وَ الَّذِیْۤ اَوْحَیْنَاۤ اِلَیْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और वोह किताब जो हम

ने तुम्हारी त़रफ़ वह़ी भेजी है वोही ह़क़ है अपने से पहले मौजूद किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती हुई।[4]

सूरए अल बक़रह में है :

﴿قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ وَ هُدًى وَّ بُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِیْنَ(۹۷)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : ऐ मह़बूब ! तुम फ़रमा दो : जो कोई जिब्रईल का दुश्मन हो (तो हो) पस बेशक उस ने तो तुम्हारे दिल पर अल्लाह के हुक्म से येह उतारा है, जो अपने से पहले मौजूद किताबों की तस्दीक़ फ़रमाने वाला है और ईमान वालों के लिए हिदायत और बिशारत है।[5]

अल्लाह पाक ने मुतअ़द्दद मक़ामात पर यहूदो नसारा को ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि चूंकि येह क़ुरआन उन की अपनी किताबों की तस्दीक़ करने वाला है, इस लिए उन पर ईमान लाना औला और वाजिब है, और जो इन्कार करें वोह अपने ऊपर ख़ुद हुज्जत क़ाइम कर रहे हैं, चुनान्चे सूरतुल बक़रह में है :

﴿وَ اٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान: और ईमान लाओ उस (किताब) पर जो मैं ने उतारी है वोह तुम्हारे पास मौजूत किताब की तस्दीक़ करने वाली है।[6]

﴿وَ لَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और जब उन के पास अल्लाह की वोह किताब आई जो उन के पास (मौजूद) किताब की तस्दीक़ करने वाली है।[7]

﴿وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْنَا وَ یَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और जब उन से कहा जाए कि उस पर ईमान लाओ जो अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाया है तो कहते हैं : हम उसी पर ईमान लाते हैं जो हमारे ऊपर नाज़िल किया गया और वोह तौरात के इ़लावा दीगर का इन्कार करते हैं ह़ालांकि वोह (क़ुरआन) भी ह़क़ है उन के पास मौजूद (किताब) की तस्दीक़ करने वाला है।[8]

सूरतुन्निसा में है :

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّاۤ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَ كَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا(۴۷)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : ऐ किताब वालो ! जो हम ने तुम्हारे पास मौजूद किताब की तस्दीक़ करने वाला (क़ुरआन उतारा है उस पर ईमान ले आओ, इस से पहले कि हम चेहरे बिगाड़ दें फिर उन्हें उन की पीठ की सूरत फेर दें या उन पर भी ऐसे ही लानत करें जैसे हफ़्ते वालों पर लानत की थी और अल्लाह का हुक्म हो कर ही रहता है।[9]

साबिक़ा क़ससस का बयान और उन की तस्दीक़

क़ुरआने करीम ने साबिक़ा अम्बिया के क़सस, जैसे ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ السَّلَام का वाक़िआ, इस तफ़्सील और सेह़त के साथ बयान फ़रमाए जो किसी उम्मी नबी के लिए इन्सानी ज़राएअ़ से मुम्किन न था। येह ख़ुद तस्दीक़ की एक और सूरत है जो नुबुव्वते मुह़म्मदी पर दलालत करती है और येह साबिक़ा कुतुब की तस्दीक़ की जा रही है:

﴿وَ مَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ یُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ لٰكِنْ تَصْدِیْقَ الَّذِیْ بَیْنَ یَدَیْهِ وَ تَفْصِیْلَ الْكِتٰبِ لَا رَیْبَ فِیْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ(۳۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और उस क़ुरआन की येह शान नहीं कि अल्लाह के नाज़िल किए बग़ैर कोई उसे अपनी त़रफ़ से बना ले, हां येह अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ है और लोहे मह़फ़ूज़ की तफ़्सील है, इस में कोई शक नहीं है, येह रब्बुल आलमीन की त़रफ़ से है।[10]

﴿لَقَدْ كَانَ فِیْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ؕ مَا كَانَ حَدِیْثًا یُّفْتَرٰى وَ لٰكِنْ تَصْدِیْقَ الَّذِیْ بَیْنَ یَدَیْهِ وَ تَفْصِیْلَ كُلِّ شَیْءٍ وَّ هُدًى وَّ رَحْمَةً لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ(۱۱۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : बेशक उन रसूलों की ख़बरों में अ़क़्लमन्दों के लिए इ़ब्रत है। येह (क़ुरआन) कोई ऐसी बात नहीं जो ख़ुद बना ली जाए लेकिन (येह क़ुरआन) उन किताबों की तस्दीक़ करने वाला है जो इस से पहले थीं और येह हर चीज़ का मुफ़स्सल बयान और मुसलमानों के लिए हिदायत और रह़मत है।[11]

﴿وَ مِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰۤى اِمَامًا وَّ رَحْمَةً ؕ وَ هٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِیًّا لِّیُنْذِرَ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا ۖۗ وَ بُشْرٰى لِلْمُحْسِنِیْنَ(۱۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और इस से पहले मूसा की किताब पेशवा और रह़मत थी और येह (क़ुरआन) अ़रबी ज़बान में होते हुए तस्दीक़ करने वाली एक किताब है ताकि ज़ालिमों को डराए और नेकों के लिए बिशारत हो।[12]

तौज़ीह़ : साबिक़ा कुतुब की तस्दीक़ का बार बार फ़रमाया जाना येह वाज़ेह़ करता है कि बस अब येह फ़ाइनल और आख़िरी किताब है जो आख़िरी पैग़म्बर पर नाज़िल हो गई, अगर बफ़र्ज़े

मुहाल आइन्दा किसी नए नबी की गुन्जाइश होती तो येही उस्लूब (फ़ुलां किताब फ़ुलां की तस्दीक़ करती है, पस ईमान लाओ) क़ुरआन के बाद भी दोहराया जाना ज़रूरी था, लेकिन क़ुरआने करीम में कहीं ऐसी कोई आयत मौजूद नहीं जो किसी आइन्दा किताब या नबी के ज़रीए ख़ुद क़ुरआन की तस्दीक़ किए जाने की ख़बर देती हो।

जिन्नात ने भी तस्दीक़ का बताया

क़ुरआने करीम की तस्दीक़ हैसिय्यत के बारे में जिन्नात ने भी अपनी क़ौम से कहा: ﴿قَالُوْا یٰقَوْمَنَاۤ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ یَهْدِیْۤ اِلَى الْحَقِّ وَ اِلٰى طَرِیْقٍ مُّسْتَقِیْمٍ(۳۰)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : कहने लगे : ऐ हमारी क़ौम ! हम ने एक किताब सुनी है जो मूसा के बाद नाज़िल की गई है वोह पहली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती है, ह़क़ और सीधे रास्ते की त़रफ़ रहनुमाई करती है।[13]

जिन्नात ने क़ुरआन को तौरैत की तस्दीक़ करने वाली, ह़क़ और सीधी राह की त़रफ़ राहनुमाई करने वाली किताब तस्लीम किया। येह वाक़िआ सूरतुल जिन्न में भी मज़्कूर है जहां जिन्नात में से कुछ मुसलमान हो गए। इस से येह ह़क़ीक़त मज़ीद वाज़ेह होती है कि क़ुरआन की तस्दीक़ी व हिदायती ह़ैसिय्यत पूरी काएनात की मुकल्लफ़ मख़्लूक़ात के लिए आख़िरत और काफ़ी है। जब जिन्नो इन्स दोनों के लिए एक ही ह़क़ और सीधी राह की राहनुमाई करने वाली किताब और रसूल काफ़ी क़रार पाए, तो इस के बाद किसी और नबी या किताब की त़रफ़ राहनुमाई की ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती।

क़ुरआने करीम और साबिक़ा कुतुब की तस्दीक़ात में फ़र्क़

ऊपर मज़्कूर आख़िरी दोनों आयात बताती हैं कि क़ुरआन से क़ब्ल मूसा عَلَیْہِ السَّلَام पर किताब **"तौरात"** हिदायत के लिए आई है, जब क़ब्ल की कुतुब और साबिक़ा अम्बिया के बारे में फ़रमाया जा रहा है तो बाद में आने वालों का ज़िक्र भी किया जा सकता था लेकिन चूंकि क़ुरआन आख़िरी वह़ी और रसूले मुकर्रम आख़िरी नबी हैं, इस लिए माबाद की गुन्जाइश ही नहीं है।

कोई येह एतिराज़ कर सकता है कि पहली किताबों ने भी अपने से पहले की किताबों की तस्दीक़ फ़रमाई है, क़ुरआने पाक ने भी अपने से पहलों की तस्दीक़ की है, तो फिर फ़र्क़ क्या हुवा ? तो याद रखिए कि पहली किताबों और अम्बियाए किराम ने जैसे अपने से पहले अम्बिया और कुतुब की तस्दीक़ फ़रमाई ऐसे ही बाद में आने वाले आख़िरी नबी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिशारतें भी दीं, लेकिन क़ुरआने करीम और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने बाद किसी के आने की ख़बर नहीं दी।

ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने साबिक़ा कुतुब की तस्दीक़ और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आने की ख़बर दी

﴿وَ اِذْ قَالَ عِیْسَى ابْنُ مَرْیَمَ یٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَیْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ مُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ یَّاْتِیْ مِنْۢ بَعْدِی اسْمُهٗۤ اَحْمَدُؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَیِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِیْنٌ(۶)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब ईसा बिन मरयम ने फ़रमाया : ऐ बनी इसराईल ! मैं तुम्हारी त़रफ़ अल्लाह का रसूल हूं, अपने से पहली किताब तौरात की तस्दीक़ करने वाला हूं और उस अ़ज़ीम रसूल की बिशारत देने वाला हूं जो मेरे बाद तशरीफ़ लाएंगे उन का नाम अह़मद है फिर जब वोह उन के पास रौशन निशानियां ले कर तशरीफ़ लाए तो उन्हों ने कहा : येह खुला जादू है।[14]

यहूदो नसारा साबिक़ा कुतुब व अम्बिया के बताने से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद से बख़ूबी आगाह थे

﴿اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا یَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْؕ وَ اِنَّ فَرِیْقًا مِّنْهُمْ لَیَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَ هُمْ یَعْلَمُوْنَ(۱۴۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोग जिन्हें हम ने किताब अ़त़ा फ़रमाई है वोह उस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे वोह अपने बेटों को पहचानते हैं और बेशक उन में एक गिरोह जान बूझ कर ह़क़ छुपाते हैं।[15]

﴿وَ لَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْۙ وَ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ یَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِیْنَ كَفَرُوْاۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ٘ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِیْنَ(۸۹)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उन के पास अल्लाह की वोह किताब आई जो उन के पास (मौजूद) किताब की तस्दीक़ करने वाली है और इस से पहले येह उसी नबी के वसीले से काफ़िरों के ख़िलाफ़ फ़त्ह मांगते थे तो जब उन के पास वोह जाना पहचाना नबी तशरीफ़ ले आया तो उस के मुन्किर हो गए तो अल्लाह की लानत हो इन्कार करने वालों पर।[16]

तस्दीक़ करने वाले रसूल

जैसे क़ुरआने करीम साबिक़ा कुतुब की तस्दीक़ करने वाला है ऐसे ही रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी साबिक़ा कुतुब की तस्दीक़ फ़रमाने वाले हैं :

﴿وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِیْقٌ مِّنَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ﳓ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ(۱۰۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उन के पास अल्लाह की त़रफ़ से एक रसूल तशरीफ़ लाया जो उन की किताबों की तस्दीक़ फ़रमाने वाला है तो अहले किताब में से एक गिरोह ने अल्लाह की किताब को पीठ पीछे यूं फेंक दिया गोया वोह कुछ जानते ही नहीं हैं।[17]

तौज़ीह़ : यहां लफ़्ज़ "مُصَدِّق" ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात के लिए इस्तिमाल हुवा, न सिर्फ़ क़ुरआन के लिए, यानी आप की रिसालत बज़ाते ख़ुद साबिक़ा वह़ी की तस्दीक़ है। इस के बावुजूद एक गिरोह ने इ़ल्म के बावुजूद अल्लाह की किताब को नज़र अन्दाज़ कर दिया। मुह़म्मद फ़ारूक़ुज़्ज़ैन लिखते हैं कि यहूद की अपनी किताब (18:18 سفر تثنیہ) में येह वाज़ेह़ था कि मुन्तज़र नबी नस्ले इस्माई़ल से होगा।

﴿وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِیْثَاقَ النَّبِیّٖنَ لَمَاۤ اٰتَیْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِیْ ؕ قَالُوْۤا اَقْرَرْنَا ؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِیْنَ(۸۱) فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ(۸۲) اَفَغَیْرَ دِیْنِ اللّٰهِ یَبْغُوْنَ وَلَهٗۤ اَسْلَمَ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَیْهِ یُرْجَعُوْنَ(۸۳)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब अल्लाह ने नबियों से वादा लिया कि मैं तुम्हें किताब और ह़िक्मत अ़त़ा करूंगा फिर तुम्हारे पास वोह अ़ज़मत वाला रसूल तशरीफ़ लाएगा जो तुम्हारी किताबों की तस्दीक़ फ़रमाने वाला होगा तो तुम ज़रूर ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर ज़रूर उस की मदद करना। (अल्लाह ने) फ़रमाया : (ऐ अम्बिया !) क्या तुम ने (उस हुक्म का) इक़रार कर लिया और उस (इक़रार) पर मेरा भारी ज़िम्मा ले लिया ? सब ने अ़र्ज़ की, "हम ने इक़रार कर लिया" (अल्लाह ने) फ़रमाया, तो (अब) एक दूसरे पर (भी) गवाह बन जाओ और मैं ख़ुद (भी) तुम्हारे साथ गवाहों में से हूं। फिर जो कोई इस इक़रार के बाद रूगर्दानी करेगा तो वोही लोग नाफ़रमान होंगे। क्या लोग अल्लाह के दीन के इ़लावा कोई और दीन चाहते हैं ह़ालांकि आस्मानों और ज़मीनों में जो कोई भी है वोह सब ख़ुशी से या मजबूरी से उसी की बारगाह में गर्दन झुकाए हुए हैं और सब को उसी की त़रफ़ लौटाया जाएगा।[18]

तौज़ीह़ : अल्लाह करीम ने जमीउ़ल अम्बिया व रुसुल से जिस नबी के आने पर उन की मदद करने और साथ देने का अ़हद लिया, और इस अ़हद पर ताकीदी इक़रार लिया, ज़िम्मेदारी सोंपी, गवाह बनाया और ख़ुद भी गवाह बना, वोह नबी सिर्फ़ और सिर्फ़ मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में इतना पुख़्ता अ़हद लेना बिल्कुल वाज़ेह़ करता है कि जब आप तशरीफ़ लाएंगे बस आप ही आख़िरी होंगे। अगर आप के बाद किसी नबी ने आना होता और वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पैरोकार की ह़ैसिय्यत से ही आना मुम्किन होते तो उन से येह भी अ़हद लिया जाता कि उन के बाद भी उन के दीन ही को ले कर चलोगे, लेकिन नहीं, अल्लाह करीम ने ऐसा अ़हद नहीं लिया।

येह अ़हद न लेना भी वाज़ेह़ करता है कि रसूले मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद कोई नया नबी नहीं आना था। जैसे क़ादियानी अपने झूटे मिर्ज़ा क़ादियानी के बारे में दावा करते हैं कि वोह रसूलुल्लाह मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही की शरीअ़त व दीन की तक़्वियत व तब्लीग़ के लिए नबी बन कर आए, निरा झूट, बात़िल, फ़सादी दावा और इर्तिदाद व कुफ़्र है।

अल्लाह पाक ने तो इस अ़हद व मीसाक़ के बाद साफ़ एलान फ़रमा दिया कि जो इस अ़हद की मुख़ालफ़त करेगा फ़ासिक़ है और ऐसा करने वाला अल्लाह के दीन से हटा हुवा है, और जो अल्लाह के दीन के इ़लावा कोई दीन चाहता है वोह काफ़िर व मुर्तद होता है।

मज़्कूरा बाला आयाते करीमा को यक्जा कर के देखा जाए तो एक निहायत वाज़ेह़ और मरबूत़ नतीजा सामने आता है :

तौरैत नाज़िल हुई, फिर इन्जील तौरैत की "مُصَدِّق" बन कर आई और ख़ुद इन्जील ने अपने बाद एक और रसूल (अह़मद) की ख़बर भी दी। येही सिल्सिला जब क़ुरआन पर पहुंचा तो क़ुरआन को भी तमाम साबिक़ा किताबों का "مُصَدِّق" और उन पर "مُهَیْمِن" यानी ह़तमी निगेहबान क़रार दिया गया। नीज़ क़ुरआने करीम में कहीं भी, किसी एक आयत में भी, येह ख़बर नहीं दी गई कि मुस्तक़बिल में कोई और किताब आ कर क़ुरआन की तस्दीक़ करेगी, जब कि तौरैत और इन्जील दोनों के बारे में ख़ुद क़ुरआन ने बताया कि उन के बाद एक और किताब आने वाली थी।

---

(1) پ6، المآئدۃ:48 (2) پ3، آل عمران: 3 (3) پ7، الانعام: 92 (4) پ22، فاطر 31 (5) پ1، البقرۃ: 97 (6) پ1، البقرۃ:41 (7) پ1، البقرۃ:89 (8) پ1، البقرۃ: 91 (9) پ5، النسآء:47 (10) پ11، یونس:37 (11) پ13، یوسف:111 (12) پ26، الاحقاف:12 (13) پ26، الاحقاف: 30 (14) پ28، الصف:6 (15) پ2، البقرۃ:146 (16) پ1، البقرۃ:89 (17) پ1، البقرۃ:101 (18) پ3، آل عمران:81تا83۔

मुसलमान की सिफ़ारिश

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है फ़रमाते हैं कि

كَانَ النَّبِیُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا اَتَاهُ طَالِبُ حَاجَةٍ اَقْبَلَ عَلَى جُلَسَائِهِ فَقَالَ اشْفَعُوْا تُؤْجَرُوْا وَيَقْضِى اللهُ عَلٰى لِسَانِ نَبِيِّهِ مَا اَحَبَّ۔ (1)

जब कोई हाजतमन्द बारगाहे रिसालत में हाज़िर होता तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने हम नशीन सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाते : "ऐ लोगो ! सिफ़ारिश करो अज्र पाओगे और अल्लाह पाक अपने नबी की ज़बान पर वोही जारी करता है जो वोह पसन्द फ़रमाता है।"

क़ुरआनो हदीस में तमाम मुसलमानों को एक दूसरे का भाई क़रार दिया गया है, मुसलमानों के माबैन इस दीनी रिश्ते को क़ाइम करने की बुन्यादी वजह भी येह है कि तमाम मुसलमान आपस में इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़, प्यार व महब्बत से रहें, एक मुसलमान अपने दूसरे मुसलमान भाई की तकालीफ़ को अपनी तकालीफ़ समझे, उसे जब कोई परेशानी लाहिक़ हो तो उसे दूर करने की कोशिश करे, अगर वोह बज़ाते ख़ुद अपने मुसलमान बाई का मस्अला हल कर सकता है तो ख़ुद हल करे वरना किसी ऐसे मुसलमान भाई से उस के मस्अले को हल करने की सिफ़ारिश करे जो उसे हल कर सकता हो। किसी मुसलमान भाई की मदद करने के लिए दूसरे मुसलमान भाई से सिफ़ारिश करना भी दरअस्ल उसी की मदद करना है जब कि वोह सिफ़ारिश शरई़ तौर पर जाइज़ हो।

सिफ़ारिश करना मुस्तहब है

अ़ल्लामा बद्रुद्दीन ऐनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "माना येह हैं कि तुम में से बाज़ बाज़ की सिफ़ारिश करें तो इस में तुम्हारे लिए अज्र है। जब तुम ने मुझ से किसी हाजतमन्द की सिफ़ारिश की और मैं ने अल्लाह पाक की क़ज़ा के मुताबिक़ उस की हाजत को पूरा कर दिया तो तुम्हें बी अज्र मिलेगा।" सिफ़ारिश करना मुस्तहब है क़ुरआनो हदीस में इस की तरग़ीब दिलाई गई है चुनान्चे अल्लाह पाक का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴿مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जो अच्छी सिफ़ारिश करे उस के लिए उस का अज्र है।(2)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहता है अल्लाह पाक भी उस की मदद फ़रमाता रहता है।"(3)

भलाई करने की तरग़ीब

अ़ल्लामा मुहम्मद बिन अ़ल्लान शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "इस हदीसे पाक में भलाई करने, भलाई का सबब बनने, किसी की मुसीबत पर मुत्तला होने की सूरत में उस की सिफ़ारिश करने और कमज़ोर की मदद करने पर उभारा गया है क्यूंकि हर किसी की अफ़्सर तक रसाई नहीं होती और हर शख़्स अपनी बात दूसरे को समझाने पर क़ादिर नहीं होता (तो जो अफ़्सर तक पहुंच रखते हैं और दूसरे की

बात समझा सकते हैं वोह सिफ़ारिश करें और हाजतमन्द का मस्अला हल करवा दें) लेकिन जिन कामों की सिफ़ारिश करना जाइज़ नहीं वोह इस हदीस में दाख़िल नहीं।”[(4)]

(मसलन किसी ना अहल को मन्सब दिलवाने की सिफ़ारिश या गुनाह के काम की सिफ़ारिश या ऐसी सिफ़ारिश जिस से दूसरे मुसलमान की हक़ तल्फ़ी होती हो।)

सिफ़ारिश करने वाले को हर हाल में सवाब मिलेगा

मज़्कूरा हदीस में मुसलमान की सिफ़ारिश करने वाले को सवाब की बिशारत दी गई है क्या मुसलमान की सिफ़ारिश करने वाले को हर हाल में सवाब मिलेगा ? चुनान्चे अ़ल्लामा बद्रुद्दीन ऐ़नी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ हदीसे पाक के इन अलफ़ाज़ (अल्लाह पाक अपने नबी की ज़बान पर वोही जारी करता है जो वोह पसन्द फ़रमाता है) की शर्ह करते हुए फ़रमाते हैं : “येह इस बात का बयान है कि जिस ने सिफ़ारिश की उसे हर हाल में सवाब मिलेगा ख़्वाह उस की सिफ़ारिश क़बूल हो या न हो। किसी बड़े को अपने से छोटे आदमी से सिफ़ारिश करने से गुरेज़ नहीं करना चाहिए और अगर वोह उस की सिफ़ारिश क़बूल न करे तो उसे ईज़ा भी नहीं देनी चाहिए बेशक हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदतुना बुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से सिफ़ारिश की (यानी बतौरे मश्वरा इरशाद फ़रमाया) कि वोह अपने साबिक़ा शौहर से रुजूअ़ कर लें लेकिन उन्हों ने माज़ेरत कर ली।”[(5)]

“अल्लाह पाक अपने नबी की ज़बान पर वोही जारी करता है जो वोह पसन्द करता है।” इस की शर्ह करते हुए अ़ल्लामा मुहम्मद बिन अ़ल्लान शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : “यानी अपने इ़ल्मे अज़ली के मुताबिक़ जिस का इरादा करता है कि उस की सिफ़ारिश का मुआ़मला होगा, उस की मुराद हासिल होगी या नहीं वग़ैरा। पस सिफ़ारिश और उस पर मुरत्तब होने वाला सवाब मतलूब है जो कि सिफ़ारिश करने पर हर हाल में मिलेगा ख़्वाह इ़ल्मे इलाही में उस का हुसूल मुक़द्दर हो या न हो।”[(6)]

हदीसे पाक में इस बात का बयान है कि मुसलमान की क़ौल या फ़ेल से मदद करने पर अज्र है अगर किसी से कोई लग़्ज़िश हो जाए और इस पर हद न हो तो उस की सिफ़ारिश करना जाइज़ है जब कि वोह इस पर शरमिन्दा हो और मुआ़फ़ी का तलबगार हो, हाकिमे वक़्त को भी चाहिए कि वोह इस को मुआ़फ़ कर दे लेकिन जो ग़लत काम पर मुसिर हो उस की सिफ़ारिश नहीं की जाएगी और हाकिमे वक़्त भी उस को मुआ़फ़ न करे ताकि लोग इस से बाज़ रहें। हुदूद (यानी जराइम की वोह सज़ाएं जो शरीअ़ते मुतह्हरा ने मुक़र्रर की हैं, उन) में सिफ़ारिश करना जाइज़ नहीं।[(7)]

ऐसे शख़्स की सिफ़ारिश करना सख़्त मना है जिस पर किसी गुनाह के सबब हद वाक़ेअ़ होने का फ़ैसला हो गया हो या किसी मुसलमान की हक़ तलफ़ी होती हो। ग़ज़्वए फ़त्हे मक्का के दौरान क़बीलए मख़्ज़ूमिया की एक औ़रत ने चोरी की तो उस के क़बीले के लोग बोले कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उस की सिफ़ारिश कौन करेगा ? हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ عَنْہ जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लाडले हैं उन के सिवा सिफ़ारिश की जुरअत कौन कर सकता है ? चुनान्चे वोह लोग आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ के पास सिफ़ारिश तलब करने आए। जब हज़रते सय्यिदुना उसामा رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने उस औ़रत के मुतअ़ल्लिक़ सिफ़ारिश की तो सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए अन्वर मुतग़य्यर हो गया, और इरशाद फ़रमाया : “तुम मुझ से अल्लाह पाक की हुदूद में से एक हद के मुतअ़ल्लिक़ सिफ़ारिश कर रहे हो।” हज़रते उसामा رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे लिए मग़्फ़िरत तलब फ़रमाइए।” फिर आप ने ख़ुत्बा दिया, अल्लाह पाक की हम्दो सना बयान की और इरशाद फ़रमाया : “ऐ लोगो ! तुम से पहली क़ौमें इस लिए हलाक हो गईं कि जब उन में से कोई मुअ़ज़्ज़ज़ आदमी चोरी करता तो वोह उस को छोड़ देते और अगर कोई कमज़ोर यानी ग़रीब आदमी चोरी करता तो उस पर हद क़ाइम करते। उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुहम्मद (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की जान है अगर फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद भी चोरी करती तो मैं उस का हाथ काट देता।”[(8)]

नाजाइज़ सिफ़ारिशात का सैलाब, लम्हए फ़िक्रिया

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज कल हमारे मुआ़शरे में सिफ़ारिश

का रुज्हान बहुत आम है, एक मामूली काम से ले कर किसी भी बड़े काम में सिफ़ारिश जुज़्वे लाज़िम की हैसिय्यत इख़्तियार कर चुकी है, बड़े बड़े शहरों, दीनी व दुनियवी तक़रीबन तमाम इदारों में सिफ़ारिश का कल्चर आम हो चुका है, किसी को कोई नौकरी लेनी हो तो उस के लिए सिफ़ारिश, किसी इदारे में दाख़िला लेना हो तो उस के लिए सिफ़ारिश, कोई फ़ॉर्म जमा करवाना हो तो उस के लिए सिफ़ारिश, कोई बिल जमा करवाना हो तो उस के लिए सिफ़ारिश, कोई प्रोजेक्ट लेना हो तो उस के लिए सिफ़ारिश, कोई ज़मीन ख़रीदनी हो तो उस के लिए सिफ़ारिश, कोई इदारा, इंस्टीट्यूट, स्कूल, कॉलेज, यूनीवर्सिटी, फ़ैक्ट्री वग़ैरा खोलनी हो तो उस के लिए सिफ़ारिश, अपने मौजूदा ओहदे से ऊपर के ओहदे के लिए तरक़्क़ी करनी हो तो उस के लिए सिफ़ारिश, कोई दुकान खोलनी हो तो उस के लिए सिफ़ारिश, कोई मकान बेचना हो तो उस के लिए सिफ़ारिश, अल ग़रज़ कोई काम बग़ैर सिफ़ारिश के नहीं होता। याद रखिए, अगर सिफ़ारिश किसी अहल शख़्स के लिए है या किसी जाइज़ काम के लिए है या किसी का सहीह हक़ दिलाने के लिए है या किसी को ज़ुल्म से बचाने के लिए है या उस के इलावा कोई भी ऐसी सूरत है कि जिस में शरअ़न सिफ़ारिश करने की इजाज़त है तो उस में कोई मुज़ायक़ा नहीं बल्कि बसा औक़ात तो ऐसी सिफ़ारिश करना मुस्तहब और बाइसे अज्रो सवाब है। लेकिन अगर सिफ़ारिश किसी ना अहल शख़्स के लिए हो, या किसी नाजाइज़ काम के लिए हो या किसी को नाजाइज़ हक़ दिलाने के लिए हो या इस सिफ़ारिश में किसी दूसरे मुसलमान की हक़ तलफ़ी हो, इस पर ज़ुल्म होता हो, या किसी ऐसे शख़्स के हक़ में सिफ़ारिश की जिस पर हद वाजिब हो चुकी या उस के इलावा कोई भी ऐसी सूरत हो जिस की शरअ़न इजाज़त नहीं तो ऐसी सिफ़ारिश करना नाजाइज़ो हराम, गुनाहे कबीरा और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। नाजाइज़ सिफ़ारिशात में दुनिया व आख़िरत दोनों की तबाही व बरबादी मुक़द्दर है, नाजाइज़ सिफ़ारिशात मुआशरे के बिगाड़ का बहुत बड़ा सबब हैं, नाजाइज़ सिफ़ारिशात महब्बतों को मिटाती और नफ़रतों को बढ़ाती हैं, नाजाइज़ सिफ़ारिशात क़ाबिल और अहल लोगों के ज़ाएअ़ होने का बहुत बड़ा सबब हैं, नाजाइज़ सिफ़ारिशात रिज़्क़ में तंगी का बाइस हैं, अल ग़रज़ नाजाइज़ सिफ़ारिशात में कोई भलाई नहीं, यक़ीनन समझदारी इसी में है कि नाजाइज़ सिफ़ारिशात को तर्क कर के फ़क़त जाइज़ सिफ़ारिशात ही की जाएं, इस से अहल और बा सलाहिय्यत लोग सामने आएंगे। इस की बरकत से एक बेहतरीन, पुर अम्न और तरक़्क़ी याफ़्ता मुआशरे के क़ियाम में मदद मिलेगी। اِنْ شَآءَ اللہ

ख़ुलासा येह है कि

1 तमाम मुसलमान आपस में भाई भाई हैं, एक जिस्म की मानिन्द हैं, सब को चाहिए कि एक दूसरे की ख़ैर ख़्वाही और मदद करें।

2 अगर किसी मुसलमान भाई की शरअ़न जाइज़ सिफ़ारिश के ज़रीए मदद करनी पड़े तो उस की मदद करनी चाहिए।

3 अगर कोई शख़्स अहल हो या किसी का जाइज़ हक़ दिलाना हो या किसी की ऐसी ख़ता मुआफ करवानी हो जिस पर वोह शरमिन्दा है और इस पर शरई हद भी नहीं है तो ऐसे अफ़राद के हक़ में सिफ़ारिश करना बिल्कुल जाइज़ है।

4 ना अहल के लिए, ज़ालिम के लिए, किसी मुसलमान का हक़ तलफ़ करने के लिए या हुदूदुल्लाह को मुआफ़ करवाने के लिए सिफ़ारिश करना हराम है।

5 जाइज़ सिफ़ारिश ज़रूर करनी चाहिए कि जाइज़ सिफ़ारिश करने वाले को हर हाल में उस की अच्छी निय्यत का सवाब मिलेगा अगर्चे उस की सिफ़ारिश क़बूल हो या न हो।

अल्लाह पाक से दुआ है कि वोह मुसलमानों को आपस में इत्तिफ़ाक़ और इत्तिहाद नसीब फ़रमाए, एक दूसरे की मदद करने और एक दूसरे के दुख दर्द में काम आने का जज़्बा अ़ता फ़रमाए, जाइज़ सिफ़ारिश करने और नाजाइज़ सिफ़ारिश से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہ وسلَّم

---

(1) مسلم، ص1414، حدیث:2627(2)پ5، النسآء:85(3)عمدۃ القاری،6/410، تحت الحدیث:1432(4)دلیل الفالحین، 2/42، تحت الحدیث:247 (5)عمدۃ القاری،6/410، تحت الحدیث:1432(6)دلیل الفالحین،2/42، تحت الحدیث:247 (7)اکمال المعلم،8/107، تحت الحدیث:2627(8)بخاری،3/108، حدیث:4304۔

आख़िरी नबी صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم मुह़म्मदे अ़रबी के चलने का अन्दाज़

सीरते त़य्यिबा का मुत़ालआ एक ऐसे कामिल उस्वा की तलाश है जिस की हर अदा में ह़िक्मत, एतिदाल और जमाले अख़्लाक़ पिन्हां है। ज़ाते रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरत के कुछ गोशे जैसे "आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उठना बैठना, गुफ़्तगू का अन्दाज़, और चलने का त़रीक़ा" दर ह़क़ीक़त हुज़ूरे अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वक़ार के मज़हर हैं। सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरत के उन तमाम पहलूओं को निहायत बारीक बीनी से मह़फ़ूज़ किया और नस्ल दर नस्ल रिवायत किया, आइए ज़ैल में आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चलने के अन्दाज़ की झल्कियां मुलाह़ज़ा करते हैं :

नालैन शरीफ़ का इस्तिमाल

ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : नंगे पांव चलना रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दत नहीं थी।[1] अलबत्ता आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी कभी नंगे पांव चलने की तरग़ीब इरशाद फ़रमाई चुनान्चे एक बार ह़ज़रते फ़ुज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से पूछा गया आप ने जूता क्यूं नहीं पहना ? तो आप ने फ़रमाया : रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें हुक्म दिया है कि कभी कभी नंगे पांव भी चला करें।[2]

आख़िरी नबी के चलने की रफ़्तार

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा ह़सीन कुछ नहीं देखा गोया कि सूरज आप के चेहरे में तैर रहा होता था और मैं ने किसी को भी रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तेज़ चलते हुए नहीं देखा गोया कि ज़मीन आप के लिए समेट दी गई हो, हम अपने आप को थका दिया करते थे और आप ह़स्बे मामूल रफ़्तार के साथ ऐसा करते।[3]

याद रहे कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रफ़्तार की तेज़ी रस्ता त़ै होने के लिह़ाज़ से थी न कि तेज़ चलने के लिह़ाज़ से हुज़ूरे अन्वर निहायत वक़ार से आहिस्ता चलते थे, अल्लाह पाक फ़रमाता है : ﴿وَاقْصِدْ فِیْ مَشْیِكَ﴾ मगर आप के आहिस्ता चलने के बावुजूद रास्ता जल्द और बहुत ज़ियादा त़ै होता था। इस में रब का मन्शा येह था कि कोई शख़्स मेरे मह़बूब से आगे न चल सके ﴿لَا تُقَدِّمُوْا بَیْنَ یَدَیِ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ﴾ पर अ़मल ख़ुद अल्लाह पाक ने उन से करा लिया था।

येह भी हुज़ूरे अन्वर का मोजिज़ा था कि आहिस्ता चलने पर ज़मीन ज़ियादा त़ै होती थी, बाज़ सूफ़िया को भी येह करामत अ़त़ा होती है उसे त़ियुल अर्द कहते हैं, मेराज में जो हुज़ूरे अन्वर ने त़य्युल

अर्द ही नहीं की बल्कि ज़मीनो आस्मान, अ़र्श व कुर्सी, लौहो क़लम सब ही तै फ़रमा लिए, आसिफ़ इब्ने बरख़िया की तय्युल अर्द तो क़ुरआने मजीद से साबित है, रब फ़रमाता है : ﴿ اٰتِیْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ یَّرْتَدَّ اِلَیْكَ طَرْفُكَ ﴾ मैं मलिका बिल्क़ीस का तख़्त यमन से आप के पास पलक झपकने से पहले ले आऊंगा।[4]

आख़िरी नबी के क़दम उठाने रखने का अन्दाज़

मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ عَنْہُ जब रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वस्फ़ बयान करते तो फ़रमाते : रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब चलते तो मज़बूती से क़दम उठाते, (चलते ऐसे) गोया बुलन्दी से नीचे की जानिब उतर रहे हैं।[5]

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब चलते तो आगे झुक कर चलते गोया बुलन्दी से नीचे उतर रहे हैं।[6]

येह रहा मेरा सर, सीना क़ल्बो जिगर
रख दो आक़ा क़दम, ताजदारे हरम

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को चलते वक़्त जूतों की आवाज़ नापसन्द थी, चुनान्चे हज़रतू अबू उमामा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सख़्त गर्मी के दिन बक़ीए़ ग़रक़द की त़रफ़ तशरीफ़ ले जाते और आप के पीछे दूसरे लोग आते। जब आप उन के जूतों की आवाज़ सुनते तो येह बात आप को बहुत नागवार मालूम होती। आप बैठ जाते ह़त्ता कि वोह लोग आगे निकल जाते और आप येह अ़मल इस लिए फ़रमाते ताकि दिल में फ़ख़्र पैदा न हो।[7]

गुज़रने का अन्दाज़

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : अल्लाह के नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब चलते तो तेज़ रफ़्तार क़दमों से चलते, मालूम हो जाता कि येह न आ़जिज़ का चलना है और न सुस्त का।[8]

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने औ़रतों के दरमियान से गुज़रने से मना फ़रमाया, इस सिल्सिले में दो रिवायात मुलाहज़ा कीजिए : 1 हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मर्द को दो औ़रतों के दरमियान में चलने से मना फ़रमाया।[9] 2 एक मौक़अ़ पर फ़रमाया : जब तुम्हारे सामने औ़रतें आ जाएं तो उन के दरमियान में न गुज़रो, दाहने या बाएं का रास्ता ले लो।[10]

बिलाशुबा क़ुरआने करीम ज़ाबित़ए ह़यात है और अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका इस क़ुरआन की अ़मली तफ़्सीर है लिहाज़ा जो उसूल क़ुरआने करीम में बयान हुवा रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने मुबारक फ़रमान या अ़मल से उसे वाज़ेह़ फ़रमा दिया ताकि उम्मत के लिए उसे अपनाना आसान हो जाए।

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चलने के अन्दाज़ से हमें चन्द आदाब सीखने को मिलते हैं : 1 जूता या चप्पल पहन कर चलिए ताकि पांव गन्दगी, मैल और तक्लीफ़ देह चीज़ों से मह़फ़ूज़ रह सकें। 2 रास्ते के दरमियान मत चलें बल्कि किनारे पर चलें। 3 चलते हुए दरमियाना अन्दाज़ इख़्तियार कीजिए, न ही मरीज़ों की त़रह आहिस्ता चलिए और न इतना तेज़ कि लोग देखते ही रह जाएं। 4 शरीरों की त़रह गिरेबान खोल कर और सीना तान कर मत चलिए बल्कि शरीफ़ाना अन्दाज़ अपनाइए। 5 रास्ते में ख़वातीन के दरमियान से गुज़रना मना है लिहाज़ा ऐसी सूरत में साइड से गुज़र जाइए। 6 चलते हुए फ़ुज़ूल नज़री से भी बचिए और निगाहें झुका कर चलने की कोशिश कीजिए। 7 कोशिश कीजिए कि चलते हुए जूते की आवाज़ पैदा न हो।

अल्लाह करीम हमें चलने की सुन्नतें और आदाब का ख़याल रखने की तौफ़ीक़ दे। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)اخبار مکۃ، 4/80(2)ابو داؤد، 4/102، حدیث:4160(3)شمائل ترمذی، ص86(4)مراٰۃ المناجیح،8/61(5)شمائل ترمذی، ص87(6)شمائل ترمذی، ص86
(7)ابن ماجہ، 1/160، حدیث:245(8)شرح السنۃ، 6/377، حدیث:3246، شرح ابی داود لابن رسلان،10/223(9)ابو داؤد،4/470، حدیث: 5273
(10)شعب الایمان،4/371، حدیث:5447۔

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इ़बादात और मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ किये जाने वाले सुवालात के जवाबात अ़ता फ़रमाते हैं, उन में से 9 सुवालात व जवाबात ज़रूरी तरमीम के साथ यहां दर्ज किये जा रहे हैं।

1 हीटर के सामने नमाज़ पढ़ना कैसा ?

सुवाल : आज कल मस्जिद में हीटर लगे होते हैं जिन से आग निकल रही होती है, क्या उन के सामने नमाज़ पढ़ सकते हैं ?

जवाब : पढ़ सकते हैं, हीटर की वोह आग नहीं होती जिस की पूजा की जाती है। बाक़ाइदा जो आग लगी हुई हो उस के सामने नमाज़ पढ़ना मकरूहे तन्ज़ीही है। (मदनी मुज़ाकरा, 11 जुमादल ऊला 1442 हि.) (नोट : मज़ीद तफ़्सील जानने के लिए दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दावते इस्लामी) का फ़तवा "हीटर और चूल्हे के सामने नमाज़ का हुक्म ?" पढ़िए।

2 सर्दियों में क्रीम या लोशन लगाते वक़्त अच्छी निय्यतें करना

सुवाल : सर्दी की वजह से ख़ुश्क जिल्द पर क्रीम या लोशन लगाने में क्या निय्यत होनी चाहिए ?

जवाब : सर्दी के मौसम में ख़ुश्की की वजह से जिल्द फट जाती है, क्रीम या लोशन लगाते हुए जिल्द के इ़लाज की निय्यत कर लें, क्यूंकि क्रीम से जिल्द सह़ीह़ हो जाएगी यूं येह इ़लाज हुवा और इ़लाज करना सुन्नत है (देखिए : मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 365) लिहाज़ा इस सुन्नत पर अ़मल की निय्यत हो सकती है। मज़ीद येह निय्यत कर सकते हैं कि इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत से वेज़्लीन (Vaseline) लगाता हूं क्यूंकि अगर क्रीम नहीं लगाएंगे तो जिल्द फट जाएगी और वुज़ू करते हुए जब जिल्द में पानी लगेगा तो तक्लीफ़ होगी, नीज़ वुज़ू ख़ुद एक इ़बादत है और इ़बादत करने का ज़रीआ़ भी है लिहाज़ा वुज़ू में तक्लीफ़ से बचने और इस पर क़ुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत से क्रीम लगाएं।

(मदनी मुज़ाकरा, 18 जुमादल ऊला, 1442 हि.)

3 भैंस का बच्चा पैदा होते ही बेच देना कैसा ?

सुवाल : मेरा Farming का छोटा सा काम है, जब भैंस बच्चा देती है तो कई Farmer ह़ज़रात उसे Sale कर देते हैं, हालांकि अभी उस बच्चे ने अपनी मां का पहला दूध भी नहीं पिया होता। ऐसा करना कैसा है ?

जवाब : आ़म तौर पर छोटा बच्चा जो नर हो वोह Sale इस लिए कर दिया जाता है कि वोह बड़ा हो कर न दूध देगा, न बच्चे। येह बेचना जाइज़ है। अलबत्ता बाज़ लोग ऐसे जानवर पर रह़म खाते हैं, लेकिन ऐसे लोगों की भी एक तादाद है जो इस त़रह़ के जानवर का गोश्त खाना पसन्द करती है, क्यूंकि इस का गोश्त नर्म व मुलाइम होता है। मुजरिमाना ज़ेहन के बाज़ होटल वाले ऐसे जानवर की चांपें

बना कर बकरे की जगह उसे चला देते हैं, क्यूंकि चांप जब भून ली जाए तो पता नहीं चलता कि बकरे की है या भैंस के छोटे बच्चे की, येह तो सरासर धोका व गुनाह है। क़ुरबानी में अगर जानवर के पेट से बच्चा ज़िन्दा निकल आए तो उसे भी ज़ब्ह किया जाए और उस का गोश्त खाया जाएगा और अगर मुर्दा निकले तो फेंक दिया जाए। (देखिए : बहारे शरीअ़त, 3/348) जिस भैंस वग़ैरा से मुर्दा बच्चा निकला उस भैंस का गोश्त पाक होगा और खाना भी जाइज़ होगा। अगर क़ुरबानी की थी वोह भी हो जाएगी।

(मदनी मुज़ाकरा, 21 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़, 1442 हि.)

4 अ़ज़ाबे क़ब्र से बचने का त़रीक़ा

सुवाल : अ़ज़ाबे क़ब्र से किस त़रह बचा जा सकता है ?

जवाब : अगर किसी शख़्स को क़ब्र के अ़ज़ाब से बचना है तो उसे चाहिए कि गुनाह न करे बल्कि नेकियां करता रहे। रोज़ाना रात सूरतुल मुल्क पढ़ने से भी अ़ज़ाबे क़ब्र से ह़िफ़ाज़त होती है क्यूंकि सूरतुल मुल्क का एक नाम "सूरतुल मानिआ" यानी अ़ज़ाबे क़ब्र को रोकने वाली भी है। (دیکھیے: ترمذی،4/407،حدیث:2899) याद रहे कि यहां सिर्फ़ सूरतुल मुल्क पढ़ लेने पर ही इक्तिफ़ा कर के दीगर फ़राइज़ व वाजिबात को तर्क कर देना मुराद नहीं है बल्कि इस के साथ साथ फ़राइज़ व वाजिबात की अदाएगी भी लाज़िम है।

(मदनी मुज़ाकरा, 30 ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम, 1441 हि.)

5 गोश्त के अन्दर का ख़ून पाक है या नापाक ?

सुवाल : गोश्त के अन्दर जो ख़ून होता है वोह पाक है या नापाक ? नीज़ अगर वोह ख़ून जिस्म या कपड़ों पर लग जाए तो क्या कपड़े वग़ैरा नापाक हो जाएंगे ?

जवाब : जो ख़ून गोश्त के अन्दर होता है वोह पाक है। (देखिए : बहारे शरीअ़त, 1/392) अगर येह पाक ख़ून कपड़ों पर लग जाए तो कपड़े नापाक नहीं होंगे। (मदनी मुज़ाकरा, 13 मुह़र्रमुल ह़राम, 1443 हि.)

6 क्या सौ साल का सांप कुछ भी बन सकता है ?

सुवाल : बाज़ लोग कहते हैं कि "सांप जब सौ साल का हो जाता है तो वोह कुछ भी बन सकता है।" येह बात कहां तक दुरुस्त है ?

जवाब : कुछ भी बनने से क्या मुराद है ? क्या सांप इन्सान बन जाता है ? येह जो अपने आप को बन्दर की औलाद कहते हैं अभी तक ठोकरें खा रहे हैं, अब येह सांप वाले भी आ गए हैं ! इन सब नज़रियात का इस्लाम से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं।

(मदनी मुज़ाकरा, 4 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र, 1443 हि.)

7 बच्चे का नाम कब रखें ?

सुवाल : बच्चे का नाम कितने दिन तक रख सकते हैं ?

जवाब : नौ मौलूद बच्चे का नाम रखने के लिए दिनों की कोई तादाद मुअ़य्यन नहीं है, हमारे हां तो पैदा होने से पहले ही नाम की तलाश होती है और कोई अनोखा सा नाम तय्यार कर लिया जाता है और फिर बच्चा पैदा होते ही वोह नाम रखने की जुस्तजू होती है। अलबत्ता बेहतर येह है कि पैदाइश के सातवें दिन नाम रखा जाए और उसी दिन अ़क़ीक़ा भी किया जाए। (देखिए : बहारे शरीअ़त, 3/355) लेकिन अगर किसी ने पहले दिन भी नाम रख लिया तो कोई ह़रज नहीं है। (मदनी मुज़ाकरा, 11 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र, 1443 हि.)

(नाम रखने के बारे में मज़ीद मालूमात ह़ासिल करने के लिए मक्तबतुल मदीना की किताब **"नाम रखने के अह़काम"** पढ़िए)

8 परिन्दों के पर काटना कैसा ?

सुवाल : क्या परिन्दों के पर काट सकते हैं ?

जवाब : अगर ज़रूरत हो और पर काटना नफ़ा बख़्श हो तो पर काट सकते हैं, बाज़ औक़ात परिन्दे को मानूस करने के लिए पर काटते हैं, इस में ह़रज नहीं है।

(मदनी मुज़ाकरा, 18 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र, 1443 हि.)

9 अ़वाम में मश्हूर चन्द ग़लत़ बातें

सुवाल : अ़वाम में येह बात मश्हूर है कि अगर कव्वा बोले तो मेहमान आता है, दूध गिर जाए तो बला टलती है और सीधे हाथ में ख़ारिश हो तो पैसे आते हैं, क्या येह सब बातें दुरुस्त हैं ?

जवाब : कव्वा बोले तो मेहमान आए, दूध गिरे तो बला टले और ख़ारिश हो तो पैसे आएं येह सब अ़वामी बातें हैं इन का ह़क़ीक़त से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है।

(मदनी मुज़ाकरा, 9 ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम, 1442 हि.)

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दावते इस्लामी) मुसलमानों की शरई राहनुमाई में मसरूफ़े अ़मल है, तह़रीरी, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राएअ़ से हज़ारहा मुसलमान शरई मसाइल दरयाफ़्त करते हैं, जिन में से तीन मुन्तख़ब फ़तावा ज़ैल में दर्ज किये जा रहे हैं।

1 नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शहज़ादों की तादाद क्या है ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रज़न्द (साह़िबज़ादों) की तादाद कितनी है तीन या चार ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रज़न्द की तादाद में इख़्तिलाफ़ है जिन पर सब उ़लमा का इत्तिफ़ाक़ है वोह दो हैं ह़ज़रते क़ासिम और ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا एक क़ौल तीन का भी है क़ासिम, इब्राहीम और अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم और ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहल्वी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने इसी क़ौल को ज़ियादा सह़ीह़ बताया है। और बाज़ क़ौल तीन से ज़ियादा के भी हैं।

शैख़े मुह़क़्क़िक़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة मदारिजुन्नुबुव्वत में फ़रमाते हैं : "रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जिस औलादे पाक صلوات اللّٰه علیهم و سلامه पर तमाम उ़लमा का इत्तिफ़ाक़ है वोह रसूलज़ादे छे अफ़राद हैं इन में आप के दो बेटे ह़ज़रते क़ासिम और ह़ज़रते इब्राहीम हैं और चार आं जनाब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की साह़िब ज़ादियां हैं। सय्यिदा ज़ैनब, सय्यिदा रुक़य्या, सय्यिदा उम्मे कुल्सूम और सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُنَّ اَجْمَعِیْن उन के सिवा पर उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है, बाज़ उ़लमा कहते हैं कि इब्राहीम और क़ासिम के इ़लावा एक और फ़रज़न्द भी थे जिन का नाम अ़ब्दुल्लाह था और वोह मक्का शरीफ़ में ही छोटी उ़म्र में इस दुनिया से रिह़लत पा गए थे। और उन का लक़ब ही त़य्यिबो त़ाहिर था, और असह़ येह है कि साहिबज़ादे तीन हैं क़ासिम, इब्राहीम और अ़ब्दुल्लाह और आप की साह़िबज़ादियां चार हैं।" (मुलख़्ख़सन)

(مدارج النبوت مترجم، 2/724- سیرت مصطفیٰ، ص552)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللّٰه علیه واٰله وسلَّم

(عمدۃ القاری،7/374-المواہب اللدنیہ متن شرح الزرقانی،12/234-مرقاۃ المفاتیح،5/640،تحت الحدیث:2757-الدر المختار متن ردالمحتار،4/62-فتاویٰ رضویہ،10/711)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पानी में तैरने का सुबूत

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि क्या नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पानी में तैरना साबित है ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जी हां ! नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पानी में तैरना साबित है।

चुनान्चे नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ”أحسنت العوم فی بئر بنی عدی بن النجار“ तर्जमा : मैं बनी अ़दी बिन नज्जार के कुंएं में उ़म्दा अन्दाज़ में तैरा। (الطبقات الکبری لابن سعد،1/116)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ”کان النبی صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم و أصحابه یسبحون فی غدیر فقال صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم لأصحابه: «لیسبح کل رجل منکم إلی صاحبه» فسبح کل رجل إلی صاحبه، وبقی النبی صلی اللہ علیه وسلم، وأبو بکر، ثم سبح النبی صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم إلی أبی بکر، حتی عانقه“ तर्जमा : नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के सहाबा एक तालाब में तैराकी क्या करते थे तो नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हर एक शख़्स अपने साथी की त़रफ़ तैर कर जाए तो हर शख़्स अपने साथी की त़रफ़ तैर कर चला गया, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ बाक़ी रह गए तो नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की त़रफ़ तैर कर गए ह़त्ता कि उन्हें गले लगा लिया।

(شرح مذاہب اہل السنۃ،ص162-شرح الزرقانی،1/309-روح البیان،6/78،المؤمنون،تحت الآیۃ:23)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 अ़र्श व कुर्सी से अफ़्ज़ल ज़मीन का हिस्सा

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि हम ने सुना है कि ज़मीन के जिस हिस्से के साथ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जिस्मे मुबारक मस है ज़मीन का वोह टुकड़ा काएनात की हर शै से यहां तक कि अ़र्श व कुर्सी से भी अफ़्ज़ल है, शरीअ़ते इस्लामिया इस के मुतअ़ल्लिक़ क्या फ़रमाती है ??

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

आप ने बिल्कुल दुरुस्त सुना है और उ़लमाए किराम ने अपनी किताबों में इस को बयान किया है बल्कि इस पर इज्माअ़ नक़्ल किया है कि क़ब्रे अन्वर का वोह मुबारक टुकड़ा जिस से हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जिस्मे अत़्हर मस किए हुए है वोह काबा शरीफ़ से और हर ख़ित़्ते से अफ़्ज़ल है। बल्कि अ़र्श व कुर्सी से भी वोह हिस्सा अफ़्ज़ल है।

मक्का और मदीना में से कौन सा शहर अफ़्ज़ल है इस में इख़्तिलाफ़े अइम्मा बयान करने के बाद अ़ल्लामा त़ह़त़ावी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं। ”والخلاف فی غیر البقعة التی دفن بها صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم فإنها أفضل حتی من العرش والکرسی بالإجماع“ यानी मक्के और मदीने की अफ़्ज़लिय्यत का इख़्तिलाफ़ ज़मीन के उस मुबारक हिस्से में नहीं है जिस में रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदफ़ून हैं क्यूंकि ज़मीन का येह हिस्सा मक्के से अफ़्ज़ल है ह़त्ता कि अ़र्श और कुर्सी से भी बिल इज्माअ़ अफ़्ज़ल है।

(حاشیۃ الطحطاوی علی المراقی،ص109)

उ़म्दतुल क़ारी में है : ”وقال عیاض أجمعوا علی أن موضع قبره صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم أفضل بقاع“ यानी इमाम क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि उ़लमा ने इस पर इज्माअ़ किया है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर ज़मीन के तमाम हिस्सों से अफ़्ज़ल है।

महबूबिय्यते मुत़्लक़ा रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक ख़ास्सा

रईसुल मुतकल्लिमीन ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

रईसुल मुतकल्लिमीन मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने सीरते मुबारका पर अपनी बहुत ही प्यारी किताब **"सुरूरुल क़ुलूब"** में हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़साइसे मुबारका को बहुत दिलनशीन अन्दाज़ में तह़रीर फ़रमाया है, उन्ही ख़साइस में से एक ख़ास्सा मुलाह़ज़ा कीजिए : (हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़साइस में से एक ख़ास्सा) मह़बूबिय्यते मुत़्लक़ा है कि आप ब एतिबारे जुम्ला सिफ़ात व जिहात के हर ज़माने में तमाम ख़लाइक़ बल्कि ख़ुद ख़ालिक़ के मह़बूब हैं मसलन आ़लिम से ब सबब इ़ल्म के और ज़ाहिद से ब सबब ज़ोहद के और ह़सीन से ब सबब हुस्न के और आ़दिल से ब सबब अ़दल के मह़ब्बत होती है और आप के जुम्ला सिफ़ात ज़ाहिरी व बात़िनी व इख़्तियारी व ग़ैर इख़्तियारी मुतसावियतुल इक़्दाम हैं। ह़सीन से उस वक़्त तक मह़ब्बत रहती है जब तक हुस्न बाक़ी है, जब हुस्न जाता रहता है मह़ब्बत भी जाती रहती है और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हर सिफ़ते कमाल, ज़वाल से मुनज़्ज़ह व मुबर्रा बल्कि यौमन फ़ यौमन (रोज़ बरोज़, दिन बदिन) तरक़्क़ी पर है : ﴿وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى﴾[1]

सरकार की मह़ब्बत हर ज़माने व वक़्त में रही

और बाज़ अश्ख़ास से मुआ़सिरीन मह़ब्बत रखते हैं न लाह़िक़ीन, और बाज़ों से लाह़िक़ीन मह़ब्बत रखते हैं न मुआ़सिरीन[2], मगर आप (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से हर वक़्त और हर ज़माने में अहले ईमान को मह़ब्बत रही है और इसी त़रह़ बाज़ अश्ख़ास से इस लिए कि अपने दोस्त हैं मह़ब्बत और इस जिहत से कि दुश्मन से मिलते हैं, कदूरत होती है मगर आप (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ज़ाते पाक में कोई जिहत मुनाफ़ी मह़बूबिय्यत की नहीं बाज़ लोगों से बाज़ ख़ल्क़ को मह़ब्बत होती है और बाज़ को नहीं मगर इस जनाब से तमाम जिन्न और फ़िरिश्ते और इन्सान बल्कि वह़श व त़ैर मह़ब्बत रखते हैं सिवा उन के जिन को जनाब बारी ने रोज़े अज़ल बद नसीब किया और लौह़े मह़फ़ूज़ में जहन्नमी लिख दिया।

हुज़ूर के शहर की क़सम याद फ़रमाना

ऐ अ़ज़ीज़ ! ख़ल्क़ का क्या ज़िक्र है ख़ुद ख़ालिक़ उन से मह़ब्बत रखता है ग़ौर कर कि किस मह़ब्बत से उन के शहर व वत़न की क़सम खाता है :[3] ﴿لَاۤ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِۙ وَ اَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِۙ﴾

ला ज़ाइदा यानी मैं उस शहर की क़सम खाता हूं इस लिए कि तू इस शहर में रहता है। इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا कहते हैं : मैं ने न सुना कि ख़ुदा ने मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सिवा किसी के शहर और उ़म्र की क़सम खाई हो।[4]

ख़ुदा चाहता है रिज़ाए मुहम्मद

यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام को दूध पीते बच्चे की गवाही[5] और मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को पत्थर के कपड़े ले जाने[6] और ईसा عَلَیْہِ السَّلَام को पैदा होते ही गोयाई बख़्शने से[7] दुश्मनों की बदगुमानी और बदज़नी से पाक किया। आ़इशा सिद्दीक़ा पर जब बोहतान उठा ख़ुद गवाही दी[8] अगर चाहता तो एक एक दरख़्त और पत्थर उन की त़हारत पर गवाही देता मगर मन्ज़ूर येह था कि अपने प्यारे की बीवी की त़हारत पर ख़ुद गवाही दूं। हर शख़्स उस की रिज़ा चाहता है और वोह मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की रिज़ा चाहता है : ﴿وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ﴾[9] ﴿فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا﴾[10]

हुज़ूर की मह़ब्बत ख़ुदा की मह़ब्बत

ऐ अ़ज़ीज़ ! ग़ौर करो कि परवरदिगार तक़द्दुस व तआ़ला ने सिवा उन के किस की ज़िन्दगी की क़सम खाई है : ﴿لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ﴾[11] और किस के शहर की ज़मीन अपनी त़रफ़ निस्बत फ़रमाई : ﴿أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا﴾[12]

किस की मह़ब्बत को अपनी मह़ब्बत के साथ ज़िक्र किया और किस की इत़ाअ़त को अपनी इत़ाअ़त से मक़रून फ़रमाया[13] और किस की बैअ़त को अपनी बैअ़त कहा और किस के हाथ को अपना हाथ क़रार दिया[14] यहां तक कि आप के फ़रमांबरदारों को अपना मह़बूब फ़रमाया : ﴿قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ﴾[15]

आ़इशा सिद्दीक़ा आप से अ़र्ज़ करती हैं : या रसूलल्लाह ! मैं तुम्हारे रब को देखती हूं कि तुम्हारी ख़्वाहिश व मुराद में शताबी (यानी जल्दी) करता है यानी वोह ही काम करता है जिस में आप की ख़ुशी देखता है।[16]

और इब्ने अ़ब्बास और इब्ने अबिल जौज़ा ताबेई़ कहते हैं कि ख़ुदा ने मुहम्मद से किसी को ज़ियादा बुज़ुर्ग न पैदा किया और सिवा आप के किसी की उ़म्र व ह़यात की क़सम न खाई।[17]

सिद्दीक़े अकबर की जांनिसारी

ऐ अ़ज़ीज़ ! असर उसी मह़ब्बत का है कि एक आ़लम उस जनाब पर शैदा है, सैंकड़ों दिल फ़िगार घर बार छोड़ दुनिया व दौलत से मुंह मोड़ उस के कूचे में आ पड़े और लाखों जान बाज़ उस के शौक़ में मुहम्मद मुहम्मद कहते जान से गुज़र गए।

सिद्दीक़े अकबर ने तमाम मालो मताअ़ आप की मह़ब्बत में सर्फ़ कर दिया यहां तक कि घुन्डी तुक्मे के लाइक़ कपड़ा घर में न निकला, कमली में कांटे लगाए। जब वक़्त जां निसारी का आया घर बार, मालो दौलत, ज़न व फ़रज़न्द, अ़ज़ीज़ व क़रीब, शहर वत़न छोड़ कर आप के साथ हो लिए, ग़ारे त़ीरा व तारीक में बे धड़क चले गए और उसे साफ़ कर के सूराख़ उस के अपने बदन के कपड़ों से बन्द किए, एक सूराख़ बाक़ी रहा, इस पर अपना अंगूठा रख दिया और आप को बुलाया, आपने उनके ज़ानू पर आराम फ़रमाया उस सूराख़ में एक सांप मुद्दत से बे तमन्नाए दीदारे सय्यिदे अबरार रहता था हर चन्द अबू बक्र के अंगूठे पर उस ने सर अपना रगड़ा मगर आप ने इस ख़याल से कि जान जाए मगर मह़बूब की नींद में ख़लल न आए पांव अपना न हटाया उस ने अंगूठे में इस ज़ोर से काटा कि उन के आंसू निकल कर ह़ज़रत के चेहरए मुक़द्दस पर पड़े आप बेदार हुए ह़ाल पूछा अ़र्ज़ किया आप ने अपना थूक वहां पर लगा दिया ज़हर ने कुछ असर न किया, मगर बाज़ उ़लमा कहते हैं आख़िर उ़म्र में असर उस का ज़ाहिर हुवा और इसी सदमे से इन्तिक़ाल फ़रमाया।[18]

विसाले ज़ाहिरी के वक़्त सह़ाबए किराम का ग़म

उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ जिस वक़्त मुसलमान हुए मरने पर मुस्तइद हो कर मज्मए कुफ़्फ़ार में बआवाज़ बुलन्द अज़ान कही[19] और ह़ज़रत के इन्तिक़ाल के दिन ऐसी बेहोशी हो गई कि दरवाजए मस्जिद पर तल्वार ले कर आ बैठे कि जो शख़्स कहेगा मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्तिक़ाल फ़रमाया उसे क़त्ल कर दूंगा।[20] उ़स्माने ग़नी की उस दिन शिद्दते ग़म से ज़बान बन्द हो गई।[21] मौला अ़ली कई दिन बेहवास रहे।[22] जिस रोज़ ह़ज़रत ने मदीना को हिजरत की बेख़ौफ़ो ख़त़र ह़ज़रत के बिस्तर पर सो रहे येह ख़याल न किया कि कुफ़्फ़ार ह़ज़रत के क़त्ल पर मुस्तइद हैं शायद इन के शुबे में मुझे मार डालें।[23] बिलाल उमय्या के ग़ुलाम थे जब मुसलमान हुए

उमय्या उन का दुश्मन हो गया धूप में गर्म रेत पर लिटाता और कांटे बदन में चुभोता और कोड़े मारता और कहता अब कभी मुहम्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम न लेना जब फिर होश आता कहते "احد" "احد" फिर वोह ज़ालिम इसी तरह उन को ईज़ा देता यहां तक कि सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने मोल ले कर आज़ाद किया।[24] जिस रोज़ इन्तिक़ाल फ़रमाते थे औरत उन की कहने लगी "واکرباہ", बड़ी सख़्ती का वक़्त है फ़रमाया "واطرباہ" बड़ी ख़ुशी का वक़्त है कि अब हम मुहम्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उन के यारों से मिलेंगे।[25] अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी अपने बाग़ में मेवा चुनते थे कि हज़रत के इन्तिक़ाल की ख़बर पहुंची, जनाब बारी में दुआ की इलाही मैं तेरे हबीब के पास से अभी आया हूं नहीं चाहता कि उन के क़दम देख कर दूसरे का मुंह देखूं मेरी आंखों को अन्धा कर दे कि नज़र मेरी रूए अग़यार पर न पड़े दुआ उन की क़बूल हुई और बीनाई जाती रही।[26]

तक़ाज़ए महब्बत और हमारी हालत

ऐ अ़ज़ीज़ ! महब्बत अस्ल कार है जिसे महब्बत नहीं उस के ईमान में नुक़्सान है। इमाम ग़ज़ाली एहयाउल उ़लूम में रिवायत करते हैं, सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : किसी का ईमान ठीक नहीं होता जब तक ख़ुदा व रसूल को सब से ज़ियादा दोस्त नहीं रखता,[27] और महब्बत मुस्तलज़मे ताअ़त है, आदमी जिसे चाहता है उस की फ़रमां बरदारी और इस्तिरज़ा में शबो रोज़ मसरूफ़ रहता है, पस दावा महब्बते ख़ुदा व रसूल बदून इत्तिबाए सुन्नत और दावा कमाल ईमान बदून महब्बल लाफ़ व गिज़ाफ़[28] है, इसी वासित़े इरशाद हुवा : "किसी को ईमान हासिल नहीं होता जब तक ख़्वाहिश उस की मेरी शरीअ़त के ताबेअ़ न हो जाए।[29]

ऐ अ़ज़ीज़ ! तू हराम व हलाल की मुत्लक़ परवा नहीं रखता बावुजूद इस के दावा महब्बत, तुफ़ बरीं दावए ग़लत, ज़रा गिरेबान में मुंह डाल और ख़ुदा और रसूल से शरमा कि क्या कहता है और क्या करता है। रात दिन तहसील जाहो माल में मश्ग़ूल और शबो रोज़ दुनिया के कामों में मसरूफ़ है किसी वक़्त ख़ुदा व रसूल का भी दिल में ख़याल आता है, आईन क़ानून और हुक्कामे दुनिया की बातें किस शौक़ो ज़ौक़ से सुनता है, अगर कोई शख़्स फिर फिर कहता है फ़ुलां हाकिम ने येह हुक्म दिया और फ़ुलां साहिब फ़ुलां ज़िला को बदला गया और फ़ुलां मुआमले में येह चिठ्ठी और सरक्युलर आया तो हरगिज़ दिल नहीं घबराता और क़ुरआनो हदीस सुनने और मजलिस वाज़ में बैठने की घड़ी भर ताब नहीं लाता, उस वक़्त हज़ारों काम याद आते हैं और नाच रंग की मजलिस में कोई काम याद नहीं आता, दुनिया का हर मुआमला ख़ूब तहक़ीक़ करता है और मसाइल की तहक़ीक़ से कुछ काम नहीं रखता, आ़लिम के पास जाने बल्कि मस्जिद में नमाज़े बा जमाअ़त पढ़ने से आ़र आती है और मुआमलाते दुनिया के लिए अहलकारों के घर जाने से इ़ज़्ज़त में बट्टा नहीं लगता, अगर हाकिम मुलाक़ात के लिए सुब्ह के वक़्त त़लब करता है रात भर नींद नहीं आती और जो बैठने का हुक्म देता है तो ख़ुशी से जामे में नहीं समाता, हाकिमे हक़ीक़ी हर रोज़ पांच बार अपने दरबार में बुलाता है और हर रकअ़त में एक बार अपने हुज़ूर बैठने का हुक्म फ़रमाता है और तू न उस का हुक्म क़बूल करता है और न इस इ़ज़्ज़त व इम्तियाज़ से ख़ुश होता है, हज़ारों रुपिया फ़िस्क़ो फ़ुजूर अस्बाबे जाह व तहम्मुल में उठाना आसान है और एक पैसा ज़कात का देना नागवार, रुसूमे मम्नूआ तर्क करना वज़ादारी के ख़िलाफ़ समझता है और उमूरे ख़ैर में वज़ादारी का भी लिहाज़ नहीं, अदना हीले से छोड़ देता है बल्कि बाज़ मम्नूआते शरअ़ जिन से ख़ुदा व रसूल नाराज़ हैं ख़ैर समझ लिया है और उन के इर्तिकाब में नमाज़ रोज़े से ज़ियादा एहतिमाम करता है अमीरों और अहलकारों की ताज़ीम दिल से करता है और उ़लमा व मशाइख़ व सादात की कुछ हक़ीक़त नहीं समझता, क्या वसिय्यत अपने रसूल की बिल्कुल भुला दी कि "तुम में छोड़ने वाला हूं दो चीज़ें भारी एक किताबुल्लाह दूसरे इ़तरत अपनी"[30] कि न तेरे दिल में ख़ादिमाने किताब की कुछ इ़ज़्ज़त रही और न औलादे नबी की क़द्रो मन्ज़ेलत, उ़लमा की त़रफ़ उस वक़्त रुजूअ़ करता है जब किसी झगड़े में फ़तवा लिखाने की ज़रूरत होती है, क्या नमाज़ व रोज़ा व हज व ज़कात व तमाम फ़राइज़ व वाजिबात और बैअ़ व शरा व इजारा व मुज़ारअ़त वग़ैरा मुआमलात के मसाइल तुझे मालूम हैं और इन में रिआ़यत शरअ़ की करता है या अहकामे शरइ़य्या सिर्फ़ उसी सूरत में वाजिबुल अ़मल हैं जब दो शख़्सो में झगड़ा हो और सिवा उस के दूसरी तदबीर भी हाथ न आए, येह रुजूअ़ हरगिज़ इस लिए नहीं कि शरअ़ की तेरे दिल में क़द्रो मन्ज़ेलत या ख़ुदा का हुक्म तुझे पसन्द है बल्कि इस ग़रज़ से कि इस के ज़रीए से माले दुनिया हासिल करे,

इसी लिए अगर फ़तवा शरअ़ का मुवाफ़िक़ मत़लब के होता है मानता है, वरना दूसरी फ़िक्र में पड़ता है और उसे फाड़ कर फेंक देता है, बावुजूद उस के भी दावा इस्लाम बाक़ी है, سُبْحٰنَ اللہ! येह मुंह और येह दावा ग़ौर से देख कर परवरदिगार तक़द्दुस व तआ़ला इस बाब में क्या फ़रमाता है :

﴿فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِیْ شَیْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِؕ ذٰلِكَ خَیْرٌ وَّ اَحْسَنُ تَاْوِیْلًا(۵۹) اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ یَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ وَ مَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ یُرِیْدُوْنَ اَنْ یَّتَحَاكَمُوْۤا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَ قَدْ اُمِرُوْۤا اَنْ یَّكْفُرُوْا بِهٖؕ وَ یُرِیْدُ الشَّیْطٰنُ اَنْ یُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًۢا بَعِیْدًا(۶۰)﴾ [31] इन आयतों से साफ़ ज़ाहिर है कि ख़ुदा और रसूल का हुक्म छोड़ कर शैतान की त़रफ़ रुजूअ़ करना और उसे अपने मुआ़मलात में हाकिम बनाना मुसलमान का काम नहीं।

---

(1) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक पिछली तुम्हारे लिए पहली से बेहतर है (پ30، الضحیٰ:4) (2) यानी बाज़ से उन के ज़माने के लोग मह़ब्बत करते हैं, बाद वाले नहीं, जब कि बाज़ से बाद वाले मह़ब्बत करते हैं उन के ज़माने के नहीं (3) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुझे उस शहर की क़सम कि ऐ मह़बूब तुम उस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो।(پ30، البلد:1،2) (4)تفسیر طبری،14/ 91، الحجر: الآیہ:72 (5)تفسیر بغوی،4/234(6)بخاری،2/442،حدیث:3404(7)پ16،مریم:29،30 (8)پ18، النور:10تا26 (9) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।(پ30، الضحیٰ:5) (10) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो ज़रूर हम 144) (11) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब तुम्हारी जान की क़सम बेशक वोह अपने नशे में भटक रहे हैं (پ14، الحجر:72) (12) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या अल्लाह की ज़मीन कुशादा न थी कि तुम इस में हिजरत करते (پ5، النسآء:97) (13) जैसा कि आगे आने वाली आयत से ज़ाहिर है। (14) اِنَّ الَّذِیْنَ یُبَایِعُوْنَكَ اِنَّمَا یُبَایِعُوْنَ اللّٰهَؕ یَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَیْدِیْهِمْۚ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो तुम्हारी बैअ़त करते हैं वोह तो अल्लाह ही से बैअ़त करते हैं उन के हाथों पर अल्लाह का हाथ है।(پ26، الفتح:10) (15) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमांबरदार हो जाओ अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा (پ3، اٰل عمرٰن:31) तुम्हें फेर देंगे उस क़िब्ले की त़रफ़ जिस में तुम्हारी ख़ुशी है : (پ2، البقرۃ: (16) بخاری،3/ 436، حدیث:5113۔ مسلم، ص592، حدیث: 3631 (17)دلائل النبوۃ لابی نعیم، 63، رقم:21 (18) مشکاۃ المصابیح، 2/ 417، حدیث: 6034 سبل الہدیٰ والرشاد، 3، /240 (19) دیکھئے: صحیح ابن حبان، 15/ 302، حدیث:6879 (20)الریاض النضرۃ، 1/ 143 (21)مواھب اللدنیہ، 4/ 548 (22)مواھب اللدنیہ، 4/ 548

(23) रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि आज रात अपने बिस्तर पर न सोएं, तो रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जनाब अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہ से फ़रमाया : मेरे बिस्तर पर सो जाओ ! और मेरी येह सब्ज़ चादर ओढ़ लो, तुम्हें इन कुफ़्फ़ार से कोई भी नुक़्सान न पहुंचेगा।(سیرت ابن ہشام،2/128) (24)سیرت ابن ہشام، 1/ 339(25)مواھب اللدنیہ، 4/ 538, (26)شواھد النبوۃ، مترجم، ص189 (27) بخاری، 1/ 17، حدیث:15 مسند احمد، 20/ 397، حدیث:1351 احیاء العلوم، 4/ 294 (28) उर्दू में लाफ़ व गिज़ाफ़ की तरकीब से मुस्तअ़मल है, झूटी शान, ख़ुदनुमाई, मग़रूर होने की ह़ालत (29)شرح السنۃ للبغوی، 1/ 213(30)مسند احمد، 17/ 170، حدیث:11104 (31) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर तुम में किसी बात का झगड़ा उठे तो उसे अल्लाह और रसूल के ह़ुज़ूर रुजूअ़ करो अगर अल्लाह व क़ियामत पर ईमान रखते हो येह बेहतर है और उस का अन्जाम सब से अच्छा क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन का दावा है कि वोह ईमान लाए उस पर जो तुम्हारी त़रफ़ उतरा और उस पर जो तुम से पहले उतरा फिर चाहते हैं कि शैत़ान को अपना पंच बनाएं और उन का तो हुक्म येह था कि उसे अस्लन न मानें और इब्लीस येह चाहता है कि उन्हें दूर बहका दे। (پ5، النسآء:59،60)

कैसे समझाएं ?

एक शख़्स का बयान है दो माह से कोई मेरे दरवाज़े पर रोज़ाना कचरा फेंक कर चला जाता बड़ी कोशिश के बावुजूद कचरा फेंकने वाला पकड़ में नहीं आया, अहलिया ने कहा "यक़ीनन येह महल्ले का कोई ऐसा शख़्स है जो फ़ज्र की नमाज़ के लिए जाता होगा और जाते हुए येह ह़रकत कर जाता होगा।" येह बात सुन कर मैं ख़ामोश हो गया, क्यूंकि ह़क़ीक़त येह थी कि मैं ख़ुद फ़ज्र की नमाज़ बाक़ाइदगी से नहीं पढ़ता था, अक्सर दस बजे आंख खुलती और फ़ज्र क़ज़ा कर लेता। एक दिन मैं ने अपनी बीवी से फ़ज्र में उठाने का कहा तो वोह ह़ैरान हो गई कि येह आज सूरज मश्रिक़ की बजाए मग़रिब से कैसे निकल रहा है ! ख़ैर बीवी ने मुझे अगले रोज़ फ़ज्र के वक़्त उठा दिया मैं ने उठते ही खिड़की से नीचे झांक कर देखा तो दरवाज़े पर कचरा मौजूद नहीं था फ़टाफ़ट वुज़ू किया खिड़की के पास ही मुसल्ला बिछा लिया और दो रकअ़त सुन्नत पढ़ कर फिर से झांक कर देखा तो कचरा दरवाज़े पर पड़ा मेरा मुंह चिड़ा रहा था। ख़ैर फ़िर दो रकअ़त फ़र्ज़ पढ़ कर दोबारा सो गया अगले दिन सुन्नतों के बाद फ़र्ज़ पढ़ कर फ़ारिग़ हुवा तो कचरा दरवाज़े पर देख कर दिमाग़ ख़राब हो गया। चार दिन इसी त़रह़ गुज़र गए लेकिन मैं कचरा फेंकने वाले को पकड़ नहीं पाया, पांचवें दिन अहलिया कहने लगीं مَاشَآءَ اللہ ! अब फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने लगे हैं तो मस्जिद में बाजमाअ़त नमाज़ पढ़ लिया कीजिए, बात दिल को लगी और पांचवें दिन सुन्नतें घर में पढ़ कर जमाअ़त से 10 मिनट पहले दरवाज़े पर कुर्सी लगा कर बैठ गया और मह़ल्ले के नमाज़ी ह़ज़रात को मस्जिद जाते हुए देखने लगा कि किस नमाज़ी के हाथ में कचरे का शॉपर है लेकिन अफ़सोस सारे ख़ाली हाथ आते दिखाई दिए, नमाज़ पढ़ कर घर आया तो दरवाज़े पर कचरा मौजूद नहीं था एक हफ़्ते मुसल्सल पाबन्दी से बाजमाअ़त नमाज़ पढ़ने के बाद मैं ने अहलिया से कहा, बेगम ! अब कचरा फेंकने वाला शायद डर गया है जब ही कचरा नहीं फेंक रहा, अब आप मुझे फ़ज्र के वक़्त नहीं उठाना। अहलिया कुछ नहीं बोलीं, अगले दिन अहलिया ने तो मुझे नहीं उठाया अलबत्ता मेरी ख़ुद आंख खुल गई, खिड़की से झांक कर देखा तो कचरा दरवाज़े पर मौजूद था टाइम देखा तो फ़ज्र का वक़्त तो बाक़ी था लेकिन जमाअ़त निकल चुकी थी, अब अगले दिन फिर वोही मामूल था, दो हफ़्ते मुसल्सल फ़ज्र की नमाज़ बाजमाअ़त पढ़ता रहा, और दरवाज़ा साफ़ सुथरा मिलता रहा दो हफ़्ते बाद अब मेरी जमाअ़त से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने की आ़दत हो चुकी थी, और اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मैं बा जमाअ़त फ़ज्र की नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ हो गया फिर कुछ दिन बाद रात के खाने में उस कचरा फेंकने वाले का ज़िक्र आ गया मैं उसे बुरा भला कहने लगा बेटा बोला अब्बू आप उसे बुरा तो न कहें बल्कि वोह तो आप का मोह़सिन है जिस की वजह से आप फ़ज्र की नमाज़ बा जमाअ़त पाबन्दी से पढ़ने लगे हैं, बेटे की बात सुन कर मेरे दिमाग़ को झटका सा लगा और सब को ग़ौर से देखने लगा, मुझे यूं अपनी त़रफ़ देखते हुए सारे हंसने लगे बेटा कहने लगा अब्बू आप की वोह मोह़सिन और कोई नहीं बल्कि अम्मी हैं आप अम्मी का शुक्रिया अदा कीजिए मैं ने अहलिया को देखा तो अहलिया मुस्कुराने लगीं।

इस वाक़िए से हमें येह सीखने को मिलता है कि हमें सिर्फ़ बेगानों ही की नहीं बल्कि अपनों की इस्लाह़ व बेहतरी पर भी तवज्जोह देनी चाहिए बल्कि जो अपने हों उन के अपने होने का तक़ाज़ा येह है कि उन में अगर कोई दीनी व दुनियावी ख़राबी हो तो उसे दूर करने पर संजीदगी से और भरपूर अन्दाज़ में तवज्जोह देनी चाहिए। और फिर मुलाज़िम हो, बच्चा हो, बीवी हो, दोस्त हो या किसी को भी समझाना हो तो Positive अन्दाज़ रखना चाहिए अगर सब के सामने समझाएंगे, ज़लील करेंगे या बातें सुनाएंगे तो इस्लाह़ नहीं हो

पाएगी। मसलन शौहर अगर अपनी बीवी से शाकी हो कि वोह बात नहीं समझती तो उसे ख़ुद ग़ौर करना चाहिए कि उस ने समझाने का अन्दाज़ कैसा रखा।

येह हिकायत दर अस्ल सिर्फ़ एक शख़्स के फ़ज्र की नमाज़ की तरफ़ लौट आने का वाक़िआ नहीं, बल्कि किसी की इस्लाह और ज़ेहन साज़ी करने और रफ़्ता रफ़्ता राहे रास्त पर लाने के एक निहायत हकीमाना तरीक़ए कार की तस्वीर है। ग़ौर कीजिए कि अगर उस शख़्स की अहलिया शुरूअ़ ही में उसे ताना देतीं, मलामत करतीं, येह कहतीं कि "तुम नमाज़ नहीं पढ़ते, इसी लिए तुम्हारे घर के बाहर कचरा फेंका जाता है" या कोई भी मन्फ़ी तरीक़ा इख़्तियार करतीं तो मुम्किन है वोह अपने दिफ़ाअ़ में मज़ीद ज़िद इख़्तियार कर लेता, लेकिन उन्हों ने एक ऐसी बात कही जिस ने उस के अन्दर ख़ुद एहतिसाबी का दरवाज़ा खोल दिया। उन्हों ने हुक्म नहीं दिया, इल्ज़ाम नहीं लगाया, बल्कि एक सादा सा जुम्ला कहा और उस जुम्ले ने उस शख़्स को अपने अ़मल के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया। फिर जब उस के अन्दर नमाज़े फ़ज्र की तरफ़ आने का इरादा पैदा हुवा तो उन्हों ने उसे सहारा दिया, आहिस्ता आहिस्ता मस्जिद की जमाअ़त की तरफ़ मुतवज्जेह किया।

यहां से हमें समझाने की एक बहुत बड़ी हिक्मत मिलती है कि इन्सान को बदलने के लिए हमेशा उसे अपनी ग़लती का डायरेक्ट ज़िक्र करना और इस पर बात करना ज़रूरी नहीं, बल्कि इस्लाह की राह में च्यूंटी की सी चाल चलना और जिस की इस्लाह करनी है उसे इस मक़ाम तक पहुंचाना ज़रूरी है जहां वोह ख़ुद अपनी इस्लाह का फ़ैसला करे। इस्लाह वोह ज़ियादा पाएदार होती है जो मुसल्लत न की जाए बल्कि सामने वाले के दिल में अच्छे मुस्बत जज़्बे जगा दे। एक दाई, एक उस्ताद, एक वालिद, एक शौहर, एक मुरब्बी और एक ज़िम्मेदार शख़्स को येह समझना चाहिए कि हर इन्सान एक ही अन्दाज़ से नहीं समझता, किसी को दलील चाहिए तो किसी को अपनाइयत, किसी को वाक़िआ तो किसी को अपने सुवाल का जवाब, किसी को ख़ामोशी तो किसी को वोह लम्हा दरकार होता है जिस में वोह ख़ुद अपने अन्दर झांक सके।

समझाने का फ़न येह नहीं कि हम अपनी बात हर क़ीमत पर फ़ौरन व जबरन मनवा लें, बल्कि येह है कि सामने वाले के दिल में अपनी बात इस तरह उतार दें कि हमारी बात उस का अपना नज़रिया बन जाए और नतीजतन वोह इस पर अ़मल पैरा हो जाए।

इस हिकायत में न लम्बी तक़रीर हुई, न डांट पड़ी, न कोई बहस हुई, न इल्ज़ाम तराशी हुई, सिर्फ़ एक मुनासिब मौक़ा, एक मुख़्तसर जुम्ला, मुसल्सल हौसला अफ़ज़ाई और बतदरीज कोशिश ने एक ग़ाफ़िल इन्सान को पहले नमाज़े फ़ज्र के लिए बेदार होने और फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने पर आमादा किया, फिर मस्जिद और जमाअ़त तक पहुंचाया, और बिल आख़िर इस अ़मले ख़ैर को इस का बा क़ायदा मामूल बना दिया। इस लिए अगर हम वाक़ेई किसी की इस्लाह चाहते हैं तो हमें येह सोचना चाहिए कि इस्लाह के लिए कौन सा तरीक़ा अपनाया जाए और किस से गुरेज़ किया जाए। इस्लाह के लिए क्या बात करने की है और क्या बात नहीं, कब बात करनी है और कब नहीं, किस हद तक बात करनी है और कब ख़ामोश होना है।

लिहाज़ा अगर हम किसी की इस्लाह चाहते हैं मगर इस्लाह का अच्छे और हिक्मत भरे तरीक़े से नावाक़िफ़ हैं या ख़ुश मिज़ाज व नर्म तबीअ़त से महरूम हैं, या सामने वाले की इस्लाह दलाइल से होगी और हम दलाइल से नावाक़िफ़ हैं तो हमें ख़ुद इस्लाह करने के बजाए येह अहम काम किसी सहीह शख़्स के ज़िम्मे लगा देना चाहिए। अल्लाह पाक क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है:

﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِیْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَ جَادِلْهُمْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान: अपने रब के रास्ते की तरफ़ हिक्मत और अच्छी नसीहत के साथ बुलाओ और उन से इस तरीक़े से बहस करो जो सब से अच्छा हो। (پ14، النحل:125)

अल्लाह पाक हमें हमदर्दी भरे अन्दाज़ में दूसरों की इस्लाह की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(क़िस्त : 01)

इस्लाम और शख़्सी निखार

इन्सान की अस्ल क़द्रो मन्ज़िलत उस के जिस्म, लिबास शक्लो सूरत या ज़ाहिरी वजाहत में नहीं बल्कि उस के किरदार, अख़्लाक़, अफ़कार, आदात और बातिन की पाकीज़गी में पोशीदा है। दुनिया में कितने लोग ज़ाहिरी ख़ूबसूरती के मालिक हैं, मगर उन के किरदार में कशिश नहीं। कितने लोग बुलन्द मन्सब रखते हैं मगर उन की सोहबत दिल को बोझल कर देती है, कितने लोग इल्मो दौलत से आरास्ता पैरास्ता नज़र आते हैं लेकिन उन के वुजूद से बनी नौए इन्सान को कोई फ़ायदा नहीं पहुंचता। इस के बरअक्स बाज़ लोग अगर्चे रुपिया पैसा, ओहदा व मन्सब और ज़ाहिरी कर्रो फ़र वाले नहीं होते लेकिन उन की गुफ़्तगू में शीरीनी, किरदार में पाकीज़गी, मुआमलात में दियानत, रवय्ये में शराफ़त और दिल में ऐसी रौशनी होती है कि उन की सोहबत इन्सान को बदलने लगती है। ऐसा बन्दा गोया शख़्सी निखार का मालिक होता है। ग़ौर किया जाए तो इस्लाम की एक अज़ीम ख़ूबी येह है कि येह इन्सान को महज़ इबादात का पाबन्द नहीं बनाता बल्कि उसे एक संवरी हुई, मुतवाज़िन, पाकीज़ा, बावक़ार और नूरानी शख़्सियत अता करता है। इस्लाम इन्सान के ज़ाहिर से पहले उस के बातिन को संवारता है, अमल से पहले निय्यत को दुरुस्त करता है, ज़बान से पहले दिल की इस्लाह करता है और मुआशरे को बदलने से पहले फ़र्द की शख़्सियत की तामीर करता है। इसी लिए इस्लाम को सिर्फ़ चन्द अक़ाइद, इबादात और अहकाम का मज्मूआ समझना उस की हमागीरी को महदूद कर देना है। इस्लाम दर अस्ल इन्सान को अल्लाह पाक के क़रीब कर के उसे मख़्लूक़े ख़ुदा के लिए मुफ़ीद तर बनाने का क़ुदरती निज़ाम है।

इस्लाम यूं निखारता है

अल्लाह करीम ने इस्लाम को ऐसी अज़मत, रिफ़अत, पाकीज़गी, नफ़ासत व तहारत अता फ़रमाई है कि जो भी उस के साए में आता है, उस की तालीमात से अपने आप को सजाता संवारता है वोह ख़ुद भी निखरता है और अपने गिर्दो नवाह को भी मुनव्वर करता चला जाता है। येह हक़ीक़त है कि इस्लाम एक ऐसा मुकम्मल निज़ामे हयात है जो इन्सान की शख़्सियत की तामीर करता है। इस्लाम इन्सान के बातिन की इस्लाह से आग़ाज़ करता है, फ़िक्र को पाकीज़ा बनाता है, निय्यत को दुरुस्त करता है, किरदार को संवारता है, ज़बान व निगाह को आदाब सिखाता है, मुआमलात में दियानत पैदा करता है, ग़ुस्से को ज़ब्त, ख़्वाहिशात को एतिदाल और

तअ़ल्लुक़ात को हुस्ने सुलूक अ़ता करता है। यूं इस्लाम एक आ़म इन्सान को नेक, मुतवाज़िन, बावक़ार शख़्सियत में ढाल देता है।

शख़्सी निखार की इब्तिदा

शख़्सिय्यत के निखार की इब्तिदा उसी वक़्त शुरूअ़ हो जाती है कि जब कोई बन्दा इस्लाम के दामन से वाबस्ता हो कर ईमान ले आता है। गोया इस्लामी शख़्सिय्यत की तामीर की ख़िश्ते अव्वल (पहली ईंट) ईमान है। ईमान इन्सान की ज़िन्दगी का ज़ावियए निगाह बदल देता है। जब बन्दा येह यक़ीन कर लेता है कि मैं एक ह़कीम व रह़ीम रब का बन्दा हूं, मेरी ज़िन्दगी बे मक़्सद नहीं, मुझे अपने आमाल का ह़िसाब देना है, मेरे ज़ाहिरो बात़िन से अल्लाह पाक बाख़बर है, तो उस के अन्दर एक ऐसी अख़्लाक़ी निगरानी पैदा हो जाती है जिस के लिए हर वक़्त किसी पोलीस, अ़दालत या कैमेरे की ज़रूरत नहीं रहती। फिर वोह तन्हाई में भी ख़ियानत से बचता है, क्यूंकि उसे मालूम है कि मेरा अल्लाह मुझे देख रहा है। सच्चा मुसलमान छुप कर गुनाह करने से भी डरता है इस लिए कि उस का यक़ीन है कि दुनिया की निगाह से छुप जाना मुम्किन है अल्लाह की निगरानी से किसी त़रह़ नहीं निकल सकता। ईमान ही इन्सान के अन्दर ख़ुद एह़तिसाबी पैदा करता है। दुनिया का राइज निज़ाम इन्सान को दूसरों के सामने अच्छा बनने, अच्छा दिखने की तरग़ीब देता है जब कि इस्लाम इन्सान को अल्लाह पाक की बारगाह में अच्छा बनने की तरबियत देता है। येही वोह मक़ाम है जहां से ह़क़ीक़ी शख़्सिय्यत साज़ी शुरूअ़ होती है।

इस्लाम पहले बात़िन संवारता है

बाहर से इन्सान जितना भी ख़ूबसूरत दिखाई दे, अगर दिल में तकब्बुर, ह़सद, कीना, बुग़्ज़, ख़ुदपसन्दी, ह़िर्स और रिया मौजूद है तो वोह अन्दर से बीमार है। यक़ीनन नफ़्स की दुरुस्ती शख़्सिय्यत के निखार में रीढ़ की हड्डी की ह़ैसिय्यत रखती है। येह नफ़्स की त़हारत और बात़िन की पाकीज़गी ही तो है कि जो इन्सान को रश्के मलाइका बनाती है जब कि नफ़्स की आलूदगी इन्सान को इन्सानिय्यत के दर्जे से गिरा कर ह़ैवान बना देती है। इस्लाम ऐसे ही बीमार बात़िन की इस्लाह़ करता है, उसे बात़िनी बीमारियों से शिफ़ा अ़ता कर के ऐसा रौशन व मुनव्वर कर देता है कि उस में अख़्लाक़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुश्बू और सीरते त़य्यिबा की झलक नुमायां होने लगती है। इस्लाम ह़सद के मुक़ाबले में ख़ैर ख़्वाही सिखाता है। तकब्बुर के मुक़ाबले में तवाज़ोअ़ सिखाता है। बुख़्ल के मुक़ाबले में सख़ावत सिखाता है। ग़ुस्से के मुक़ाबले में ह़िल्म सिखाता है। बदगुमानी के मुक़ाबले में हुस्ने ज़न सिखाता है। इन्तिक़ाम के मुक़ाबले में अ़फ़्वो दरगुज़र की तरग़ीब देता है और ख़ुदपसन्दी के मुक़ाबले में बन्दगी का शुऊर पैदा करता है। क़ुरआने मजीद कामयाब इन्सान का यूं ज़िक्र फ़रमाता है: ﴿قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا(۹) وَ قَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا(۱۰)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : बेशक जिस ने नफ़्स को पाक कर लिया वोह कामयाब हो गया। और बेशक जिस ने नफ़्स को गुनाहों में छुपा दिया वोह नाकाम हो गया।[1] इस से मालूम हुवा कि अपने नफ़्स को बुराइयों से पाक करना कामयाबी ह़ासिल करने का ज़रीआ़ और अपने नफ़्स को गुनाहों में छुपा देना नाकामी का सबब है और नफ़्स बुराइयों से उसी वक़्त पाक हो सकता है जब अल्लाह करीम और उस के ह़बीब صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त की जाए। येही इस्लाम का शख़्सी निखार है कि इन्सान अपने नफ़्स का मालिक बने, नफ़्स का ग़ुलाम न बने। इस लिए कि अगर इन्सान अ़मली काविशों, मेह़नत व रियाज़त से अख़्लाक़े ह़सना को अपना ले तो इन्सानिय्यत की मेराज को पहुंच जाता है और अगर अख़्लाक़े रज़ीला (घटिया आ़दतों) और अफ़्आ़ले क़बीह़ा (बुरे कामों) का मुरक्कब बन जाए तो वोह इन्सान कहलाए जाने का ह़क़ भी खो देता है।

जिन्हें इस्लाम ने निखारा

येह इस्लाम ही है कि जो अपने मानने वालों को ऐसा उ़म्दा, पाकीज़ा और आला ज़रफ़ बना देता है कि मुसलमान अपनी ज़रूरत के बावुजूद मुसलमान भाई को अपने आप पर तरजीह़ देता बल्कि कई बार उस के लिए अपनी जान भी क़ुरबान कर देता है जैसा कि ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : यरमूक की लड़ाई में बहुत से सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان शहीद हो गए। मैं पानी हाथ में लिए ज़ख़्मियों में अपने चचाज़ाद भाई को तलाश कर रहा था, आख़िर उसे पा लिया, वोह दम तोड़ रहे थे, मैं ने पूछा : ऐ चचाज़ाद भाई ! आप पानी नोश फ़रमाएंगे ? कपकपाती आवाज़ में आहिस्ता से कहा : जी हां। इतने में किसी के कराहने की आवाज़ आई, जां बलब चचाज़ाद भाई ने इशारे से फ़रमाया : पहले उस ज़ख़्मी को पानी पिला दीजिए। मैं ने देखा वोह ह़ज़रते हिशाम बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ थे, उन की सांस उखड़ रही थी मैं उन्हें पानी के लिए पूछ ही रहा था कि क़रीब ही किसी ने आह भरी। ह़ज़रते हिशाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : पहले उन को पिलाइए, मैं जब उन ज़ख़्मी के क़रीब पहुंचा तो उन्हें पानी पीने की ह़ाजत न रही थी क्यूंकि वोह शहादत का जाम पी चुके थे। मैं फ़ौरन ह़ज़रते हिशाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की त़रफ़ लपका मगर वोह भी शहीद हो चुके थे। फिर मैं अपने चचाज़ाद भाई की त़रफ़ पहुंचता वोह भी शहीद हो चुके थे।[2] इसी त़रह चन्द दरवेश जासूसी की तोहमत में पकड़े गए सरकारी हुक्म हुवा कि उन को क़त्ल किया जाए जब क़त्ल करने लगे तो हर एक ने येही तक़ाज़ा किया कि पहले मुझे क़त्ल किया जाए ताकि ज़िन्दगी के एक दो सांस दूसरा भाई ह़ासिल करे और मैं उस से पहले मारा जाऊं। बादशाह ने येह ईसार देखा, सब को रिहा कर दिया।[3] जब कोई इन्सान इस्लाम के अ़त़ा कर्दा उसूलों के मुताबिक़ अपनी शख़्सिय्यत की तामीर करता है तो उस के समरात सिर्फ़ उस की ज़ात तक मह़दूद नहीं रहते बल्कि उस के ख़ानदान और पूरे मुआ़शरे तक फैल जाते हैं। इन्फ़िरादी सत़्ह़ पर ऐसे शख़्स को ज़ेहनी सुकून, नज़्मो ज़ब्त़ और ख़ुद एतिमादी ह़ासिल होती है। हुस्ने सुलूक, सिलए रेह़मी और हुक़ूक़ की पासदारी की बदौलत ख़ानदान में मह़ब्बत, तआ़वुन और इस्तिह़काम पैदा होता है। मुआ़शरती सत़्ह़ पर सिद्क़, अमानत, अ़फ़्व और हुस्ने मुआ़शरत जैसी सिफ़ात की बदौलत बाहमी एतिमाद, अम्न और तआ़वुन की फ़ज़ा क़ाइम होती है, जो किसी भी मुहज़्ज़ब और तरक़्क़ी याफ़्ता मुआ़शरे की बुन्यादी ज़रूरत है। इस्लाम का निज़ामे शख़्सिय्यत साज़ी इस क़दर मुनज़्ज़म है कि फ़र्द से ख़ानदान तक और ख़ानदान से पूरे मुआ़शरे तक उस के असरात फैलते चले जाते हैं। येह तो इस्लाम के अ़त़ा कर्दा शख़्सी निखार की एक झलक है वरना इस्लाम की तालीमात का हर गोशा अपने अन्दर इन्सान की शख़्सिय्यत के किसी न किसी पहलू को संवारने का सामान रखता है। ईमान इसे मक़्सद देता है, इ़बादत उसे नज़्म देती है, तक़्वा उसे पाकीज़गी अ़त़ा करता है, अख़्लाक़ उसे दिलकश बनाते हैं, मुआ़मलात उसे बावक़ार बनाते हैं और ख़िदमते ख़ल्क़ उसे दूसरों के लिए नफ़ा बख़्श बनाती है। यूं इस्लाम इन्सान के ज़ाहिरो बात़िन, फ़िक्र व किरदार और इन्फ़िरादी व इज्तिमाई ज़िन्दगी को इस त़रह संवारता है कि उस की शख़्सिय्यत ख़ुद भी ख़ैर का पैकर बनती है और दूसरों के लिए भी ख़ैर का ज़रीआ़ बन जाती है। (जारी है)

---

(1) پ 30، الشمس: 9، 10 (2) کیمیائے سعادت، 2/648 (3) اخلاق الصالحین، ص 37۔

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह के पसन्दीदा आमाल

अल्लाह तआ़ला की रिज़ा और रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत हर मुसलमान की सब से बड़ी आरज़ू है। क़ुरआने करीम ने इस मन्ज़िल तक पहुंचने का रास्ता वाज़ेह करते हुए इरशाद फ़रमाया : ﴿قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : ऐ ह़बीब ! फ़रमा दो कि ऐ लोगो ! अगर तुम अल्लाह से मह़ब्बत करते हो तो मेरे फ़रमां बरदार बन जाओ अल्लाह तुम से मह़ब्बत फ़रमाएगा।[1] इस आयते मुबारका से मालूम हुवा कि बन्दए मोमिन की कामयाबी इसी में है कि वोह अपनी ज़िन्दगी को हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्द, आप की तालीमात और आप के पसन्दीदा औसाफ़ के मुताबिक़ ढालने की कोशिश करे।

अह़ादीसे मुबारका में मुतअ़द्दद ऐसे आमाल, आ़दात और अख़्लाक़ का ज़िक्र मिलता है जिन्हें रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पसन्द फ़रमाया, उन की तारीफ़ फ़रमाई या उन के इख़्तियार करने वालों को अपनी मह़ब्बत, क़ुर्ब और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा की बिशारत दी।

आइए ! ऐसे नेक आमाल के बारे में पढ़ते हैं जो रसूले रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मह़बूब थे, ताकि हम उन मुबारक इरशादात की रौशनी में अपना मुह़ासबा करें, अपने किरदार को संवारें और अपनी ज़िन्दगी को ऐसे आमाल से मुज़य्यन करें जो हमें अल्लाह तआ़ला और उस के मह़बूब रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत व रिज़ा के क़रीब कर दें।

बुर्दबारी और वक़ार

क़बीलए अ़ब्दुल क़ैस के सरदार जिन का नाम मुन्ज़िर बिन आइज़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ था और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन्हें **“अशज”** कह कर पुकारा था, जब आप वफ़्द के साथ नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए तो अपनी ऊंटनी को बांधने के बाद एक थैली में से दो निहायत उ़म्दा और सफ़ेद कपड़े निकाल कर पहने। हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह सब कुछ देख रहे थे, फिर वोह चलते हुए हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में पहुंच गए, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अशज ! तुम में दो आ़दतें ऐसी हैं जो अल्लाह पाक और

उस के रसूल को पसन्द हैं। उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान हों वोह दो आ़दतें कौन सी हैं ? इरशाद फ़रमाया : बुर्दबारी और वक़ार। उन्हों ने अ़र्ज़ की: क्या मुझ में येह दो आ़दात पैदा की गई हैं या मेरी फ़ित़रत में रखी गई हैं ? इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक ने येह दो आ़दतें तुम्हारी फ़ित़रत में रखी हैं। इस पर ह़ज़रते अशज رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ने कहा : अल्लाह पाक का शुक्र है जिस ने मेरी फ़ित़रत इन दो आ़दतों पर रखी जो अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पसन्द हैं।[(2)]

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहल्वी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : वफ़्द के अक्सर अरकान ने ऐसी जल्दी का मुज़ाहरा किया अगर्चे येह शौक़ व मह़ब्बत की बिना पर था, उन में से एक आदमी जिस का नाम अशज था उस ने ऐसा न किया बल्कि पहले वोह अपनी मन्ज़िल और रिहाइश गाह पर गए, ताज़ा ग़ुस्ल किया, सफ़ेद कपड़े पहने, मस्जिदे नबवी में आ कर दो नफ़्ल अदा किए और इस के बाद बड़े ही ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ और इत़्मीनान से हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए और ज़ियारत व मह़ब्बत से बारयाब हुए, हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की तारीफ़ फ़रमाई और इस अदब को पसन्द किया और फ़रमाया : तुम में दो चीज़ें ऐसी हैं जो अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पसन्द हैं, ह़िल्म (यानी बुर्दबारी) और वक़ार।[(3)]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुस्ती और काहिली से बचते हुए हमें भी अपने मुआ़मलात चाहे घर के हों या बाहर के, दीनी हों या दुनियावी बुर्दबारी, इत़्मीनान और अच्छे अन्दाज़ में करने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि हम अल्लाह पाक और उस के आख़िरी रसूल صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पसन्दीदा बन जाएं और दुनिया व आख़िरत में कामयाबी मिले।

बेहतरीन अख़्लाक़ वाले

मिलनसारी और अच्छे अख़्लाक़ से पेश आने वाले लोग हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पसन्दीदा लोग हैं, ह़ुस्ने अख़्लाक़ से पेश आने के मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीसे करीमा में बहुत फ़ज़ाइल बयान किए गए हैं, आइए ! मज़ीद 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़िए और अपने अन्दर दूसरों के साथ अच्छे अख़्लाक़ से पेश आने का जज़्बा पैदा कीजिए :

1. ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेरे नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा लोग वोह हैं: जो तुम में बेहतरीन अख़्लाक़ वाले, नर्म दिन, लोगों से मह़ब्बत करने वाले और वोह जिन से लोग मह़ब्बत करते हैं।[(4)]

2. बेशक तुम में मुझे सब से ज़ियादा मह़बूब (यानी प्यारा) और आख़िरत में मेरे सब से ज़ियादा क़रीब वोह शख़्स होगा जो तुम में बेहतरीन अख़्लाक़ वाला होगा और तुम में से मुझे सब से ज़ियादा नापसन्द और आख़िरत में मुझ से ज़ियादा दूर वोह शख़्स होगा जो तुम में बदतरीन अख़्लाक़ वाला होगा।[(5)]

नेक आमाल पर हमेशगी

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से रिवायत है कि अल्लाह पाक के नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सब से प्यारा अ़मल वोह था कि जिस को करने वाला हमेशा करता रहे।[(6)]

एक रिवायत में है कि अगर्चे वोह अ़मल थोड़ा हो।[(7)]

नेक आमाल पाबन्दी से करते रहना हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बहुत पसन्द था लिहाज़ा एक मुसलमान को अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मह़बूब व पसन्दीदा बनने के लिए नेक और बेहतरीन औसाफ़ अपनाते हुए पाबन्दी से नेक आमाल करते रहना चाहिए। ऐ काश ! हम अल्लाह और उस के रसूल صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पसन्दीदा बनने में कामयाब हो जाएं।

---

(1)پ3، آل عمران:31(2)مسند احمد، 39/490، حدیث:54-احیاء العلوم، 3/219(3)اشعۃ اللمعات، 4/27-161(4)مجمع الزوائد، 8/48، حدیث: 12668(5)مسند احمد،6/220،حدیث:17747(6)بخاری،4/237،حدیث: 6462(7)مسند احمد،9/326،حدیث:24376،ملتقطاً۔

अह़कामे तिजारत

1 ख़रीदार अगर बिला वजह चीज़ वापस करे तो वापस लेना ज़रूरी नहीं

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मेरी इलेक्ट्रोनिक्स आइटम की दुकान है ख़रीदार हम से मुख़्तिलफ़ इलेक्ट्रॉनिक्स का सामान ख़रीद कर ले जाते हैं और बाज़ औक़ात ख़रीदा हुवा, सामान वापस करने आते हैं जब कि हम ने उन्हें कोई धोका नहीं दिया होता और सामान में कोई ऐ़ब भी नहीं होता, तो उस सामान को वापस लेने का क्या हुक्म है ? उस सामान को वापस न लें तो क्या हम गुनहगार होंगे ? क्यूंकि वापस लेने की सूरत में जो हमारी मेह़नत लगी होती है और जो इस डील से हमारा नफ़ा होता है वोह चला जाएगा जिस की वजह से हम बहुत कम ही वापस लेते हैं।

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَ الصَّوَابِ

जवाब : फ़रीक़ैन के माबैन जो ख़रीदो फ़रोख़्त का अ़क़्द हुवा है उसे ख़त्म कर देने को इक़ाला कहते हैं उस की चन्द शराइत़ हैं जिन में से एक शर्त़ येह है कि दोनों फ़रीक़ इक़ाला पर राज़ी हों। अगर एक फ़रीक़ भी राज़ी न हो तो इक़ाला नहीं हो सकता। जब ख़रीदार ने अपनी रिज़ामन्दी से कोई चीज़ ख़रीदी, आप ने उसे कोई झूट न बोला, न ही कोई धोका दिया और न ही उस अ़क़्द को फ़स्ख़ करने का कोई सबबे शरई़ पाया जा रहा है तो आप पर उस चीज़ को वापस लेना वाजिब नहीं है, उस चीज़ को वापस लेने से मना करने का आप शरई़ त़ौर पर ह़क़ रखते हैं और वापस लेने से मना करने की सूरत में आप गुनहगार भी नहीं होंगे अलबत्ता अगर आप ख़रीदार के साथ भलाई से पेश आते हुए वोह चीज़ वापस ले लेते हैं तो येह एक मुस्तह़ब और सवाब का काम है।

चुनान्चे सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ लिखते हैं : “दो शख़्सों के माबैन जो अ़क़्द हुवा है उस के उठा देने को इक़ाला कहते हैं... दोनों में से एक इक़ाला चाहता है तो दूसरे को मन्ज़ूर कर लेना, इक़ाला कर देना मुस्तह़ब है और येह मुस्तह़िक़्क़े सवाब है।” (बहारे शरीअ़त, 2/734)

وَاللهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ والہٖ وسلَّم

2 ह़िजामे की उजरत लेना कैसा है ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि आज कल बाज़ इदारे बिला मुआ़वज़ा ह़िजामा करते हैं और बाज़ इदारे ह़िजामा करने की त़ै शुदा उजरत लेते हैं तो येह रहनुमाई फ़रमाएं कि ह़िजामा करने की उजरत का लेन देन करना कैसा है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَ الصَّوَابِ

जवाब : ह़िजामा बाक़ाइ़दा एक इ़लाज का नाम है। ह़दीसों में भी ह़िजामा करवाने की तरग़ीब दी गई है। माहिर त़बीब के मश्वरे से ह़िजामा करवाना बहुत अच्छा अ़मल है।

अलबत्ता येह वाज़ेह़ रहे कि मस्जिद या फ़िनाए मस्जिद में ह़िजामा करवाना शरअ़न जाइज़ नहीं है क्यूंकि ह़िजामे में बहता ख़ून निकलता है, जो कि नापाक है जब कि मस्जिद यहां तक कि फ़िनाए मस्जिद को भी नजासतों और गन्दी चीज़ों से बचाने का हुक्म है।

पछने लगाने की उजरत लेना और देना जाइज़ है। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक अ़मल और कुतुबे फ़िक़्ह की सराह़त से

पछने की उजरत का जवाज़ साबित है। अलबत्ता हिजामे को बतौर पेशा अपनाना, शरअ़न मरग़ूब नहीं है।

शरह मआ़नियुल आसार में है: "عن عبد الله بن العباس انه قال: احتجم رسول الله صلى الله عليه وسلم واعطى الحجام اجره فی ذلك" यानी: हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है आप फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिजामा करवाया और हजाम को उस के काम की उजरत अ़ता फ़रमाई। (شرح معانی الآثار، 5/129)

सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं: "हजामत यानी पछने लगवाना, जाइज़ है और पछने की उजरत देना लेना भी जाइज़ है पछने लगाने वाले के लिए वोह उजरत ह़लाल है अगर्चे उस को ख़ून निकालना पड़ता है और कभी ख़ून से आलूदा भी हो जाता है मगर चूंकि हुज़ूरे अक़दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद पछने लगवाए और लगाने वाले को उजरत भी दी मालूम हुवा कि इस उजरत में ख़बासत नहीं।" (बहारे शरीअ़त, 3/144)

फ़िनाए मस्जिद में नजासत से मुतअ़ल्लिक़ सय्यिदी आला ह़ज़रत इमाम अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं: "फ़सिले मस्जिद बाज़ बातों में हुक्मे मस्जिद में है मोतकिफ़ बिला ज़रूरत उस पर जा सकता है उस पर थूकने या नाक साफ़ करने या नजासत डालने की इजाज़त नहीं।" (फ़तावा रज़विय्या, 16/495)

बहारे शरीअ़त में है: "मस्जिद में नजासत ले कर जाना, अगर्चे उस से मस्जिद आलूदा न हो, या जिस के बदन पर नजासत लगी हो, उस को मस्जिद में जाना मना है।" (बहारे शरीअ़त, 1/645)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 नया मोबाइल डब्बा खुल जाने के बाद कम क़ीमत में बेचना कैसा?

सुवाल: क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि हम डब्बा पैक नया मोबाइल ले कर रक़म की अदाएगी भी कर देते हैं मगर डब्बा खोलने के बाद मोबाइल पसन्द नहीं आता तो दुकानदार से वापस करने का कहते हैं तो वोह हज़ार, दो हज़ार बल्कि बाज़ औक़ात इस से भी ज़ियादा रक़म कम कर के वापस करता है जिस से ख़रीदार को नुक़्सान होता है, ऐसी सूरत में क्या करना चाहिए? क्या येह सूरत सूद में दाख़िल है?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब: नया मोबाइल जब खोल कर चेक करने के लिए स्टार्ट कर लिया तो उस की क़ीमत गिर जाती है ऐसे मौक़े पर हमारा उ़र्फ़ येह है कि इस त़रह का दूसरा मोबाइल देख कर पहले इत़मीनान ह़ासिल किया जाता है फिर डब्बा पैक मोबाइल ख़रीदा जाता है और अगर उस में कोई ऐ़ब न हो तो वापस नहीं किया जाता अगर कोई वापस करना चाहे तो नई ख़रीदारी होती है यानी वोह बाद में आ कर दुकानदार को फ़रोख़्त करता है और ऐसी फ़रोख़्त बहुत सारी चीज़ों में होती है लोग गाड़ियां लेते हैं, महीना पन्दरह दिन इस्तिमाल करने के बाद उसी शख़्स को जिस से ख़रीदी थी कम क़ीमत पर फ़रोख़्त कर देते हैं तो दूसरी डील एक नई ख़रीदारी होती है जिस में ख़रीदो फ़रोख़्त की शराइत़ व तफ़्सील पाई जाती हों तो उस में कोई ह़रज नहीं।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 बैआ़ना ज़ब्त करना कैसा?

सुवाल: क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि आ़म त़ौर पर राइज है कि जब एक शख़्स किसी से कोई माल ख़रीदता है तो वोह बेचने वाले को कुछ रक़म बैआ़ना देता है फिर किसी वजह से वोह दोनों आपस में बैअ़ ख़त्म कर देते हैं तो बेचने वाला बैआ़ना की रक़म ज़ब्त कर लेता है ख़रीदार को वापस नहीं करता उस का ऐसा करना कैसा है?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब: सौदा ख़त्म हो जाने पर बैआ़ना ज़ब्त करना, नाजाइज़ो गुनाह और ज़ुल्म है। आला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं: "बैअ़ न होने की ह़ालत में बैआ़ना ज़ब्त कर लेना जैसा कि जाहिलों में रिवाज है ज़ुल्मे सरीह़ है।" (फ़तावा रज़विय्या, 17/94)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदुल्लाह बिन अल जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

दराज़ क़द, दुबले पतले मगर चुस्त बदन के मालिक, सर और दाढ़ी के बालों में मेहंदी की रंगत, पाकीज़ा और नूरानी चेहरे वाली शख़्सिय्यत जिन्हें देख कर आंखों को राहत, दिल को फ़रह़त और ईमान को ह़लावत नसीब होती,[1] फ़क़त़ गुफ़्तार के नहीं बल्कि किरदार के भी ग़ाज़ी थे बेह़द ख़ुश अख़्लाक़, मुन्कसिरुल मिज़ाज, शर्मो ह़या के पैकर, आ़बिदो ज़ाहिद होने में अपनी मिसाल आप, मुसलमानों के दरमियान होते तो ख़ुश अख़्लाक़ी और मिलनसारी का मज्मूआ़ होते, दुश्मनाने इस्लाम के ख़िलाफ़ एक बिफरे हुए शेर और तेज़ तलवार की मानिन्द नज़र आते, जंगी उमूर के माहिर ऐसे कि उन की तदाबीर से मैदाने जंग का नक़्शा बदल जाता, ज़हीन ऐसे कि बड़े से बड़ा मुश्किल मरह़ला बआसानी ह़ल हो जाता, सिपह सालार ऐसे कि अदना (किसी आ़म सिपाही) को भी शिकायत का मौक़अ़ न मिलता, ज़र्फ़ इतना बड़ा कि माज़ूल होने की ख़बर पहुंची तो मुस्कुराए और लोगों में नए सिपह सालार के आने का एलान किया,[2] माथे पे फ़ुतूहाते शाम का सहरा बन्धा,[3] शाम की गवर्नरी का परवाना मिला तो कई दिन तक उसे छुपाए रखा,[4] इस अ़ज़ीम जर्नेल का अस्ल नाम तो **"आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन जर्राह़"** है मगर "अबू उ़बैदा बिन जर्राह़" के नाम से आ़लम में शोहरा हुवा।

ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ख़ानदाने क़ुरैश के बहुत ही नामवर और मुअ़ज़्ज़ज़ फ़र्द थे । सातवीं पुश्त पर ख़ानदानी सिल्सिला रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब से मिल जाता है। इब्तिदा ही में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की दावते इस्लाम पर लब्बैक कह कर इस्लाम क़बूल किया और जांनिसारी के लिए बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो गए।[5]

उन दस ख़ुश नसीब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की फ़ेहरिस्त में शामिल हुए जो एक साथ जन्नती होने की बिशारत से नवाज़े गए, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत में तमाम ग़ज़्वात से बहरामन्द हुए, एक मरतबा ह़बशा की त़रफ़ तो दूसरी मरतबा मदीनए मुनव्वरा की जानिब हिजरत की सआ़दत से सरफ़राज़ हुए।[6]

एक मरतबा प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अहले नजरान से इरशाद फ़रमाया : मैं तुम्हारे पास एक ऐसा अमीन भेजूंगा जो वैसा ही अमीन है जैसा उसे होना चाहिए। फिर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को उन की त़रफ़ भेजा।

सरकारे काएनात صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मौक़े पर इरशाद फ़रमाया : हर उम्मत में एक अमीन होता है और ऐ उम्मत ! हमारे अमीन **"अबू उ़बैदा बिन जर्राह़"** हैं।[7]

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि येह सिफ़त तमाम सह़ाबा में थी मगर ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ में कामिल त़ौर पर थी, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा में अमानतदारी के सिवा और बहुत सिफ़ात थीं मगर येह सिफ़त नुमायां थी इस लिए फ़रमाया कि इस उम्मत के अमीन **"अबू उ़बैदा"** हैं इस से न तो येह लाज़िम है कि बाक़ी सह़ाबा अमीन न थे, न येह कि जनाब अबू उ़बैदा में सिवाए अमानतदारी के और कोई सिफ़त न थी।[8]

ग़ज़्वए उहुद में जब तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़्सार मुबारक, ख़ुद (यानी जंग में पहनी जाने वाली टोपी) की कड़ियां पैवस्त होने से ज़ख़्मी हुए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ येह देख कर तड़प उठे और इ़श्क़े रसूल का अ़मली मुज़ाहरा करते हुए सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास पहुंच कर उन कड़ियों को अपने दांतों से निकालने लगे, पहली कड़ी निकली तो आप के सामने का एक दांत टूट गया दूसरी कड़ी निकली तो दूसरा दांत भी अपने मह़बूब करीम आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान हो चुका था।[9]

ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बड़े ज़ाहिद तारिकुद्दुनिया थे, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ शाम तशरीफ़ लाए तो लश्करे इस्लाम के सिपहसालार से मुलाक़ात के लिए आने लगे, आप हर एक से मुलाक़ात करते और पूछते : मेरे भाई अबू उ़बैदा कहां हैं ? कुछ देर बाद ह़ज़रते अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ गले लग गए और फ़रमाने लगे कि मैं तुम्हारे घर ठहरूंगा, हुक्मरानों के लिए आप के अय्याम ज़ीस्त, सामान और घर की ह़ालत लाइक़े तक़्लीद है घर क्या था बस ! एक झोंपड़ा जिस की न कोई बनावट थी न सजावट, सामाने ह़यात में न कोई जगमगाहट थी न झिलमिलाहट, लम्ह़ाते ज़िन्दगी में न कोई घबराहट थी न बुलबुलाहट, कुल सामान तलवार, ढाल और ज़ीन पर मुश्तमिल था, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने पूछा : क्या घर में येही सामान है ? अ़र्ज़ की येही सामान मन्ज़िल तक पहुंचा देगा, फ़रमाया : मेहमान को कुछ नहीं खिलाओगे। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपने थैले से रोटी के कुछ सूखे टुकड़े निकाल कर पेश कर दिए जिन्हें देख कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ आब दीदा हो गए और रोते हुए इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू उ़बैदा ! दुनिया तुम्हें अपने चंगुल में फंसा न सकी।[10]

एक मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कजावे की चटाई पर पालान को तकिया बनाए हुए लेटे थे कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ तशरीफ़ ले आए, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को इस ह़ालत में देख कर पूछा : आप दूसरों की त़रह़ आराम देह बिस्तर पर क्यूं नहीं लेटते ? आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ की : मेरे आराम के लिए येही काफ़ी है।[11]

जन्नत की सनद अ़त़ा होने के बावुजूद तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان कभी भी अल्लाह पाक की ख़ुफ़िया तदबीर से ग़ाफ़िल न रहे बल्कि क़ियामत की हौलनाकियां, मैदाने मह़शर की वह़शतें और आमाल का एह़तिसाब येह तमाम उमूरे आख़िरत उन्हें किसी वक़्त चैन न लेने देते ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की भी येह कैफ़ियत रहती थी चुनान्चे आप पर जब ख़ौफ़े ख़ुदा का ग़लबा होता, दुनिया की आज़माइशी ज़िन्दगी और उस के फ़ित्नों को देखते तो बेसाख़्ता पुकार उठते : काश ! मैं कोई मेंढा होता जिसे

घर वाले ज़ब्ह करते और पका कर उस का गोश्त खा लेते और शोरबा पी लेते।[12]

मज़हबी स्कॉलर अ़ल्लामा मुहम्मद इल्यास क़ादिरी साहिब फ़रमाते हैं कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان अशरफ़ुल मख़्लूक़ात और अ़ज़मते इन्सानी के मफ़हूम को यक़ीनन हम से ज़ियादा समझते थे। उन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या ने مَعَاذَ اللہ बतौरे नाशुक्री नहीं। ख़ौफ़े ख़ुदा से मग़लूब हो कर और अल्लाह करीम की ख़ुफ़िया तदबीर से डरते हुए बतौरे आ़जिज़ी कभी दरख़्त, कभी ख़ाक, कभी परिन्दा तो कभी चौपाया बन कर दुनिया में न आने पर अपने लिए तश्वीश का इज़हार फ़रमाया ! क्यूंकि जानवर वग़ैरा को बुरे ख़ातिमे का कोई ख़ौफ़ नहीं, उसे नज़्अ़ की सख़्तियों, क़ब्र की वहशतों, और जहन्नम की सज़ाओं से वासिता नहीं पड़ेगा। बल्कि तमन्ना क्या करते थे कि काश ! हम पैदा ही न हुए होते ![13]

काश कि मैं दुनिया में पैदा न हुवा होता
क़ब्रो हश्र का सब ग़म ख़त्म हो गया होता[14]

एक मरतबा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ने चार सौ दीनार आप رَضِیَ اللہُ عَنْہُ को भिजवाए तो आप ने कनीज़ को बुला कर फ़रमाया : इतने दीनार फ़ुलां के घर और इतने दीनार फ़ुलां ह़ाजत मन्द के घर पहुंचा दो, अभी दो दीनार बाक़ी थे कि घर वालों को इ़ल्म हो गया लिहाज़ा उन्हों ने अ़र्ज़ की : अल्लाह की क़सम ! हम भी मिस्कीन हैं, हमें भी अ़ता फ़रमा दें, चुनान्चे दोनों दीनार आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने घर वालों को दे दिए।[15]

शाम में त़ाऊ़न की वबा फूटी तो आप भी उस बीमारी में मुब्तला हो गए, 18 सिने हिजरी में नमाज़ पढ़ने जा रहे थे कि रास्ते में ही इन्तिक़ाल हो गया यूं 58 बरस की उ़म्र में त़ाऊ़न के सबब शहादत का अ़ज़ीम और बुलन्द रुत्बा पा लिया।[16]

ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।[17] आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ का मज़ार पुर अनवार मुल्के शाम के शहर **“ग़ौरे बैसान”** में मर्जए ख़लाइक़ है।[18]

शारेहे मुस्लिम इमाम नववी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अबू उ़बैदा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ के मज़ारे अक़्दस पर एक अ़जीब क़िस्म की जलालत त़ारी है जो यक़ीनन उन के शायाने शान है और जिस वक़्त मज़ारे अक़्दस की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा तो मुझ पर कई अ़जाइबात आश्कार हुए।[19]

---

(1)طبقات ابن سعد، 3/316(2)فتوح الشام،1/24(3)الاصابۃ، 3/476 (4)فتوح الشام،1/86(5)طبقات ابن سعد،1/157(6)طبقات ابن سعد، 3/313،اسد الغابہ،2/125 (7)بخاری، 2/546، 545، حدیث: 3745، 3744(8)مرأۃ المناجیح،8/434-مرقاۃ المفاتیح،10/488، تحت الحدیث: 6118 (9)طبقات ابن سعد،3/313(10)الزہد لابی داؤد، ص126، رقم:123 (11)مصنف ابن ابی شیبۃ،8/173، رقم:1(12)طبقات ابن سعد،3/315(13)سگ مدینہ کہنا کیسا؟، ص16(14)وسائل بخشش (مُرَمَّم)، ص158 (15)الزھد للامام احمد، ص283، رقم:1562(16)اسد الغابۃ،3/126،127 (17) معجم کبیر، 1/155، رقم:363(18)معرفۃ الصحابۃ لابی نعیم،1/160 (19)تہذیب الاسماء واللغات للنووی،2/537۔

शहर ग़ौरे बैसान

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

मज़ार हज़रते सय्यिद मुहम्मद बद्रुद्दीन ज़अ़बी जीलानी तराबलुसी رحمۃ اللہ علیہ

मज़ार हज़रते मौलाना मियां मुहम्मद शरीफ़ चिश्ती सियालवी رحمۃ اللہ علیہ

मज़ार हज़रते मौलाना पीर सय्यिद ज़ुहूर अह़मद शाह बुख़ारी क़ादिरी رحمۃ اللہ علیہ

जुमादल ऊला इस्लामी साल का पांचवां महीना है। इस में जिन सह़ाबए किराम, उ़लमाए इस्लाम और औलिया व मशाइख़े उ़ज़ाम का विसाल हुवा, उन में से 132 का मुख़्तसर ज़िक्र "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" जुमादल ऊला 1438 हि. ता 1447 हि. के शुमारों में किया जा चुका है। मज़ीद 13 का तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

सहाबाए किराम علیہم الرضوان

1 ह़ज़रते जाबिर बिन अ़म्र बिन ज़ैद बिन औ़फ़ बिन मबज़ूल अन्सारी رضی اللہ عنہ अन्सार के क़बीलए बनू माज़िन बिन नज्जार से हैं। उन के तीन भाई क़ैस, ह़ारिस और अबू किलाब हैं। ह़ज़रते जाबिर رضی اللہ عنہ ने ग़ज़्वए मौता (जुमादल ऊला 8 हि.) में जामे शहादत नोश फ़रमाया।(1)

2 ह़ज़रते ह़ारिस बिन नोमान बिन असाफ़ अन्सारी ख़ज़रजी नज्जारी رضی اللہ عنہ उहुद और माबाद के ग़ज़्वात में शामिल रहे। आप ने ग़ज़्वए मौता (जुमादल ऊला 8 हि) में शहादत पाई।(2)

उ़लमाए इस्लाम رحمہم اللہ السلام

3 जामेअ़ माक़ूल व मन्क़ूल ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अबुल फ़त्ह फ़ारूक़ी رحمۃ اللہ علیہ की पैदाइश थानैसर, हरियाना, हिन्द के इ़ल्मी घराने में हुई और 8 जुमादल ऊला 976 हि. को आगरा, यूंपी हिन्द में विसाल फ़रमाया। आप बेहतरीन मुदर्रिस, उस्ताज़ुल उ़लमा और कसीरुल तलामिज़ा थे। 50 साल मह़ल्ला मीर रफ़ीउ़द्दीन सफ़वी, आगरा, हिन्द में मस्नदे तदरीस पर फ़ाइज़ रहे।(3)

4 अफ़ज़लुल मुह़द्दिसीन ह़ज़रते मौलाना अह़मद अ़ली मुह़द्दिस सहारनपुरी رحمۃ اللہ علیہ की पैदाइश तक़रीबन 1225 हि. को सहारनपूर, यूपी हिन्द में हुई और यहीं 6 जुमादल ऊला 1297 हि. को वफ़ात पाई। आप ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, आ़लिमे जलील, शैख़ुल ह़दीस, मुह़श्शी व मुसह़ह़ सह़ाह़ सिता, बानी मुत्बअ़ अह़मदी देहली और अकाबिर उ़लमाए हिन्द से थे।(4)

5 ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद अबू सरवर मुह़म्मद ई़दुल क़ासमी गीलानी رحمۃ اللہ علیہ की पैदाइश यौमे ई़दुल अज़्हा 1287 हि. को हुई और 6 जुमादल ऊला 1335 हि. को विसाल फ़रमाया, तदफ़ीन बाबुस्सग़ीर क़ब्रिस्तान में की गई। आप ने इ़ल्मे दीन अपने वालिद, शैख़ उ़मर अ़त्तार और दीगर उ़लमाए अ़स्र से ह़ासिल किया, आप बतौ़रे वकील मज़्लूमीन के ह़क़ का दिफ़ाअ़ फ़रमाया करते थे।(5)

6 ह़ज़रते शैख़ अह़मद बिन अ़ब्दुल लतीफ़ ख़त़ीब मनकाबावी जावी मुहाजिर मक्की رحمۃ اللہ علیہ की पैदाइश 1276 हि. में कोताकार नग़, मीना निकाबाव, मग़रिबी समाटरा, इन्डोनेशिया के इ़ल्मी घराने में हुई और 9 जुमादल ऊला 1334 हि. को मक्कए मुकर्रमा में विसाल फ़रमाया, मुअ़ल्ला क़ब्रिस्तान में तदफ़ीन की गई। आप ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, माहिरे उ़लूमे इस्लामिया क़दीमिया व

जदीदा मसलन रियाज़ी, जब्र व मुक़ाबला व हिन्दसा, इल्म तौक़ीयत व ज़ीज वग़ैरा, सोहबत याफ़्ता शैख़ मुहम्मद सालेह कुर्दी, मुदर्रिस बाब ज़ियादा मस्जिदुल हराम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मक़्बूल ख़ासो आम, 46 अ़रबी व मलावी कुतुब के मुसन्निफ़ थे।[6]

7 हज़रते मौलाना अहमद दीन मखड़वी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ की पैदाइश 1307 हि. में मखड़ शरीफ़ के इल्मी घराने में हुई और यहीं 3 जुमादल ऊला 1389 हि. को विसाल फ़रमाया। आप ज़हीनो फ़तीन, हाफ़िज़े क़ुरआन, बेहतरीन आ़लिमे दीन, शैख़े तरीक़त, कसीरुल मुतालआ़ और मद्रसए ख़ानक़ाह मुअ़ल्ला मौलाना मुहम्मद अ़ली मखड़वी के कहना मश्क़ मुदर्रिस थे। मश्हूर उ़लमा मौलाना मुहम्मद दीन मखड़वी और मौलाना ग़ुलाम ज़ैनुद्दीन तरगवी आप के भाई हैं।[7]

8 उस्ताज़ुल उ़लमा हज़रते मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद अकबर रज़वी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ की पैदाइश इल्मी घराने में हुई और 16 जुमादल ऊला 1442 हि. को विसाल फ़रमाया। आप हाफ़िज़े क़ुरआन, जय्यिद आ़लिमे दीन, तल्मीज़ मुहद्दिसे आज़म मौलाना सरदार अहमद, फ़ाज़िल जामिआ़ महमूदिया रज़विय्या व जामिआ़ रज़विय्या मज़हरुल इस्लाम, उस्ताज़ मदारिस अहले सुन्नत और बेहतरीन मुदर्रिस थे। मश्हूर वाइ़ज़ मौलाना अ़ताउल मुस्तफ़ा जमील मर्हूम आप के शागिर्द हैं।[8]

औलिया व मशाइख़े किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام

9 शहज़ादए ग़ौसुल वरा हज़रते सय्यिद अ़ब्दुर्रहीम क़ादिरी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ साहिब कश्फ़ो करामात, जामेअ़ फ़ुयूज़ात ज़ाहिरी व बातिनी और कसीरुल फ़ैज़ थे, जवानी में सूरत आए और ज़िन्दगी भर रुश्दो हिदायत में मसरूफ़ रहे। विसाल 7 जुमादल ऊला 1247 हि. को फ़रमाया, मज़ार सूरत, सूबा गुजरात, हिन्द में है।[9]

10 हज़रते शैख़ सय्यिद मुहम्मद बद्रुद्दीन ज़अ़बी जीलानी तुराबलुसी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ आ़लिम व फ़क़ीह, ख़तीब, मुदर्रिस और इमाम जामेअ़ मन्सूरी कबीर, ख़तीबुल अ़त्तार, सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे महल्ला सुवैक़ा, मुअस्सिर वाइ़ज़, साहिबे करामात वलियुल्लाह, क़ुत्बो ग़ौस, मुर्शिद व मुरब्बी, मज्मए तुरुक़ सलासिल, सिल्सिलए क़ादिरिय्या रिफ़ाइय्या बदविया दसूक़िया शाज़िलिया नक़्शबन्दिया और ख़लवतिया के शैख़े तरीक़त थे। आप का विसाल जुमादल ऊला 1279 हि. को क़ुस्तुनतुनिया में हुवा, तदफ़ीन मक़्बरा यहया आफ़न्दी बशकताश में की गई।[10]

11 हज़रते मौलाना मियां मुहम्मद शरीफ़ चिश्ती सियालवी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ की पैदाइश दरबारे आ़लिया हज़रत मियां हफ़ीज़ माही सरकी शरीफ़, वादी सौन सकीसर ज़िला ख़ोशाब में 1287 हि. को हुई और यहीं 25 जुमादल ऊला 1335 हि. को विसाल फ़रमाया, आप आ़लिमे बाअ़मल, मुरीद ख़्वाजा शम्सुल आ़रिफ़ीन, ख़लीफ़ा ख़्वाजा मुहम्मद दीन सियालवी, बेहतरीन मुदर्रिस, तलबा के ख़ैरख़्वाह और दरबारे आ़लिया सरकी शरीफ़ के पहले सज्जादा नशीन थे।[11]

12 वाइ़ज़ ख़ुश बयां हज़रते मौलाना पीर सय्यिद ज़हूर अहमद शाह बुख़ारी क़ादिरी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ जमाले ज़ाहिरी व बातिनी से मुत्तसिफ़, हाफ़िज़े क़ुरआन, आ़लिमे दीन, साहिबे दीवान शाइ़र, सिल्सिलए क़ादिरिय्या के शैख़े तरीक़त, 13 से ज़ाइद कुतुब के मुसन्निफ़, पुर असर मुबल्लिग़ और कसीरुल फ़ैज़ थे। आप की पैदाइश 1306 हि. को गुजरात में हुई और 22 जुमादल ऊला 1372 हि. को विसाल फ़रमाया।[12]

13 पीर सुल्तान ग़ुलाम सरवर क़ादिरी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ मश्हूर वलियुल्लाह सुल्तान बाहू के ख़ानदान से थे। बैअ़त शैख़ सय्यिद अ़ली हैदर गीलानी बग़दादी से की, नाना सुल्तान ग़ुलाम नबी क़ादिरी के जानशीन थे, वफ़ात 4 जुमादल ऊला 1408 हि. को हुई।[13]

---

(1) الاصابہ، 1/550-استیعاب، 1/360(2)الاصابہ، 1/694(3)آگرہ کے 283اولیائے کرام کی سیرت، ص467، 468(4)حدائق حنفیہ، ص510، حیاتِ محدثِ اَلوَرِی، ص149تا152(5)اتحاف الاکابر، ص428(6)المختصر الحاوی، ص115تا119(7) تذکرہ علمائے اہل سنت، ص210 تا 215 (8) تذکرہ علمائے اہل سنت، ص 93، 94 (9)تذکرۃ الانساب، ص143(10)اتحاف الاکابر، ص 460 تا 462 (11) سرزمین اولیاء، ص314 تا 317 (12)تذکرہ اکابر اہل سنت، ص198تا200(13) سہروردی مشائخ، ص30۔

अंगूर

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पसन्दीदा फलों में से एक फल **"अंगूर"** भी है।[1] अंगूर को अ़रबी में "عِنَبٌ" और इंग्लिश में Grapes कहते हैं, इस मुबारक फल का ज़िक्र क़ुरआने करीम में 11 मक़ामात पर आया है।[2] चुनान्चे एक मक़ाम पर इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِیْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًاؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ(۶۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और खजूर और अंगूर के फलों में से कोई फल वोह है कि उस से तुम नबीज़ और अच्छा रिज़्क़ बनाते हो बेशक उस में अ़क़्लमन्द लोगों के लिए निशानी है।[3] इस आयत में रिज़्क़े इलाही के कुछ दूसरे ख़ज़ानों का बयान किया गया जिन्हें उन की अस्ल ह़ालत में भी इस्तिमाल किया जाता है और इन्सानी मह़नत के बाद वाली ह़ालत में भी इस्तिमाल किया जाता है चुनान्चे फ़रमाया कि ऐ लोगो ! तुम जो खजूर और अंगूर के बाज़ फलों के रस से नबीज़ बना कर पीते हो और अच्छा रिज़्क़ यानी छोहारे, किशमिश, सिर्का और मुनक़्क़ा बनाते हो उस में भी तुम्हारे लिए ग़ौरो फ़िक्र का मक़ाम है कि येह भी अल्लाह तआ़ला की बन्दों पर अ़ज़ीम नेमत है और येही अल्लाह करीम की अ़ज़मतो शाने तख़्लीक़ की भी दलील है कि वोही तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ है और वोही हर काम की तदबीर फ़रमाने वाला है।[4]

रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अंगूर तनावुल फ़रमाने का मुबारक अन्दाज़

ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अंगूर के गुच्छे से अंगूर के दाने तोड़ तोड़ कर तनावुल फ़रमाते थे।[5]

अंगूर लाने वाला नसरानी ग़ुलाम दौलते ईमान पा गया

हिजरते मदीना से क़ब्ल त़ाइफ़ के सफ़र में अहले त़ाइफ़ की ईज़ा रसानी के बाद जब ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक बाग़ में दरख़्त के साए में तशरीफ़ फ़रमा हुए तो बाग़ के मालिकान उ़त्बा और शैबा ने अपने नसरानी ग़ुलाम अ़दास के हाथ आप की ख़िदमत में अंगूर पेश किए। आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने : बिस्मिल्लाह पढ़ कर अंगूर खाए तो अ़दास तअ़ज्जुब से ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारका को देखने लगा और बोला कि इस शहर के लोग तो येह कलिमा नहीं बोलते। नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम्हारा वत़न कहां है ? अ़दास ने कहा कि मैं "शहरे नैनवा" का रहने वाला हूं। रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह ह़ज़रते यूनुस बिन मता عَلَیْہِ السَّلَام का शहर है। अ़दास ने कहा कि आप उन के बारे में क्या जानते हैं ? रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह मेरे भाई हैं और वोह भी मेरी त़रह़ अल्लाह पाक के नबी थे जब अ़दास को मालूम हुवा कि आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते यूनुस عَلَیْہِ السَّلَام के बारे में जानते हैं तो उसे येह यक़ीन हो गया कि आप अल्लाह के सच्चे नबी हैं, चुनान्चे

उस ने महब्बत व अ़क़ीदत से आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सर मुबारक, हाथों और क़दमों का बोसा लिया और फ़ौरन कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया।[6]

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुनिया में जन्नत के अंगूर खिलाए ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا को (दुनिया में) जन्नत के अंगूर खिलाए।[7]

अंगूर और अनार से तस्बीह़ की आवाज़ आना ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बाक़िर رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से रिवायत है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बीमार हुए तो ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام एक थाल में अनार और अंगूर लाए। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तनावुल फ़रमाने के लिए उन में से कुछ उठाया तो उस में से तस्बीह़ (سُبْحٰنَ اللّٰه) की आवाज़ आई।[8]

अंगूर (Grapes) और त़िब्ब अंगूर एक निहायत ही मुफ़ीद फल है, सूखे हुए छोटे अंगूर किशमिश और बड़े अंगूर मुनक़्क़ा कहलाते हैं। अंगूर के चन्द फ़वाइद मुलाह़ज़ा कीजिए :

❁ अंगूर खाने से ख़ून में इज़ाफ़ा होता है। ❁ अंगूर जल्द हज़्म हो कर बदन का जुज़्व बन जाता है। ❁ रसदार अंगूर विटामिन से भरपूर होता है। ❁ अंगूर बदन को ग़िज़ाइयत पहुंचाने और क़ुव्वत बढ़ाने के लिए बेहतरीन चीज़ है। ❁ मुतवस्सित़ इन्सान को 125 से 250 ग्राम तक अंगूर खाना चाहिए। ❁ अंगूर जिस्म को मोतदिल और पुर कशिश बनाने में दवा का काम करता है। ❁ अंगूर जिस्म में मौजूद फ़ासिद माद्दों को ख़ारिज करता है। ❁ नज़ला ज़ुकाम, खांसी को दूर करने के साथ साथ दीगर बल़गमी अमराज़ में बेह़द मुफ़ीद है। ❁ मेदा और आंतों को जिला बख़्शता है। ❁ जिगर को त़ाक़त देता है। ❁ अंगूर आंतों के ज़ख़्म के लिए फ़ायदेमन्द है लेकिन 10 से 15 दाने इस्तिमाल किए जाएं। ❁ अंगूर खाने से ह़ल्क़ के अमराज़ ठीक हो जाते हैं। ❁ अंगूर अमराज़े गुर्दा व मसाना में भी मुफ़ीद है। ❁ इस का रस गुर्दे और मसाने की पथरी को ख़ारिज करने में मदद देता है। ❁ तुर्श अंगूरों का रस आंखों के दर्द के लिए मुफ़ीद है।[9]

❁ रोज़ाना रात को सात दाने बादाम और 21 दाने किशमिश यानी सूखे हुए अंगूर (छोटे बड़े कोई से भी हों) पानी में भिगो दीजिए और येह दोनों चीज़ें सुब्ह़ दूध के साथ और अच्छी त़रह चबा कर खा लीजिए, اِنْ شَآءَ اللّٰه दर्दे सर दूर होगा, क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा के लिए भी येह नुस्ख़ा मुफ़ीद है।[10] ❁ रोज़ाना किशमिश (ख़ुश्क छोटे अंगूर जिस को पंजाबी में "सोगी" कहते हैं) के 40 दाने (अगर मुवाफ़िक़ आते हों तो दुगने करने में भी ह़रज नहीं) और तीन अ़दद बादाम ले कर उस पर 11 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दम कर के खा लीजिए इस के ऊपर दो घंटे तक पानी न पिएं। اِنْ شَآءَ اللّٰهُ الْكَرِيْم खांसी में बहुत फ़ायदा होगा। बलग़म निकलेगा और मज़ीद नहीं बनेगा। (ज़रूरतन किशमिश की तादाद बढ़ा दीजिए) बहुत छोटे बच्चों के लिए ह़स्बे ज़रूरत मिक़्दार कुछ कम कर दीजिए। ता ह़ुसूले शिफ़ा इ़लाज जारी रखिए।[11] ❁ खजूर के साथ अंगूर या किशमिश या मुनक़्क़ा मिला कर खाना मुज़िर यानी नुक़्सान देह है।[12] ❁ छोटे बच्चों को क़ब्ज़ होने पर रात को सोने से पहले तक़रीबन 25 ग्राम अंगूर के दाने गरम दूध के साथ खिलाएं तो क़ब्ज़ दूर हो जाती है। ❁ उलटी व मतली होने पर अंगूर के दानों पर थोड़ा नमक और काली मिर्च छिड़क कर खाने से फ़ायदा होता है।[13]

नोट : हर दवाई अपने त़बीब (डॉक्टर या ह़कीम) के मश्वरे से इस्तिमाल कीजिए। इस मज़मून की त़िब्बी तफ़तीश ह़कीम रिज़वान फ़िरदौस अ़त्तारी ने की है।

---

(1) دیکھیے: طب النبوی لابی نعیم اصبہانی، ص718، حدیث:808 (2) دیکھیے: پ3، البقرۃ:266- پ7، الانعام:99-پ13، الرعد:4-پ14، النحل:10، 11، 67- پ15، بنی اسرآءیل:90، 91- پ15، الکھف:32-پ18، المؤمنون:19- پ23، یٰسٓ:33 تا35- پ30، النبا:31، 32-پ30، عبس:27، 28 (3) پ14، النحل:67 (4) صراط الجنان، 3/346 (5) دیکھیے: شعب الایمان، 5/106، حدیث: 5966 (6) دیکھیے: زرقانی علی المواہب، 2/54 تا56 (7) معجم اوسط للطبرانی، 4/315، حدیث:6098 (8) شفا، 1/307 (9) ماخوذ از پھلوں، پھولوں اور سبزیوں سے علاج، ص178 تا190 (10) بیٹا ہو تو ایسا، ص35 (11) گھریلو علاج، ص55، 56 (12) دیکھیے: فیضان رمضان (مرمم)، ص118 (13) ماخوذ از ہندوستان کی جڑی بوٹیاں، ص488، 489۔

नए लिखारी
(New Writers)

ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की दाइयाना सिफ़ात

साजिद अ़ली
(दौरए ह़दीस मर्कज़ी जामिअ़तुल मदीना)

अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ की हिदायत के लिए मुख़्तलिफ़ अदवार में मुख़्तलिफ़ अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام को मबऊ़स फ़रमाया, ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी उन्हीं में से एक हैं, आप के वालिद का नाम इ़मरान है, अल्लाह तआ़ला ने आप को बनी इसराईल की हिदायत के लिए मबऊ़स फ़रमाया, आप को अल्लाह पाक से बिला वासित़ा कलाम करने का शरफ़ ह़ासिल है इस लिए आप को कलीमुल्लाह कहा जाता है, आप अल्लाह पाक के जलीलुल क़द्र अम्बिया और उलुल अ़ज़्म रसूलों में से हैं, आप ने एक ऐसे मुआ़शरे में दावत का आग़ाज़ किया जहां ज़ुल्म, शिर्क, तकब्बुर और इस्तिबदाद जैसी बुराइयां अपनी इन्तिहा को पहुंच चुकी थीं, मगर आप ने अल्लाह पर कामिल भरोसा रखते हुए अपनी ज़िम्मेदारी पूरी की। क़ुरआने मजीद में आप عَلَیْہِ السَّلَام की नेकी की दावत और आप की क़ौम का ज़िक्र तफ़्सील से मौजूद है, जिस से आज भी मुबल्लिग़ीन रहनुमाई ह़ासिल कर सकते हैं। ज़ैल में क़ुरआने करीम की रौशनी में ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की नेकी की दावत के मुतअ़ल्लिक़ चन्द औसाफ़ ज़िक्र किए जाते हैं :

1 ह़िक्मत और दानाई : ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने नेकी की दावत में हर मौक़अ़ पर ह़िक्मत से काम लिया, अगर्चे फ़िरऔ़न दुनिया का बड़ा ज़ालिम और सरकश इन्सान था, लेकिन जब अल्लाह पाक ने ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते हारून عَلَیْہِمَا السَّلَام को फ़िरऔ़न के पास भेजा तो उन्हें नर्म अन्दाज़ में गुफ़्तगू करने की तालीम फ़रमाई। चुनान्चे इरशाद है : ﴿فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّیِّنًا لَّعَلَّهٗ یَتَذَكَّرُ اَوْ یَخْشٰى(۴۴)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : तो तुम उस से नर्म बात कहना इस उम्मीद पर कि शायद वोह नसीह़त क़बूल कर ले या डर जाए। (پ16، طٰہٰ:44)

येह आयत मुबल्लिग़ीन को अ़ज़ीम उसूल सिखाती है कि नेकी की दावत में नर्म लहजा इख़्तियार करें कि येह ज़ियादा मुअस्सिर होता है।

2 तवक्कुल अ़लल्लाह : जब फ़िरऔ़न अपने लश्कर के साथ तआ़क़ुब करते हुए समुन्दर तक पहुंच गया और बनी इसराईल घबरा गए तो उस वक़्त जो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने तवक्कुल का मुज़ाहरा किया उस को अल्लाह पाक ने इस त़रह़ ज़िक्र फ़रमाया : ﴿فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِیْنَ(۶۰) فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰۤى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ(۶۱) قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِیَ رَبِّیْ سَیَهْدِیْنِ(۶۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : तो दिन निकलने के वक़्त फ़िरऔ़नियों ने उन का तआ़क़ुब किया। फिर जब दोनों गिरोहों का आमना सामना हुवा तो

मूसा के साथियों ने कहा : बेशक हमें पा लिया गया। मूसा ने फ़रमाया: हरगिज़ नहीं, बेशक मेरे साथ मेरा रब है वोह अभी मुझे रास्ते दिखा देगा। (پ19، الشعراء:60تا62)

क़ारेईने किराम ! न आगे रास्ता है न पीछे जाने की कोई सूरत और उस वक़्त अल्लाह पाक के नबी हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام का येह फ़रमाना (कि ऐ मेरी क़ौम तुम न घबराओ क्यूंकि) मेरा रब मुझे अभी बचने का रास्ता दिखाएगा, और फिर वाक़ेई रब की त़रफ़ से रास्ता बना दिया गया आप عَلَیْهِ السَّلَام का येह तवक्कुल और उस तवक्कुल का नतीजा हमें बताता है कि दाई को हर हाल में अल्लाह पर कामिल भरोसा रखना चाहिए।

3 मुआविनीन का हुसूल : हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने अल्लाह पाक से अपने भाई हज़रते हारून عَلَیْهِ السَّلَام को मुआविन बनाने की दुआ की ताकि नेकी की दावत का काम बेहतर अन्दाज़ में हो सके, अल्लाह तआला ने क़ुरआने पाक में उस दुआ को इन अलफ़ाज़ से बयान फ़रमाया है : ﴿وَاجْعَلْ لِّیْ وَزِیْرًا مِّنْ اَهْلِیْ(۲۹) هٰرُوْنَ اَخِی(۳۰) اشْدُدْ بِهٖۤ اَزْرِیْ(۳۱) وَ اَشْرِكْهُ فِیْۤ اَمْرِیْ(۳۲) كَیْ نُسَبِّحَكَ كَثِیْرًا(۳۳) وَّ نَذْكُرَكَ كَثِیْرًا(۳۴) اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِیْرًا(۳۵)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मेरे लिए मेरे घर वालों में से एक वज़ीर कर दे। मेरे भाई हारून को। उस के ज़रीए मेरी कमर मज़बूत फ़रमा। और उसे मेरे काम में शरीक कर दे। ताकि हम बकसरत तेरी पाकी बयान करें। और बकसरत तेरा ज़िक्र करें। बेशक तू हमें देख रहा है। (پ16، طٰہٰ:29تا35)

क्यूंकि काम दीनी हो या दुनियवी जब इज्तिमाई तआवुन और मुशावरत से टीम वर्क की सूरत में हो तो वोह ज़ियादा सहीह़ और मुअस्सिर होता है।

क़ुरआने करीम में हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का मुबारक वाक़िआ मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर जो मज़्कूर है उस का बग़ौर मुतालआ करें तो वाज़ेह होता है कि आप की दाइयाना ज़िन्दगी इख़्लास, हिक्मत नर्म गुफ़्तारी, सब्र, इस्तिक़ामत, तवक्कुल, जुरअत, दुआ और ख़ैर ख़्वाही जैसी सिफ़ात से मुज़य्यन थी और येही औसाफ़ हर मुबल्लिग़ के लिए क़ाबिले तक़्लीद हैं अगर आज भी मुबल्लिग़ीन इन औसाफ़ को अपनी ज़िन्दगी में इख़्तियार करें तो नेकी की दावत का असर ज़ियादा मुअस्सिर हो सकता है और मुआशरे में इस्लाह़, अम्न और हिदायत का फ़रोग़ मुम्किन हो सकता है।

अल्लाह पाक हमें क़ुरआने करीम पढ़ कर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शिर्क की मज़म्मत अह़ादीस की रौशनी में

हाफ़िज़ मुबीन
(दर्जए सादिसा जामिअ़तुल मदीना)

शिर्क तौह़ीद की ज़िद है, जैसे अन्धेरा उजाले की और रात दिन की ज़िद है दोनों एक जगह जमा नहीं हो सकते इसी त़रह शिर्क और तौह़ीद एक दिल में जमा नहीं हो सकते। तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ السَّلَام शिर्क की मज़म्मत बयान करते आए, औलिया व सालिह़ीन ने भी इस की हौलनाकी को बयान फ़रमाया।

शिर्क की तारीफ़ : शिर्क के माना ग़ैरे ख़ुदा को वाजिबुल वुजूद या मुस्तह़िक़्क़ इबादत जानना यानी उलूहिय्यत में दूसरे को शरीक करना और येह कुफ़्र की सब से बदतर क़िस्म है। (बहारे शरीअ़त, 1/183)

शिर्क की मज़म्मत अह़ादीसे करीमा की रौशनी में

1 सब से बड़ा गुनाह शिर्क है : नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें सब से बड़े गुनाह के बारे में ख़बर न दूं ? वोह अल्लाह पाक के साथ शिर्क करना है। (مسند احمد، 7/306، حدیث:20407)

2 शिर्क हलाक करने वाला है : हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सात हलाकत की चीज़ों से बचो ! लोगों ने पूछा वोह क्या हैं ? फ़रमाया (उन में से एक) अल्लाह पाक के साथ शिर्क करना है। (مشکاۃ المصابیح، 1/31، حدیث:53)

3 शिर्क न करने पर बैअ़त ली : ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबा की एक जमाअ़त की मौजूदगी में फ़रमाया कि मुझ से इस बात पर बैअ़त करो कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराओगे। (مشکاۃ المصابیح، 1/24، حدیث:18)

इन्तिहाई अहम तम्बीह

किसी मुसलमान के बारे में कुफ़्रिया शिर्क के अलफ़ाज़ इस्तिमाल करने में इन्तिहा दर्जे की एह़तियात़ ज़रूरी है। हु़ज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : اِن مَا اَتَخَوَّفُ عَلَیْکُمْ رَجُلٌ قَرَأَ الْقُرْآنَ حَتّٰی اِذَا رُئِیَتْ بَهْجَتُهُ عَلَيْهِ وَكَانَ رِدْئًا لِلْاِسْلَامِ غَيَّرَهُ اِلٰى مَا شَاءَ اللهُ فَانْسَلَخَ مِنْهُ وَنَبَذَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهٖ وَسَعٰى عَلٰى جَارِهٖ بِالسَّيْفِ وَرَمَاهُ بِالشِّرْكِ قَالَ قُلْتُ يَا نَبِيَّ اللهِ اَيُّهُمَا اَوْلٰى بِالشِّرْكِ الْمَرْمِيُّ اَمِ الرَّامِي قَالَ بَلِ الرَّامِي यानी मुझे तुम पर एक ऐसे आदमी का अन्देशा है जो क़ुरआन पढ़ेगा ह़त्ताकि उस की रौशनी उस पर दिखाई देने लगेगी, और उस की चादर (ज़ाहिरी रूप) इस्लाम होगा। येह ह़ालत उस के पास रहेगी जब तक अल्लाह तआ़ला चाहेगा, फिर वोह उस से निकल जाएगा उसे पसे पुश्त डाल देगा, और अपने (मुसलमान) हमसाए पर तलवार उठाएगा और उस पर शिर्क का फ़तवा लगाएगा, रावी का बयान है कि मैं ने अ़र्ज़ किया : या नबियल्लाह ! दोनों में सिर्क का ह़क़दार कौन होगा ? जिस पर फ़तवा लगाया गया या फ़तवा लगाने वाला ?, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : फ़तवा लगाने वाला (मुशिरक होगा।) (صحیح ابن حبان، 1/148، حدیث:81)

अल्लाह तआ़ला हमें कुफ़्रो शिर्क से मह़फ़ूज़ फ़रमाए और हमें अपनी ज़िन्दगी क़ुरआनो सुन्नत के मुताबिक़ गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुतालअ़ए तज़्किरा अस्लाफ़ की ज़रूरत व अहमिय्यत

मुह़म्मद इ़रफ़ान
(दर्जए साबिआ़ जामिअ़तुल मदीना)

इस्लाम एक ऐसा दीन है जो अपने मानने वालों को दीगर तालीम ह़ासिल करने के साथ साथ उन्हें अपने अस्लाफ़े सालिह़ीन की ज़िन्दगियों से सबक़ ह़ासिल करने की भी तल्क़ीन करता है क़ुरआने मजीद में अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के वाक़िआ़त और सालिह़ीन के अह़वाल बार बार इस लिए बयान किए गए हैं ताकि अहले ईमान उन से हिदायत, रहनुमाई, सब्र, इस्तिक़ामत, इख़्लास, ख़ौफ़े ख़ुदा, इ़श्क़े मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, इस्लाम की सरबुलन्दी, इस्लाम की दावत, इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना और दूसरों तक पहुंचाना और अल्लाह तआ़ला पर कामिल तवक्कुल का दर्स ह़ासिल करें इसी त़रह़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان, ताबेई़न, तबए़ ताबेई़न, अइम्मए मुज्तहिदीन, मुह़द्दिसीन, मुफ़स्सिरीन और दीगर अकाबिरे उम्मत की सीरत व ख़िदमात का मुत़ालआ़ ईमान को ताज़गी बख़्शता, इ़ल्म में वुस्अ़त पैदा करता और दीने इस्लाम की सरबुलन्दी के लिए जिद्दो जहद का जज़्बा अ़त़ा करता है।

अस्लाफ़े उम्मत की ज़िन्दगियों का एक नुमायां पहलू येह है कि जिस शख़्सियत में जो अ़ज़ीम वस्फ़ मौजूद था उस का तज़्किरा सुनने और उस की सीरत का मुत़ालआ़ करने से इसी वस्फ़ को अपनाने की रग़बत दिल में पैदा होती है अगर हम उन की दावत व तब्लीग़ की जिद्दो जहद पढ़ें तो दीन की ख़िदमत का शौक़ बेदार होता है अगर उन की क़ुरबानियों का मुत़ालआ़ करें तो ईसार व वफ़ादारी का जज़्बा पैदा होता है अगर इ़ल्मे दीन के ह़ुसूल में उन की मशक़्क़तें देखें तो त़लबे इ़ल्म की अहमियत दिल में जागुज़ीं होती है और अगर उन के सब्र, तक़्वा, परहेज़गारी, ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तज़्किरा पढ़ें तो ईमान ताज़ा हो जाता है दिल को नई क़ुव्वत मिलती है और अ़मल का नया जज़्बा ह़ासिल होता है।

चुनान्चे अल्लाह पाक क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है : ﴿لَقَدْ كَانَ فِیْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक उन रसूलों की ख़बरों में अ़क़्लमन्दों के लिए इ़ब्रत है। (پ13، یوسف:111)

यानी बेशक अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की और उन की क़ौमों की ख़बरों में अ़क़्लमन्दों के लिए इ़ब्रत है जैसे ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के वाक़िए से बड़े बड़े नताइज निकलते हैं और मालूम होता है कि सब्र का नतीजा सलामत व करामत है और ईज़ा रसानी व बदख़्वाही का अन्जाम नदामत है और अल्लाह तआ़ला पर भरोसा रखने वाला कामयाब होता है। (सिरातुल जिनान, 5/70)

तज़्किरए अस्लाफ़ के मुत़ालए के बेशुमार फ़वाइद हैं इस से इन्सान के अन्दर इख़्लास, तक़्वा, सब्र, तवाज़ोअ़, इ़ल्म से मह़ब्बत, इ़बादत का ज़ौक़ और दीन की ख़िदमत का जज़्बा पैदा होता है येह मुत़ालआ़ नौजवान नस्ल को अ़मली नमूने फ़राहम करता है और उन्हें वक़्ती शोहरत के बजाए दाइमी कामयाबी का रास्ता दिखाता है येही वजह है कि मुहद्दिसीन, मुफ़स्सिरीन और फ़ुक़हाए किराम अपनी इ़ल्मी मजालिस में फ़िक़्ही मसाइल के इ़लावा अकाबिरे उम्मत के वाक़िआ़त भी सुनाते थे ताकि इ़ल्म के साथ अ़मल और मारिफ़त के साथ इख़्लास भी पैदा हो।

आज का दौर फ़िक्री इन्तिशार, अख़्लाक़ी ज़वाल और बेशुमार फ़ित्नों का दौर है ऐसे ह़ालात में अस्लाफ़े उम्मत की सवानेह़ का मुत़ालआ़ पहले से कहीं ज़ियादा ज़रूरी हो गया है, उन की ज़िन्दगियां हमें येह सबक़ देती हैं कि मुश्किलात के बावुजूद दीन पर साबित क़दम कैसे रहा जाता है, इ़ल्म किस इख़्लास और मेह़नत से ह़ासिल किया जाता है और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा को ज़िन्दगी का सब से बड़ा मक़्सद कैसे बनाया जाता है।

तज़्किरए अस्लाफ़ का मुत़ालआ़ सिर्फ़ माज़ी के वाक़िआ़त जानने का नाम नहीं बल्कि अपने ह़ाल की इस्लाह़ और मुस्तक़बिल की तामीर का मुअस्सिर ज़रीआ़ है जो क़ौम अपने अस्लाफ़ के नक़्शे क़दम को फ़रामोश कर देती है वोह अपनी इ़ल्मी, फ़िक्री और अख़्लाक़ी शनाख़्त भी खो बैठती है, लिहाज़ा हर मुसलमान ख़ुसूसन त़ालिबे इ़ल्म को चाहिए कि वोह क़ुरआने मजीद और अह़ादीसे नबविय्या के साथ साथ अस्लाफ़े उम्मत सीरत व तज़्किरा का भी बाक़ाइ़दा मुत़ालआ़ करे ताकि उस के इ़ल्म में बरकत अ़मल में इख़्लास, ईमान में मज़बूती पैदा हो और वोह दुनिया व आख़िरत दोनों की कामयाबी ह़ासिल कर सके।

अल्लाह पाक हमें अपने अस्लाफ़ के त़रीक़े पर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने और उन ह़ज़रात की सीरत व ख़िदमात का मुत़ालआ़ करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आप के तअस्सुरात (मुन्तख़ब)

"माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" के बारे में तअस्सुरात व तजावीज़ मौसूल हुईं, जिन में से मुन्तख़ब तअस्सुरात के इक़्तिबासात पेश किए जा रहे हैं।

मुतफ़र्रिक़ तअस्सुरात व तजावीज़ (इक़्तिबासात)

1 مَاشَآءَاللہ माहनामा फ़ैज़ाने मीदना अगस्त 2026 ई ज़ेरे मुतालआ है, اَلْحَمْدُلِلّٰہ दावते इस्लामी जिस शोबे में भी दीनी काम करने का अ़ज़्मे मुसम्मम करती है, कमाल करती है और अपना लोहा मनवाती है, इस शुमारे में निगराने शूरा का मज़्मून : **"इस्लाम इ़ज़्ज़ते नफ़्स का मुहाफ़िज़"** पढ़ा, बहुत पसन्द आया। अल्लाह पाक दावते इस्लामी के इस शोबे के इस्लामी भाइयों को उ़रूज और इ़ल्मी तरक़्क़ियां नसीब फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 माहनामा फ़ैज़ाने मदीना के ज़रीए हम बहुत कुछ सीख रहे हैं ख़ास तौर पर इस में **"मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब"** बहुत अच्छे और दिलचस्प शामिल किए जाते हैं।

3 माहनामा फ़ैज़ाने मदीना इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ है, इस में बेटियों की तरबियत के मुअस्सिर त़रीक़े बयान किए जा रहे हैं, गुज़ारिश है कि इस में बेटियों के ह़ुक़ूक़ पर भी मज़्मून शामिल किया जाए।

4 माहनामा फ़ैज़ाने मदीना काफ़ी मालूमाती मैग्ज़ीन है, इस में मुख़्तलिफ़ त़रह़ के मज़ामीन होते हैं तो यूं एक ही किताब में मुख़्तलिफ़ उ़नवानात के मुतअ़ल्लिक़ मालूमात मिल जाती है। मज़ीद येह कि गुज़ारिश है कि इस में इस्लाम के मुताबिक़ जो साइन्टिफ़िक थ्योरी है वोह बताई जाए और जो थ्योरी इस्लाम के मुत़ाबिक़ नहीं है वोह भी बताई जाए ताकि लोग साइन्स की ग़लत़ knowledge पर यक़ीन रखने से ख़ुद को बचा सकें।

5 मुझे माहनामा फ़ैज़ाने मदीना पढ़ने का बहुत शौक़ है, येह इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने का बेहतरीन ज़रीआ़ है।

6 مَاشَآءَاللہ माहनामा फ़ैज़ाने मदीना बहुत बहुत अच्छा मैग्ज़ीन है, इस से हर माह दिलचस्प मालूमात सीखने को मिलती है।

बच्चों के लिए प्यारी ह़दीस

बच्चो ! बदगुमानी से बचो

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِیَّاکُمْ وَالظَّنَّ، فَاِنَّ الظَّنَّ اَکْذَبُ الْحَدِیْثِ यानी बदगुमानी से बचो कि बदगुमानी बदतरीन झूट है।[1]

प्यारे बच्चो ! बदगुमानी का मत़लब है, किसी के बारे में बग़ैर दलील और सुबूत के बुरी बात सोच लेना, मसलन जो दोस्त स्कूल नहीं आया उस के बारे में सोचना कि वोह ज़रूर छुट्टी कर के घर में गेम खेल रहा होगा, इसी त़रह़ दो बच्चे आपस में आहिस्ता आवाज़ में बात कर रहे हैं, तीसरे का येह सोच लेना कि येह ज़रूर मेरी बुराई कर रहे होंगे। चीज़ की गुमशुदगी के वक़्त बग़ैर सुबूत के किसी के बारे में सोचना कि इस ने ली होगी, वग़ैरा बदगुमानी की सूरतें हैं।

बदगुमानी अल्लाह व रसूल की नाराज़ी का सबब है, बदगुमानी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, बदगुमानी से लड़ाई झगड़े होते हैं, आपसी तअ़ल्लुक़ात और रिश्ते टूटते और नफ़रतें फैलती हैं, बदगुमानी एक बीमारी है जो दिल को गन्दा कर देती है, बदगुमानी करने वाले बच्चे से कोई दोस्ती करना भी पसन्द नहीं करता, बदगुमानी के सबब इन्सान दूसरे गुनाहों मसलन ग़ीबत वग़ैरा में पड़ जाता है, अल्लाह पाक ने मुसलमानों को बदगुमानी से बचने का हुक्म दिया है चुनान्चे क़ुरआने करीम में है :

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِیْرًا مِّنَ الظَّنِّ٘ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : ऐ ईमान वालो ! बहुत ज़ियादा गुमान करने से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है।[2]

बदगुमानी करने वाले को बाज़ औक़ात दुनिया में भी नुक़्सान व नदामत उठानी पड़ती है, चुनान्चे एक मरतबा का वाक़िआ़ है कि एक अमीर ताजिर ने मस्जिद में अपने क़रीब एक ग़रीब शख़्स को देखा जो अल्लाह से एक ख़ास क़िस्म का खाना खाने की दुआ़ मांग रहा था। ताजिर ने अपने दिल में बदगुमानी करते हुए सोचा कि येह फ़क़ीर सिर्फ़ दिखावे के लिए दुआ़ मांग रहा है, ताकि मैं उसे खाना खिला दूं। लेकिन कुछ देर बाद एक आदमी उस फ़क़ीर को ढूंडता हुवा आया और उस के सामने ढका हुवा खाना रख दिया फ़क़ीर ने खाना खाया और बक़िय्या खाना वापस कर दिया, ताजिर के पूछने पर उस शख़्स ने बताया कि मुझे ख़्वाब में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई आप عَلَیْہِ السَّلَام ने मुझे फ़रमाया : उस मस्जिद में अल्लाह का एक वली (प्यारा बन्दा) है, उसे खाना खिलाओ मैं तेरे लिए जन्नत की ज़मानत देता हूं। ताजिर ने कहा खाने पर जितना ख़र्च हुवा वोह मुझ से ले लो और नेकी में ह़िस्सेदार बना लो उस शख़्स ने मुसल्सल इन्कार किया, ताजिर नादिम व शर्मिन्दा हो कर मस्जिद से चला गया। गोया उस ने अपना क़ीमती सामान खो दिया हो।[3]

ताजिर जिस शख़्स को भिकारी समझ रहा था, वोह अल्लाह का प्यारा बन्दा निकला। पता चला कि बदगुमानी से हम बड़ी बरकतों से मह़रूम रह जाते हैं, किसी की ज़ाहिरी ह़ालत को देख कर उस के बारे में बुरा ख़याल नहीं करना चाहिए।

अच्छे बच्चो ! किसी के बारे में कन्फ़र्म मालूमात के बग़ैर कोई राय क़ाइम न करें, दूसरों के बारे में हमेशा अच्छा गुमान रखें, सच्चा ऐ़ब भी बग़ैर दुरुस्त वजह किसी को न बताएं किसी के बारे में कोई कन्फ़्यूज़न हो तो उस से राबित़ा कर के मुकम्मल और दुरुस्त मालूमात ह़ासिल करें और हर त़रह़ की बदगुमानी से बचें तो शुरूअ़ में लिखी ह़दीसे पाक पर अ़मल हो जाएगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ

अल्लाह पाक हमें बदगुमानी जैसी आफ़त से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1) بخاری، 3/446، حدیث:5143 (2) پ26، الحجرات:12 (3) دیکھئے: روض الریاحین، ص277۔

खोई हुई बीनाई लौट आई

प्यारे बच्चो ! हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मोजिज़ात बारहा लोगों की मुश्किलात में सहारा बना करते और लोगों की परेशानियां व मुश्किलें दूर किया करते थे, आज ऐसे मोजिज़े के बारे में सुनेंगे जिस के ज़रीए एक सहाबिए रसूल की खोई हुई बीनाई लौट आई। चुनान्चे,

हज़रते फ़ुदैक बिन अम्र सलामानी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की दोनों आंखें सफ़ेद हो चुकी थीं और वोह उन से कुछ भी नहीं देख सकते थे, वोह रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हुए और अपनी परेशानियों का हाल सुनाया। तबीबों के तबीब, अल्लाह पाक के हबीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की दोनों आंखों में अपना मुबारक लुआबे दहन डाला, तो उन्हें बीनाई वापस मिल गई, हत्ताकि आप 80 साल की उम्र में भी सूई में धागा डाल लिय करते थे।[1]

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक लुआबे दहन की बरकत से एक नाबीना सहाबी की खोई हुई बीनाई का लौट आना बल्कि अस्सी साल की उम्र में भी बीनाई की तवानाई इस क़दर बरक़रार रहना कि सूई में धागा डाल लिया जाए यक़ीनन येह आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अज़ीम मोजिज़ा है। इस वाक़िए से हमें कई प्यारी बातें सीखने को मिलती हैं।

- बीमारी या परेशानी आने पर मायूस होने के बजाए अल्लाह पाक से उम्मीद रखनी चाहिए, क्यूंकि वोह जब चाहे मुश्किल को आसान फ़रमा देता है।
- अपनी तक्लीफ़ को छुपाने के बजाए मुनासिब मौक़े पर अहले ख़ैर से मदद और दुआ की दरख़्वास्त करनी चाहिए।
- किसी को तक्लीफ़ में देखें तो नज़र अन्दाज़ (ignore) करने के बजाए आगे बढ़ कर हमदर्दी व मदद करनी चाहिए।
- जिस्मानी सेहत अल्लाह पाक की बहुत बड़ी नेमत है, इस पर हमेशा शुक्र अदा करना चाहिए।
- उम्र ज़ियादा हो जाने के बावुजूद अगर अल्लाह पाक चाहे तो इन्सान को हैरत अंगेज़ ताक़त और सेहत अता फ़रमा देता है, इस लिए हर हाल में उसी पर भरोसा रखना चाहिए।
- अल्लाह पाक की क़ुदरत के सामने कोई बीमारी या कमज़ोरी मुश्किल नहीं, वोह जब चाहे लम्हों में हालात बदल देता है।
- हमें हर नेमत, ख़ुसूसन आंखों जैसी नेमत की हिफ़ाज़त करनी चाहिए और उन्हें नेक कामों में इस्तिमाल करना चाहिए।
- सीरते रसूले करीम लोगों के साथ शफ़्क़त, महब्बत और ख़ैरख़्वाही करने का दर्स देती है।

---

(1) مصنف ابن ابی شیبہ، 12/ 81، حدیث:24029۔

नोट : लुआब अरबी का लफ़्ज़ है जिस का माना थूक है और दहन मुंह को कहते हैं, अल्लाह के नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अदब और ताज़ीम की वजह से उन के मुबारक थूक को लुआबे दहन कहते और लिखते हैं।

बच्चो ! इन से बचो

1 "अकेले बाहर निकलना" : प्यारे बच्चो ! घर से बाहर खुली फ़ज़ा में जाना और हवा खाना हमारी सेहत के लिए बहुत फ़ायदेमन्द है लेकिन येह ख़याल रहे कि जब भी बाहर जाना हो तो अपने घर वालों के साथ ही जाएं क्यूंकि घर से बाहर सब लोग अच्छे नहीं होते, कुछ लोग बुरे भी होते हैं जो घर वालों की त़रह हम से प्यार नहीं करते बल्कि वोह बहुत ज़ालिम होते हैं और अकेले घूमने वाले बच्चों को इग़्वा कर लेते (यानी उठा कर ले जाते) हैं फिर बच्चों को आज़ाद करने के बदले घर वालों से रक़म मांगते हैं और रक़म न मिले तो बच्चों को मार भी देते हैं। इसी त़रह जब हम गली या रोड पर अकेले निकलते हैं तो बाज़ औक़ात किसी कार या मोटर साइकल से टकरा जाने का ख़त़रा होता है जिस से हमें चोटें भी लग सकती हैं।

2 "सीढ़ी और छत पर बे एह़तियात़ी करना" : सीढ़ियों पर दरमियानी रफ़्तार से चढ़ें और आराम से उतरें, सीढ़ी के साथ वाले सहारे (रेलिंग) या दीवार को पकड़ पकड़ कर आना जाना करें, हरगिज़ हरगिज़ सीढ़ियों पर न भागें न छलांग मारें। ज़रा सी ग़लती और थोड़ी सी जल्दी से हमें बहुत ज़ियादा नुक़्सान हो सकता है गिरने से चोट लग सकती है बल्कि जान भी जा सकती है। यूंही जिस छत पर चारों त़रफ़ दीवार न हो वहां भी गिरने का ख़त़रा होता है लिहाज़ा ऐसी छत पर भी न चढ़ें।

3 "भारी चीज़ें उठाना" : अपनी त़ाक़त से बढ़ कर भारी चीज़ें उठाना हम बच्चों का काम नहीं है। हम हर चीज़ सम्भाल नहीं सकते, अगर हम ने कोई भारी चीज़ उठाई और वोह हमारे ऊपर गिर गई तो हमें बहुत नुक़्सान हो सकता है, लिहाज़ा भारी चीज़ों को न उठाएं, याद रखें ! हर चीज़ खेलने के लिए नहीं होती।

हुरूफ़ मिलाइये !

प्यारे बच्चो ! मस्जिद अल्लाह तआला का मुक़द्दस घर है। जब भी मस्जिद में जाने की सआदत ह़ासिल हो येह बात ज़ेहन में ज़रूर होनी चाहिए कि येह बहुत पाकीज़ा और अ़ज़मत वाली जगह है। यहां आ कर शोर करना, ज़ोर ज़ोर से बातें करना, दौड़ना, खेलना या दूसरे नमाज़ियों को तंग करना अच्छी बात नहीं बल्कि गुनाह है। मस्जिद में दोस्तों के साथ हंसी मज़ाक़ या शोर करने से किसी की नमाज़ में ख़लल पड़ सकता है। कोई क़ुरआने करीम पढ़ रहा होगा, कोई ज़िक्र कर रहा होगा और कोई अल्लाह तआला के सामने नमाज़ में खड़ा होगा ऐसे में आप का मामूली सा शोर किसी के लिए परेशानी का सबब बन सकता है। इस लिए मस्जिद में ख़ामोशी और अदब के साथ वक़्त गुज़ारना चाहिए। प्यारे बच्चो ! याद रखो ! अच्छा बच्चा वोह है जो मस्जिद के आदाब का ख़याल रखे, नमाज़ियों को तक्लीफ़ न दे और अल्लाह तआला के घर का एह़तिराम करे।

अल्लाह पाक हमें मस्जिद का अदब करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

و	خ	ر	ت	ے	ئ	ی	ہ	پ
ز	ل	چ	ط	ا	م	ن	ق	م
ا	ل	ک	چ	ح	ص	ذ	ر	ق
س	ش	ت	ب	د	ح	ن	آ	د
د	ن	ت	ق	و	ی	ل	ن	س
ف	ط	ب	ن	ا	ہ	ر	ب	ژ
ب	د	ا	ض	ح	غ	ڈ	ص	ث
ھ	ح	غ	ؤ	آ	ۃ	ر	ک	ذ

आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर पांच अलफ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "احد" तलाश कर के बताया गया है। तलाश किए जाने वाले 5 अलफ़ाज़ येह हैं : 1 ادب 2 خلل 3 وقت 4 ذکر 5 مقدس

क्लास रूम

पता चला है कि !

ख़बर ?

فَتَبَيَّنُوْٓا

सुनो, ठहरो, तहक़ीक़ करो और ज़िम्मेदार मुसलमान बनो ।

दुआइया असेम्बली के बाद सभी बच्चे अपनी अपनी क्लासों में आ चुके थे सातवीं क्लास के बच्चे भी अपनी अपनी जगहों पर सम्भल रहे थे कि दरवाज़ा खुला और सर बिलाल अन्दर दाख़िल हुए।

ह़म्ज़ा : सर ! सर ! एक बहुत बड़ी ख़ुशख़बरी है !

बिलाल साहिब ने पलट कर देखा : इतनी बड़ी ख़ुशख़बरी है तो पहले बैठ जाओ, कहीं सुनाते सुनाते ख़ुद ही गिर न जाओ । सारी क्लास के लबों पर मुस्कुराहट फैल गई।

ह़म्ज़ा : नहीं सर, वाक़ेई ! बहुत बड़ी ख़ुशख़बरी है।

सर बिलाल ने जान लिया कि ह़म्ज़ा ख़बर सुनाए बग़ैर नहीं टलने वाले तो कहा जी सुनाइए।

सर ! अब से हफ़्ता इतवार वीकली दो छुट्टियां हुवा करेंगी।

अ़ली समेत एक दो बच्चों के मुंह से निकला : क्या.......? जब कि कुछ बच्चों के चेहरों पर शरारती मुस्कुराहट थी जैसे उन्हें इस ख़ुशख़बरी का पहले ही पता हो, लेकिन बिलाल साहिब ने संजीदगी से ह़म्ज़ा को देखा और कहा : आप से येह किस ने कहा है ?

ह़म्ज़ा : सर बड़ी क्लासों के बच्चे आपस में बात कर रहे थे तो मैं ने सुन लिया।

अच्छा तो उन्हें कहां से पता चला ? सर बिलाल अब पूरी त़रह ह़म्ज़ा की त़रफ़ ही मुतवज्जेह थे।

ह़म्ज़ा : येह तो पता नहीं सर।

सर बिलाल : उन्हें प्रिंसिपल साहिब ने ख़ुद बताया होगा ?

ह़म्ज़ा : जी शायद।

शायद ??? सर ने शायद कुछ ऐसे अन्दाज़ कहा कि पूरी क्लास की बे इख़्तियार हंसी छूट गई । अब बिलाल साहिब ने मार्कर से व्हाइट बोर्ड पर लिख दिया : ख़बर ? उस के आगे एक बड़ा सा सुवालिया निशान बना दिया।

सर बिलाल : अच्छा बच्चो ! अगर सालाना इम्तिह़ानात के दिनों में कोई आप से कहे कि कल का पर्चा मन्सूख़ हो गया है, नहीं होगा तो क्या आप फ़ौरन मान लेंगे ?

मुआ़विया : नहीं सर, पहले स्कूल के वॉटसएप ग्रूप में देखेंगे।

उसैद रज़ा : अपने असातिज़ा या वालिदैन से पूछेंगे।

मैं तो फ़ौरन मान लूंगा, पिछली क़त़ारों से आवाज़ आई तो सर के लबों पर भी मुस्कुराहट फैल गई। लेकिन गुफ़्तगू अहम थी तो सर ने उस आवाज़ से सर्फ़े नज़र करते हुए बात आगे बढ़ाई :

येही मस्अला है : जो ख़बर हमें पसन्द आए, हम उसे जल्दी सच मान लेते हैं अच्छा हम्ज़ा बेटा अभी आप ने येह ख़ुशख़बरी किसी और को नहीं देनी।

हम्ज़ा : लेकिन सर अगर वाक़ेई छुट्टी हुई तो ?

तो आप के साथ साथ हम भी घर बैठ कर इन्जॉय करेंगे, सर ने मुस्कुराते हुए कहा।

अब सर ने एक बच्चे को प्रिंसिपल साहिब की तरफ़ जब कि हम्ज़ा को स्कूल के किसी भी उस्ताद मोहतरम से पूछने के लिए भेजा।

कुछ ही देर में हम्ज़ा वापस आया : रियाज़ी के उस्ताद साहिब कह रहे हैं मुझे ऐसी कोई ख़बर नहीं मिली। पीछे पीछे दूसरा बच्चा भी आ पहुंचा और बताने लगा : प्रिंसिपल साहिब कह रहे हैं ऐसा कोई फ़ैसला नहीं हुवा, येह किसी ने झूटी ख़बर उड़ाई है, येह सुन कर तो हम्ज़ा का चेहरा ही बुझ गया।

अब बिलाल साहिब ने व्हाइट बोर्ड पर ख़बर के नीचे लिख दिया: فَتَبَيَّنُوْٓا ! तो बच्चो आज हम्ज़ा बेटे की एक नादानी से हमें सीखने को मिला किसी भी ख़बर को आगे बढ़ाने से पहले हमें उस की तस्दीक़ कर लेनी चाहिए और तस्दीक़ यानी Confirmation कैसे लेनी है वोह भी आज आप ने सीख लिया होगा यानी जैसी ख़बर है तो उस के मुतअ़ल्लिक़ क़ाबिले एतिमाद ज़राएअ़ (Authentic Resources) से पता करना। जैसे अभी हम ने किया कि स्कूल से मुतअ़ल्लिक़ ख़बर थी तो प्रिंसिपल साहिब से तस्दीक़ करवाई।

और आप को पता होना चाहिए चौदह सौ साल पहले अल्लाह पाक ने क़ुरआने पाक में हमें इस हवाले से भी राहनुमाई फ़रमा दी थी, इरशाद है : ऐ ईमान वालो ! अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तहक़ीक़ कर लो कि कहीं किसी क़ौम को अन्जाने में तक्लीफ़ न दे बैठो फ़िर अपने किए पर शरमिन्दा होना पड़े। (پ26، الحجرات:6)

येह जो लफ़्ज़ मैं ने लिखा था : "فَتَبَيَّنُوْٓا" आयत का हिस्सा है जिस का मतलब है तहक़ीक़ कर लो, यानी किसी भी ख़बर पर फ़ौरी रद्दे अ़मल देने से पहले पता तो कर लो कि ख़बर सच्ची है या झूटी। क्यूंकि आयत में येह भी बताया गया कि कहीं ऐसा न हो कि बग़ैर तहक़ीक़ के किसी को नुक़्सान पहुंचा बैठो और बाद में बछताना पड़े।

सोबान अ़ली : सर, लेकिन किसी ख़बर को आगे भेजने से किसी को क्या नुक़्सान हो सकता है ?

सर : बहुत कुछ ! बेटा, अगर आप किसी से सुन कर येह कह दें कि उसैद रज़ा इम्तिहानात में नक़्ल करते पकड़े गए हैं हालांकि ऐसा कुछ भी न हो तो अगर्चे आप बाद में मुआ़फ़ी मांगते रहें लेकिन उन की ईमानदारी को तो बहुत सौं की नज़रों में मश्कूक बना दिया ना। यूंही हम्ज़ा की बात पर बहुत से बच्चे यक़ीन कर लेते तो क्या होता ?

तो आधी से ज़ियादा क्लास हफ़्ते वाले दिन घर बैठी होती।

और पीर वाले दिन प्रिंसिपल साहिब के दफ़्तर में हाथ खड़े किए होती, सर ने जल्दी से हम्ज़ा की बात मुकम्मल की तो क्लास हंसने लगी। अब सर ने बोर्ड पर लिखा : सुनो, ठहरो, तहक़ीक़ करो और ज़िम्मेदार मुसलमान बनो।

बच्चो याद रखें, मोबाइल में Forward का ऑप्शन बहुत छोटा होता है, एक Click से दरजनों को ख़बर भेज सकते हैं लेकिन कभी कभी उस के नताइज बहुत बड़े होते हैं।

येह तो चलें स्कूल से मुतअ़ल्लिक़ ख़बर थी बाज़ औक़ात तो हम किसी भी सुनी सुनाई बात को आयत या ह़दीस समझ और कह कर आगे फैलाते रहते हैं जिस का नुक़्सान हमें आख़िरत में भी उठाना पड़ सकता है तो आइन्दा जब भी कोई बात पता चले तो हम ने येही उसूल अपनाना है साथ ही सर ने व्हाइट बोर्ड की तरफ़ भी इशारा किया तो सारी क्लास बोली : सुनो, ठहरो, तहक़ीक़ करो और ज़िम्मेदार मुसलमान बनो।

बच्चों को बिगड़ने से बचाएं

बच्चे वालिदैन की आंखों का तारा होते हैं। उन की अच्छी तरबियत घर को पुरसुकून बनाने के लिए ज़रूरी और बेहतरीन मुआशरे की बुन्याद है। अगर बच्चों की तरबियत पर मुनासिब तवज्जोह न दी जाए तो उन में ऐसी आदात पैदा हो सकती हैं जो उन के मुस्तक़बिल को नुक़्सान पहुंचाती हैं, लिहाज़ा वालिदैन के लिए ज़रूरी है कि वोह बच्चों के रवय्यों पर नज़र रखें और उन में किसी भी बुरी आदत को देखते ही इस्लाह की कोशिश करें। इस मज़्मून में चन्द ऐसी बातों की तरफ़ निशानदही की जा रही है कि अगर उन में से कोई बच्चों में ज़ाहिर हो तो फ़ौरन उस की इस्लाह की कोशिश करें।

झूट बोलना

झूट बोलना बच्चों के बिगाड़ की एक नुमायां अलामत है। बाज़ बच्चे सज़ा के ख़ौफ़ से या अपनी ग़लती छुपाने के लिए झूट बोलते हैं। अगर उस की बर वक़्त इस्लाह न की जाए तो येह मुस्तक़िल आदत बन सकती है। वालिदैन को चाहिए कि बच्चों को सच बोलने की तरग़ीब दें और सच्चाई के फ़वाइद से आगाह करें। मक्तबतुल मदीना की किताब **"तरबियते औलाद"** में है : ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ बात करने को "झूट" कहते हैं।[1] हमारे मुआशरे में झूट इतना आम हो चुका है कि गोया अब उसे مَعَاذَ اللّٰه बुराई ही तसव्वुर नहीं किया जाता। ऐसे हालात में बच्चों का इस से बचना बहुत दुश्वार है। अपने बच्चों के ज़ेहन में बचपन ही से झूट के ख़िलाफ़ नफ़रत बिठा दें ताकि वोह बड़े होने के बाद भी सच बोलने की आदते पाकीज़ा इख़्तियार किए रहें।

नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब बन्दा झूट बोलता है तो फ़िरिश्ता उस की बदबू से एक मील दूर हो जाता है।[2]

बदतमीज़ी और नाफ़रमानी

जब बच्चे बड़ों की इ़ज़्ज़त करना छोड़ दें, वालिदैन और असातिज़ा की बात न मानें या उन से सख़्त लहजे में गुफ़्तगू करें तो येह भी बिगाड़ की निशानी है। अदबो एहतिराम अच्छी तरबियत की निशानी है, इस लिए बच्चों में शुरूअ़ से ही बड़ों का एहतिराम पैदा करना ज़रूरी है। दीने इस्लाम बड़ों का अदबो एहतिराम करने की बहुत ज़ियादा ताकीद करता है। एक ह़दीसे पाक में है : नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : जो हमारे बड़ों की इ़ज़्ज़त और छोटों पर शफ़क़त नहीं करता वोह हम में से नहीं।[3]

एक और ह़दीस में है : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه कहते हैं : नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अनस ! बड़ों का अदबो एहतिराम और ताज़ीमो तौक़ीर करो और छोटों पर शफ़क़त करो, तुम जन्नत में मेरी रफ़ाक़त पा लोगे।[4]

नमाज़ और दीनी तालीमात से दूरी

नमाज़, तिलावते क़ुरआन और दीगर नेक आमाल से ग़फ़लत भी एक तशवीशनाक अ़लामत है। जब बच्चे दीन से दूर होने लगते हैं तो उन में अख़्लाक़ी कमज़ोरियां पैदा होने लगती हैं। वालिदैन को चाहिए कि वोह ख़ुद भी दीनी माहौल इख़्तियार करें और बच्चों को भी उस की तरग़ीब दें।

बुरी सोहबत इख़्तियार करना

दोस्त इन्सान की शख़्सिय्यत पर गहरा असर डालते हैं। अगर बच्चे ऐसे दोस्तों की सोहबत इख़्तियार कर लें जो झूट, गाली गलोच, लड़ाई झगड़े या दीगर बुरी आ़दात में मुब्तला हों तो उन के बिगड़ने का ख़तरा बढ़ जाता है। इस लिए बच्चों की दोस्तियों पर मुनासिब नज़र रखना ज़रूरी है। दोस्ती के हवाले से दीनी तालीमात मद्दे नज़र रखते हुए हमें बच्चों की सोहबत का जाइज़ा लेना चाहिए। ह़दीसे पाक में है : आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है, लिहाज़ा तुम में से हर एक को चाहिए कि वोह देखे किस से दोस्ती कर रहा है।[5]

अहादीस के मुताबिक़ अच्छा दोस्त वोह है जिस को देखने से ख़ुदा याद आए उस की गुफ़्तगू से अ़मल में इज़ाफ़ा हो और उस का अ़मल आख़िरत की याद दिलाए।[6] अच्छा दोस्त वोह है कि जब तू ख़ुदा को याद करे वोह तेरी मदद करे और जब तू भूले तो याद दिला दे।[7]

तालीम में अ़दमे दिलचस्पी

पढ़ाई से ला परवाही, मद्रसा, जामिअ़ा या स्कूल से ग़ैर हाज़िरी या मुसल्सल कमज़ोर कारकर्दगी भी बच्चों के बिगाड़ की अ़लामत हो सकती है। ऐसे हालात में वालिदैन को चाहिए कि ला परवाही, कमज़ोर कारकर्दगी या ग़ैर हाज़िरी की वुजूहात पर ग़ौर कर के उन का हल निकालने की कोशिश करें।

गाली गलोच और ग़ैर मुहज़्ज़ब ज़बान

अच्छी गुफ़्तगू एक मुहज़्ज़ब मुसलमान की पहचान है। अगर बच्चे गालियां देने लगें या बदज़बान हो जाएं तो येह उन की तरबियत में कमी की निशानदही करता है। वालिदैन और घर के दीगर अफ़राद को ख़ुद भी मुहज़्ज़ब ज़बान इस्तिमाल करनी चाहिए ताकि बच्चे अच्छा नमूना हासिल करें। अगर बच्चा गाली गलोच करे तो अच्छे अन्दाज़ में उस के नुक़्सानात से आगाह करते हुए इस्लाह की कोशिश करें। सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ (यानी गुनाह) है।[8] मुसलमान को गाली देना ख़ुद को हलाकत के रास्ते पर ले जाने जैसा है।[9] किसी मुसलमान जाहिल को भी बे इज़्ने शरअ़ गाली देना हरामे क़त़ई है।[10]

चोरी और अमानत में ख़ियानत

अगर बच्चा दूसरों की चीज़ें बग़ैर इजाज़त लेने लगे या अमानत में ख़ियानत करे तो येह बहुत ख़तरनाक अ़लामत है। ऐसी सूरत में फ़ौरी इस्लाह और अख़्लाक़ी तरबियत की ज़रूरत होती है ताकि येह आ़दत मुस्तक़बिल में बड़े मसाइल का सबब न बने।

मोहतरम वालिदैन ! बच्चों के बिगाड़ की अ़लामात को नज़र अन्दाज़ नहीं करना चाहिए। आप की ज़िम्मेदारी बनती है कि महब्बत, शफ़क़त, दुआ़ और अच्छी तरबियत के ज़रीए़ बच्चों की इस्लाह करें।

अल्लाह पाक हमें अपने बच्चों की अच्छी तरबियत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

---

(1)حدیقہ ندیہ،2/200(2)ترمذی،3/392،حدیث:1979(3)ترمذی،3/369، حدیث:1926(4)شعب الایمان، 7/458، حدیث: 10981 (5)ابوداؤد، 4/341، حدیث:4833(6)جامع صغیر، ص247، حدیث: 4063 (7) جامع صغیر، ص244،حدیث:3999(8) مسلم، ص54،حدیث:221(9)الترغیب والترہیب،3/311،حدیث:311(10)فتاویٰ رضویہ،21/127۔

बेटियों की तरबियत

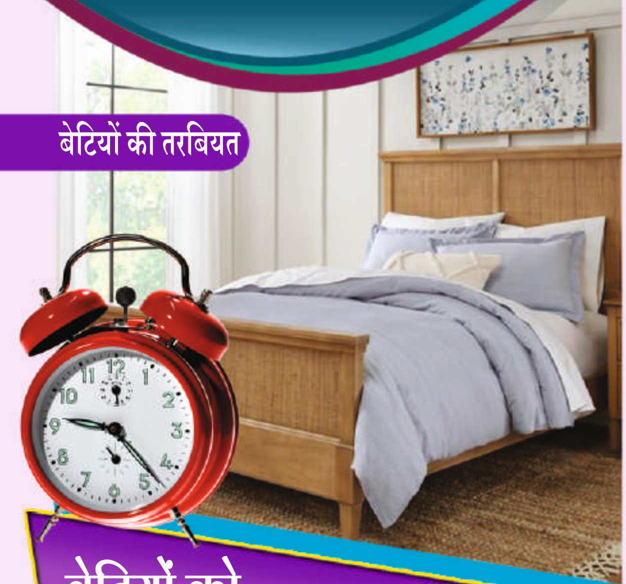

बेटियों को वक़्त पर सोने जागने की तरबियत दें

नींद महज़ एक जिस्मानी ज़रूरत नहीं बल्कि अल्लाह पाक की रहमत है जिस के ज़रीए इन्सान अपनी खोई हुई क़ुव्वत बहाल करता, ज़ेहनी व जिस्मानी ताज़गी हासिल करता और नए दिन की ज़िम्मेदारियां बेहतर अन्दाज़ में अदा करने के क़ाबिल बनता है, अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَ مِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (۷۳)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उस ने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन बनाए कि रात में आराम करो और दिन में उस का फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि तुम (उस का) शुक्र अदा करो।[1]

जिस तरह ज़िन्दगी की बक़ा के लिए खाना, पीना और सांस लेना ज़रूरी है, इसी तरह जिस्मो दिमाग़ को आराम देने के लिए मुनासिब नींद भी नागुज़ीर है। उमूमन येह हर इन्सान के लिए यक्सां अहमियत रखती है लेकिन बढ़ती उम्र की बच्चियों के लिए उस की अहमियत और भी ज़ियादा बढ़ जाती है क्यूंकि येही उम्र जिस्मानी नश्वोनुमा, ज़ेहनी पुख़्तगी, तालीमी क़ाबिलिय्यत और अच्छे अख़्लाक़ व आदात की तश्कील का ज़माना होती है। वक़्त पर सोने और वक़्त पर जागने की आदत न सिर्फ़ उन की सेहत को बेहतर बनाती है बल्कि उन की पढ़ाई, याददाश्त, ज़ेहनी यक्सूई, चुस्ती और रोज़ मर्रा मामूलात पर भी ख़ुशगवार असरात मुरत्तब करती है।

अहादीसे मुबारका से मालूम होता है कि सुब्ह का वक़्त ख़ुसूसी बरकतों वाला वक़्त है। रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ फ़रमाई : "ऐ अल्लाह ! मेरी उम्मत के सुब्ह के कामों में बरकत अता फ़रमा।"[2] इसी वजह से आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अहम कामों का आग़ाज़ सुब्ह के वक़्त फ़रमाया करते थे। उलमा ने भी इस हदीस की रौशनी में लिखा है कि इल्म हासिल करने, इबादत, तिजारत और दीगर अहम कामों के लिए सुब्ह का इब्तिदाई वक़्त निहायत बाबरकत है। मुफ़स्सिरे क़ुरआन मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने भी लिखा है कि सहाबा का तजरिबा भी उस के मुतअ़ल्लिक़ हो चुका है कि वोह हज़रात इस सुन्नत पर अमल की बरकत से बहुत फ़ायदे उठा चुके हैं। फ़क़ीर ने भी तजरिबा किया कि सुब्ह सवेरे कामों में बहुत बरकत है।[3]

इसी लिए वक़्त पर सोने का एक बड़ा फ़ायदा येह भी है कि सुब्ह जल्द बेदार होना आसान हो जाता है। नमाज़े फ़ज्र की पाबन्दी, तिलावते क़ुरआन, तालीम पर तवज्जोह और दिन भर के कामों में चुस्ती इसी मामूल की बदौलत नसीब होती है।

आज कल बहुत सी बच्चियां मोबाइल फ़ोन, सोशल मीडिया और दीगर ग़ैर ज़रूरी मसरूफ़ियात की वजह से रात देर तक जागने की आदी होती जा रही हैं। येह आदत सिर्फ़ नींद ही को मुतअस्सिर नहीं करती बल्कि सेहत, तालीम, अख़्लाक़ और रोज़ मर्रा नज़्मो ज़ब्त पर भी मन्फ़ी असर डालती है। सुब्ह देर से उठने की वजह से नमाज़, तालीम और घरेलू मामूलात भी मुतअस्सिर होने लगते हैं।

हालांकि तिब्बी एतिबार से भी वक़्त पर सोना बेशुमार फ़वाइद का हामिल है। बचपन और नौजवानी में गहरी नींद जिस्मानी नश्वो

नुमा में मदद देती है, हड्डियों को मज़बूत बनाती है और जिस्म के दिफ़ाई निज़ाम को बेहतर करती है। अच्छी नींद से दिमाग़ी सलाहिय्यतें, याददाश्त और सीखने की क़ुव्वत में इज़ाफ़ा होता है, जब कि मिज़ाज में ख़ुशगवारी और जज़्बाती तवाज़ुन भी बरक़रार रहता है चिड़चिड़े पन से नजात मिलती है इसी त़रह मुनासिब नींद हारमूंज़ के तवाज़ुन, जिल्द की ताज़गी, जिस्मानी तवानाई और रोज़ मर्रा सरगर्मियों में बेहतरी का सबब बनती है। बचपन से नींद का मुनज़्ज़म मामूल मुस्तक़बिल में भी अच्छी सेहत बरक़रार रखने में मुआविन साबित होता है।

वालिदैन, ख़ुसूसन वालिदा की ज़िम्मेदारी है कि वोह घर में ऐसा माह़ौल बनाएं कि रात को जल्द सोने का मामूल हो। अगर बड़े ख़ुद रात देर तक जागते रहें तो बच्चियों में जल्द सोने की आ़दत पैदा करना मुश्किल हो जाता है। इसी त़रह बच्चियों को सोने से पहले बावुज़ू होने, मस्नून दुआएं पढ़ने, आयतुल कुर्सी और दीगर मस्नून अज़्कार पढ़ने की आ़दत भी सिखाई जाए बल्कि क्या ही अच्छा हो जो अमीरे अहले सुन्नत के रिसाले "**सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े**" से सोते वक़्त की जाने वाली अच्छी अच्छी निय्यतें भी करवाई जाएं ताकि उन्हें जिस्मानी आराम के साथ रूह़ानी सुकून भी नसीब हो और उन का सोना ह़ुसूले सवाब का बाइ़स भी हो।

मुख़्तसर येह है कि वक़्त पर सोना और वक़्त पर जागना कोई मामूली आ़दत नहीं बल्कि एक सेहतमन्द, बा अख़्लाक़, मुनज़्ज़म और कामयाब ज़िन्दगी की बुन्याद है। येही आ़दत बच्चियों की दीनी, तालीमी, घरेलू और आइन्दा इज़्दिवाजी ज़िन्दगी पर भी ख़ुशगवार असरात मुरत्तब करती है। इस लिए वालिदैन को चाहिए कि वोह बचपन ही से अपनी बेटियों में इस बेहतरीन आ़दत को परवान चढ़ाएं ताकि वोह दुनिया व आख़िरत की भलाई ह़ासिल कर सकें।

---

(1) پ20، القصص:73(2)ابوداؤد، 3/51، حدیث:2606(3)مرآۃ المناجیح، 5/491۔

त़हारत से मुतअ़ल्लिक़ रोज़ मर्रा पेश आने वाले अहम शरई़ मसाइल का जामेअ़ मज्मूआ़ जो कि हर मुसलमान के लिए मुफ़ीद है

वुज़ू का बयान
- वुज़ू के फ़राइज़, सुन्नतें और मुस्तह़ब्बात
- वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ें

ग़ुस्ल का बयान
- ग़ुस्ल के फ़राइज़, सुन्नतें और आदाब
- ग़ुस्ल किन चीज़ों से फ़र्ज़ होता है ?

पानी का बयान
- किस पानी से वुज़ू जाइज़ है और किस से नहीं ?
- पानी की तीन अक़्साम

कुंएं का बयान
- कुंएं तीन अक़्साम के हैं
- जानदारों के कुंएं में गिरने के ह़वाले से तफ़्सील
- आदमी और जानवरों के जूठे का बयान

तयम्मुम का बयान
- पानी पर क़ुदरत न होने की सूरतें
- बग़ैर त़हारत और बग़ैर तयम्मुम नमाज़ पढ़ने की सूरतें

मोज़ों पर मस्ह़ का बयान
- मोज़ों पर मस्ह़ करने का त़रीक़ा, मोज़ों पर मस्ह़ की शराइत़
- तीन त़रह के मोज़ों पर मस्ह़ हो सकता है

ह़ैज़ व निफ़ास का बयान
- ह़ैज़, निफ़ास और इस्तिह़ाज़ा की तारीफ़ मअ़ अह़काम

नजासतों का बयान
- नजासत की अक़्साम व अह़काम

इस्तिन्जा का बयान
- इस्तिन्जे की पांच अक़्साम
- इस्तिबरा के त़रीक़े और अह़काम

आज ही मक्तबतुल मदीना से ख़रीद फ़रमा कर ख़ुद भी पढ़ें और दूसरों को भी तरग़ीब दिलाएं।

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

1 मय्यित के पास बुलन्द आवाज़ से कलिमा व अज़्कार पढ़ने का हुक्म ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि हमारे हां जब मय्यित को ग़ुस्ल दे कर कफ़न वग़ैरा पहना दिया जाता है, तो मय्यित के पास औ़रतें ख़ुशइल्ह़ानी के साथ बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ती हैं और येह एक तस्बीह़ सौ मरतबा पढ़ती हैं "ख़ानए काबा बैतुल्लाह मदीना पाक रसूलुल्लाह इस रूह़ नूं बख़्शे आप अल्लाह... येह कहने के बाद वहां पर मौजूद औ़रतें मिल कर कहती हैं... पढ़ो, "لا الٰہ الا اللہ और फिर कलिमए त़य्यिबा का विर्द किया जाता है, क्या येह जाइज़ है ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِکِ الۡوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الۡحَقِّ وَ الصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में मय्यित के पास कलिमए त़य्यिबा और दीगर अज़्कार पढ़ना जाइज़ है, इस में कोई ह़रज नहीं। सुवाल में मज़्कूर अल्फ़ाज़ "ख़ानए काबा बैतुल्लाह मदीनए पाक रसूलुल्लाह इस रूह़ नूं बख़्शे आप अल्लाह" दुरुस्त हैं, इन में कोई बात ख़िलाफ़े शरीअ़त नहीं है। अलबत्ता इस में इस बात का लिह़ाज़ रखा जाए कि औ़रतों की आवाज़ ना मह़रमों तक न जाए, वरना यानी अगर औ़रतों की आवाज़ इतनी बुलन्द हो के ग़ैर मह़रमों को इन की आवाज़ पहुंचेगी, तो उन का इतनी बलुन्द आवाज़ से बढ़ना, नाजाइज़ो गुनाह होगा।

मय्यित के पास तस्बीह़ व तहलील करने के मुतअ़ल्लिक़ रद्दुल मुह़तार में है : "ولا باس بالتسبیح و التھلیل وان رفع صوتہ" यानी : (मय्यित के पास) तस्बीह़ व तहलील करने में कोई ह़रज नहीं, अगर्चे बुलन्द आवाज़ से हो। (ردالمحتار، 3/100)

औ़रत की आवाज़ भी औ़रत है जैसा कि सय्यिदी आला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن इसी त़रह़ के एक सुवाल के जवाब में फ़रमाते हैं : "नाजाइज़ है कि औ़रत की आवाज़ भी औ़रत है और औ़रत की ख़ुश इल्ह़ानी कि अजनबी सुने मह़ल्ले फ़ित्ना है।" (फ़तावा रज़विय्या, 22/240)

وَاللہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 दो माह के ह़म्ल के बाद आने वाले ख़ून का शरई हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि हिन्दा को दो महीने का ह़म्ल साक़ित होने के बाद सिर्फ़ दस दिन तक ख़ून आया, इस के बाद दोबारा नहीं आया, अब कुछ औ़रतें कह रही हैं कि इस के लिए चिल्ला पूरा करना ज़रूरी है कि चालीस दिन तक नमाज़, रोज़ा और तिलावत नहीं कर सकती। शरई़ रहनुमाई फ़रमाएं कि उन औ़रतों की बात दुरुस्त है या नहीं ? नीज़ इस औ़रत के लिए क्या हुक्म है ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِكِ الۡوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَایَةَ الۡحَقِّ وَ الصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में उन औ़रतों की बात दुरुस्त नहीं, मह़ज़ ग़लत़ फ़हमी व इ़ल्मे दीन से दूरी की दलील है। और हिन्दा के लिए हुक्मे शरई़ येह है कि ग़ुस्ल कर के नमाज़ें अदा करना शुरूअ़ कर दे, उसे चालीस दिन तक ताख़ीर करने की हरगिज़ इजाज़त नहीं, अगर ताख़ीर की और फ़र्ज़ नमाज़ें नहीं पढ़ेगी तो गुनहगार होगी।

मस्अले की तफ़्सील कुछ यूं है कि ह़म्ल के आज़ा बनने की मुद्दत चार माह (तक़रीबन 120 दिन) है, जो ह़म्ल आज़ा (मसलन हाथ, पांव या उंगली वग़ैरा) बनने से पहले साक़ित हो जाए, तो शरई़ अह़काम के लिहाज़ से ये ह़म्ल कलअ़दम (न होने के बराबर) शुमार होगा और औ़रत निफ़ास वाली नहीं होगी, अब इस के बाद आने वाला ख़ून अगर ह़ैज़ की शराइत़ पर है, तो ह़ैज़ का वरना इस्तिह़ाज़ा का होगा। पूछी गई सूरत में चूंकि दो माह का ह़म्ल साक़ित हुवा है, जिस के आज़ा नहीं बने थे और इस के बाद आने वाला ख़ून ह़ैज़ की शराइत़ के मुत़ाबिक़ भी है कि पाकी की मुद्दत (कम अज़ कम पन्दरह दिन) के बाद है और तीन दिन से ज़ाइद है, लिहाज़ा येह ख़ून ह़ैज़ का कहलाएगा। और येह ख़ून अपनी आख़िरी मुद्दत (ज़ियादा से ज़ियादा दस दिन) पर ख़त्म हुवा, तो इस के बन्द होने के बाद हिन्दा ग़ुस्ल कर के नमाज़, रोज़ा और तिलावत वग़ैरा का एहतिमाम करेगी।

(البحر الرائق، 4/230-درمختار مع ردالمحتار، 1/549-
فتاویٰ رضویہ، 23/383-بہار شریعت، 2/239)

وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوۡلُهٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 जुमुआ की पहली अज़ान के बाद ख़रीदो फ़रोख़्त का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले में कि मर्द ह़ज़रात के लिए तो जुमुआ के वक़्त ख़रीदो फ़रोख़्त करना नाजाइज़ है लेकिन ख़वातीन पर तो जुमुआ नहीं होता उन के लिए उस के वक़्त में ख़रीदो फ़रोख़्त करने का क्या हुक्म है ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِكِ الۡوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَایَةَ الۡحَقِّ وَ الصَّوَابِ

जिन अफ़राद पर नमाज़े जुमुआ फ़र्ज़ है, उन के लिए जुमुआ की पहली अज़ान होते ही नमाज़े जुमुआ के लिए सई़ करना वाजिब है। उस वक़्त ख़रीदो फ़रोख़्त और हर वोह काम जो सई़ के मुनाफ़ी हो, नाजाइज़ और मकरूहे तह़रीमी है। अलबत्ता औ़रतें और वोह अफ़राद जिन पर जुमुआ फ़र्ज़ नहीं, उन के लिए उस वक़्त आपस में ख़रीदो फ़रोख़्त करना मकरूह नहीं है। ताहम उन का ऐसे अशख़ास से ख़रीदो फ़रोख़्त करना नाजाइज़ो गुनाह है कि जिन पर जुमुआ फ़र्ज़ है और क़रीबी मस्जिद में अज़ाने जुमुआ हो चुकी है और उन लोगों ने अभी तक नमाज़े जुमुआ अदा भी नहीं की। इस की वजह येह है कि जिस शख़्स पर जुमुआ फ़र्ज़ है, उस पर सई़ वाजिब हो चुकी है अब अगर वोह नमाज़े जुमुआ की सई़ करने की बजाए ख़रीदो फ़रोख़्त करे तो मुमानअ़त का मुर्तकिब होता है, और ख़रीदार इस फ़ेल में उस की इआ़नत करता है जिस की वजह से येह भी गुनाहगार होगा।

(مختصر القدوری، 1/40-در مختار معہ رد المحتار،
7/309، 310-حاشیۃ الطحطاوی علی مراقی الفلاح، 1/517)

وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوۡلُهٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जुमादल ऊला के चन्द अहम वाक़िआत

तारीख़ / माह / सिन	नाम / वाक़िआ	मज़ीद मालूमात के लिए पढ़िए
2 जुमादल ऊला 1286 हि.	यौमे विसाल : आला हज़रत के दादाजान हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती रज़ा अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल ऊला 1438 हि.
7 जुमादल ऊला 735 हि.	यौमे उ़र्स : हज़रते शाह रुक्ने आलम अबुल फ़त्ह रुक्नुद्दीन सोहरवर्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल ऊला 1438 हि.
8 जुमादल ऊला 1334 हि.	यौमे विसाल : हज़रते अ़ल्लामा वसी अहमद मुहद्दिस सूरती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल ऊला 1439 हि.
17 जुमादल ऊला 73 हि.	यौमे शहादत : सहाबिए रसूल हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल ऊला 1438 हि.
17 जुमादल ऊला 1362 हि.	यौमे विसाल : शहज़ादए आला हज़रत, हुज्जतुल इस्लाम मुफ़्ती मुहम्मद हामिद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल ऊला 1440 हि.
19 जुमादल ऊला 911 हि.	यौमे विसाल : इमाम जलालुद्दीन अ़ब्दुर्रहमान सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल ऊला 1448 हि.
27 जुमादल ऊला 73 हि.	यौमे विसाल : हज़रते अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल ऊला 1448 हि.
जुमादल ऊला 8 हि.	जंगे मौता : इस में सिर्फ़ तीन हज़ार मुसलमानों ने दो लाख कुफ़्फ़ार से मुक़ाबला किया, इस जंग में हज़रते जाफ़र तय्यार, हज़रते ज़ैद बिन हारिसा और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा समेत 12 सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم ने जामे शहादत नोश फ़रमाया और मुसलमानों को अ़ज़ीम फ़त्ह मिली।	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल ऊला 1442 हि.
जुमादल ऊला 855 हि.	विसाले मुबारका : हज़रते शाह यक़ीक़ बुख़ारी नक़्शबन्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल ऊला 1439 हि.

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

“माहनामा फ़ैज़ाने मदीना” के शुमारे दावते इस्लामी की वेबसाइट से डाउनलोड कर के पढ़िये और दूसरों को शेयर भी कीजिये।

الله

منقول ہے: جب علم زیادہ ہو تو گفتگو کم ہو جاتی ہے اور جب گفتگو زیادہ ہو تو علم کم ہو جاتا ہے۔ (امام غزالی کی سنہری باتیں ص ۵)

صلوا علی الحبیب
صلی اللہ علی محمد

मन्क़ूल है : जब इ़ल्म ज़ियादा हो तो गुफ़्तगू कम हो जाती है
और जब गुफ़्तगू ज़ियादा हो तो इ़ल्म कम हो जाता है।

(इमाम ग़ज़ाली की सुनहरी बातें, स. 5)

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए़ माली तआ़वुन कीजिये !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही़ (Reformatory),
फ़लाही़ (Welfare) रूहा़नी ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है